सळवटां

[कहाणियां]

रामेश्वरदयाल श्रीमाली

प्रकाशक :
राजस्थानी भाषा-साहित्य संगम [अकादमी]
बीकानेर

लेखक : रामेश्वरदयाल श्रीमाली

प्रकाशक : राजस्थानी भाषा-साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर

पैली वार · वि० 2037, ई० 1980

मोल : सादी जिल्द : 12 30
पक्की जिल्द : 16 55

मुद्रक : अजन्ता प्रिन्टर्स, घी वालों का रास्ता, जयपुर

सल्वटां [कहाणियां] [SALVATAN]

दो आखर

आपरी खुद री कहाणियां रै बाबत दो आखर लिखणा बड़ा अपरोगा लागै। आपरी कहाणियां रै बाबत लेखक नै खुद नैं की कैंवण री जरूरत रैवै, तो पछै वा कहाणी ई कठै रैवै? रचना में इतरी ताकत होवै ई है कै वा खुद आपरी ओळखाण दे सकै।

म्हनै कहाणी लिखणी है, ओ विचार'र म्हूं कहाणियां को लिखू नी। जीवण रै अनुभव री कोई उत्तेजना म्हारै सू कहाणी लिखवाय लेवै। इण सारू म्हारी इण कहाणियां में जितरा ई पात्र आया है, ईमानदारी सू कैवू तो वै सै म्हारा निजू साथी-संगी, सगा-वाल्हा कै आड़ोसी-पाड़ोसी है। जिण चितरामां नै म्हैं माडिया है, उणां नैं म्हैं किणी न किणी ढब सू भोगिया ई है। जिण पात्रां रै साथै म्हारी सवेदना रई है, उणां री जिनगाणी मे म्हारी पाती ई रई है। ओ ईज कारण है कै इण कहाणियां रा पात्र जिसा है, विसा ईज है। म्हे म्हारै मतै सू नी तो इण पात्रां रै किणी जीवण-दीठ रो चस्मो लगायो है नै नी'ज किणी उधारी चेतना रो मूडो! ऐ पात्र इतरा कोरा है कै इणा रै मूडा माथै किणी भांत रै आदरसां री क्रीम-पौडर तक को लगायो नी। इण कहाणियां मे म्हारी कोई कलाकारी है तो फकत इतरी कै जिण जीवण-दीठ नै नै जिण जीवण-मोल नै म्हारै गांव-समाज रा मिनख जीवै-समझै है, म्हैं पूरी ईमानदारी सू उण जीवण-मोलां नै नै उण जीवण-दीठ नै बिना आपनी विचारधारा रो बघार लगायां कोरी री कोरी पाठकां रै सामैं राखी है।

म्हू गांव रो रैवणियो हूं, इण सारू इण कहाणियां मांय सू घणखरी कहाणियां गांव रै मिनखां री'ज है। खरो पूछो तो मिनख री अबखायां नै गांव नै सै'र मे वाटी को जा सकै नी। औ अवखायां जीवण नै जीवण री ललक राखणियै सैं' मिनखा री अबखायां है। इण कहाणियां में ऊकळता सवाल फकत सवाल ईज कोनी, आज री सामाजिक अर आरथिक विखमतावां माथै करारी टोप है। इणानैं म्हारै कहाणीकार री कमजोरी समझ सको कै उणनै हकीकतां सू टळ नै किणी झूठा रै

नीचै ऊभो रंवणो दाय को आयो नी। तो ई ऐ कहाणिया खुल्लै-खातै इतरो तो बतावै ई है कै जीवण री इण नाजोगी हालाता सू लड़ण सारू फकत माथो मार्‌या ई काम को चाल सकै नी, हाथ उठावणा ई जरूरी है।

ऐ कहाणियां अन्तस री झाळ सू तो नीसरी ई है पण मरुवाणी रै घणा जोगा सम्पादक नै राजस्थानी रै आन्दोलन रै हरावळ में जूझणिया श्री रावत सारस्वत री लगो-लग थाधी रै बिना कदास ऐ को लिखीजती नी। हेताळू रावतजी नै अन्तस रै इतरै ऊंडै हेज सारू किण मूडै रंग देवण री हीमत कर सकू?

—रामेश्वर दयाल श्रीमाली

ब्रह्मपुरी
गाव-पाली, जिलो—पाली (राज०)

इण संग्रै बाबत

राजस्थान साहित्य अकादमी रै माय राजस्थानी भासा अर साहित्य रै कामां नै आगै बढावण सारू 'राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)' नाव सूं एक न्यारी अर खुदमुख्यतार सस्था की थापना हुयेड़ी है। आ संस्था राजस्थानी खातर जिकी चेस्टावां करै वा में नया लिखारां री पोथ्या छापणो एक मोटो काम है। इणी योजना मे आ पोथी छापीजी है।

प्रेसा रो प्रबंध अर कागज-खरीद आद री दिक्कता रै कारण, जिण मात्रा मे पोथ्या छपणी अर प्रचारित होणी चाईजै ही वा पूरी नी हो पाई। पण मात्रा में कम होता थका भी गुणा मे वा कसर पूरी हो जावै तो सतोस हुवै। सगम रा इण साल रा प्रकासणां सू वो सतोस सायद मिल सकसी।

राजस्थानी मे न्यारी-न्यारी विधावा मे गद्य साहित्य री घणी कमी है। कहाणी, उपन्यास, नाटक, निबध अर दूजी अनेक नांवा री रचनावा, आगळियां पर गिणा जित्ती ई है। इण वास्तै इसी रचनावा नै घणी मात्रा मे अर तेजी सू छापण री जरूरत है। 'सगम' इण जरूरत नै महसूसता एक साथ कहाणियां रा तीन सग्रै इण साल छाप्या है।

उम्मीद है राजस्थानी रा हितू आ नै घणै मान बधासी।

—रावत सारस्वत
सभापति,
राजस्थानी भाषा-साहित्य संगम [अकादमी]
बीकानेर

दीवाळी
2037 वि०

क्रम

सलवटां

माह रो महीनो। मूठी दिन। मावटा रै माय दिन रो बेरो ई नईं पडै। हिम बरसै। हाडका धूजै। हवा वाजै, जाणं सहसबाहु रै हाथां सू तीखोड़ा तीर छूटता हुवै।

गूदडी में गोडा घाल्या पयारी माथै पड़्यो खीमदास सरदी मे दात बजावतो गावतो हो —

गैरी-गैरी छाया भाइड़ा पाछा कीकर जावो
म्हानै साचो-साचो भेद बतावो, जीओ
घणी घणी खंमा रे कुंवर अजमाल रा !

मू डा सू बोल निकळै, पण माय विचारा रा लैरका लैरां लेवै कै आ कैड़ी ठाड पडै है ? बूढा डाया नै तो मार्‌या ई जक लेसी। नै मिनख पछै किसा बच सकै ? भुठी नै तो भो काळ, नै अठी नै आ ठड ! मिनखा री कांई बिसात, देवतावां रा पण डील धूजै है।

ठड में धूजनै धन रै सूरज ई मूजी रै धन ज्यूं हवळै-हवळै पीपळ रै पाकोडै पाना जैडी पीळी किरणा काढी। सुगणकी ऊठ'र आख्या मसळी अर चूल्है माथै तवेलो भर'र चाय चाढी। गुळ मे चा'री पत्ती गेर'र उणनै खासी ताळ उकाळी अर काळी किट्ट चाय रो तासळो भर'र खीमदास रै हाथा मे थमाय दीनो। झीर-झीर हुयोडै मैलै चीथड़ं जैडै अगोछै माथै लबालब भर्‌योडो तासळो राख र खीमदास एक तिरसी निजर सू उण मे देख्यो। मन मे मूडो धोवण रो विचार आयो, पण ऐड़ी ठाड माय गूदडी छोड़णी दो'री घणी ही, जको सन्ता विना मूडो धोया ई चा'री चुसकी लेणी सरू कीनी।

चा'री चुसकी रै सागै विचारां रो गाडो पण खळकण लागो। इण जुग में सगळी ठौडा चा'री चुसकी रै सागै विचारा री रैला खळकीजती देखां, जणै इसो लागै, जाणं चा' पीवणी सरू किया सू पैला सिस्टी मे कठैई अूंडो विचार करण री रीत कदेई नईं रैयी हुवैला।

लबालब भर्‌योडै तासळै सूं पैलो घूटियो लेवता मौर घणो गुटको हुवण री धर्ज सूं सन्ता रो मूंडो परो बळ्यो। मूगा भाव री चा' रो घूटियो थूकणो घणो दो'रो

हो पण गिटणो उण सूं भी वत्तो दो'रो हो, जको सन्तो अणमणा हुय'र झट्ट सूं पच्च करतो घूटियो थूक्यो, अर आपरी कालाई माथै खीजतै थकै कह्यो 'सुगणकी, करम-फटोडी, इसी बळती-बळनी चा' क्यू लाई ? म्हारै तो मूंडा में फरफोला ई परा हुया, नैं मूगा भाव री चा' ई खेह करणी पडी ।'

सुगणकी जै'र रो घू टियो भर'र रैगी । मन में जाण्योके मोटा मिनख आपरा दोस दूजा माथै मढण में कितरा हुसियार हुवै ।

कैवण नै तो खीमदास सुगणकी नैं कैय दियो, पण मन में घणोई पिछतावो कीनो । सुगणकी कैंडी सैणी-समझणी बेटी है । घर रो सगळोई काम सभाळै । इसी समझणी डीकर्‌या हुवणी घणी दो'री है । घर में हीरो पाक्यो है—हीरो ! अर नईं-तर आडोस पाडोस मे इणरी मामीनी सरीखी छोरियां चार हाथ सूरज ऊंचो आवै जितरै गोदडा फाडै । म्हारी सुगणकी बेटी तो केई भाग री है । बापडी काम-काज में मा नै कितरो सा'रो देवै ! फेर माथो धुण'र खोट मावळ की—मा री काईं देवै, सगळो काम लाण आपचीतो करै । मा तो काम-काज में मीन-मेख काढ'र खोडीलाई भलाई करो । घणो जोर, तो गाळ्‌या काढ-काढ'र पड्‌या-पड्‌या हुकम छोडो ! हुकम छोडणै री वात पाछी उणरै दाय को आई नी । सोच्यो—'बा लाण काईं हुकम छोड सकै ? उणरा हाथ-पग तो बेमारी भाग नाख्या । बेमारी पण इण रैं हाथ धोय नै लारै लागी है । जद देखो, जद बेमार ! सरीर आगै तो लैणियो ईज कोनी । नईं हुयो, तो अबकै किणी हुसियार वैद कनै जाय नै इलाज करवावणो पडसी । अै डाक्टर तो मुआ सगळा ई बोफा है, बोफा ! गरीबा नैं तो देखता ई नाक मळ घालै । म्हासूं आभडता ई जाणै वारै रोग लाग जासी, यू जाण नै आप तो नाड देखै कोनी, बेमार नैं ई पूछै—काईं बेमारी है ? हू कैऊ, जे बेमार मिनख नैं ई बैमारी रो ठा' पडतो हुवै तो थारै कनैं काईं धूड खावण नै आवै ? पण म्हारी वात सुणै कुण ? झट पूछै, 'काईं बेमारी है, काईं नाम है ?' नाम लिख्यो, दवा लिखी, नम्बर घाल्या, नै झट कैवै, 'बजार जाय नै इन्जेक्सन लाओ । खूब फळ खिलाओ, खूब पाणी पिलाओ ।' हू कैऊं, जे सूई लेवण जोग पीसा परा मिळै, नै फळ तो घणा हुवै है, वांई वेळा धाप'र रोटी खावण नैं परी मिळै, तो मिनख थारै कनै क्यू मारण नैं आवै ? पण इणा नैं कुण समझावै ? ऊजळधोळिया रैवै, नै गिटर-पिटर बोलै । म्हनैं तो इणा कनै जावता ई डो' आवै । हा ! जे कोई असल नाडी देखणियो हुसियार वैद मिल जावै, तो ग्याल परा हुवां । दो आना री जडी दी, नै रोग री जड कटी । पछै आखी ऊमर दवा करावण रो काम ई नईं पडै ।' आ सोच खीमदास रैं मन में थोडीसीक तसल्ली हुई पण पाणी री लीक ज्यू इण तसल्ली रो टिकाव घणी जेझ को रह्यो नी । एक लाम्बी सैरको नाख आम-भागेसर रा मे बुदबुदियो—'पण अबै ऐडा वैद कठै मिल सकै ?'

लुगावडी रैं मादगी रैं विचारा री लड़ सू खीमदास अणूतो ईज दुखी हुयो। मन रो मन में खीज, दात-पीस, माथै हाथ देय'र होळैं सीक कह्यो—'इणरी बेमारी तो म्हनैं संमूळो ई खाय नाख्यो।'

मूंडैं री बळत अबैं की ओछी पडी ही। इण चा' रो तासळो पाछो अंगोछा माथै राखियो, अर चुमकी भरण लागो। नवी चुसकी सागै नवो जजाळ ई चेतियो। मिनख रो मन खरो कामगर हुवै है। उण नैं पळ एक गी जक कठै ? खीमदास सोचण लाग्यो – सुगणी पण किसी टावर है ? अंस आसोज उतरियो जद पूरा सतरैं बरसा री हुयगी। इण रैं सामीनी-सरीखी छोरिया परणीज ई गी। परणीज काई' गई, घरे लाड़ हुयी जैंडा गीगा ई जाया परा। जणैं क्यू नी ? सुगणी नैं कपड़ा धोवता ई दोय बरस हुयग्या है। कपडा धोवण रो ध्यान आवताई उणरैं खिवैं सावळैं मूडा माथै सळवटा रो मेळो मडग्यो। उण दिन पडितजी कैंवता हा'क खीमदास, थूं सतगाई आना नरका रो भातो बाधै है, भाई ! घरे मोट्यार होयोडी छोरी ऊभी सूखैं, अर थनैं की सोच-विचार ई कोनी। थनैं ठा' कोनी के सास्त्रा मे काई' लिख्योडो है ? सास्त्रा मे ठौड-ठौड लिख्योडो है कै 'इस्त्री धरम मे आवण रैं पछै जको मा-बाप उणरो ब्याव नई करैं आगला भव मे बैं उण रैं रज रैं कीडा मैं खावैं।' इण विचार रैं सागै ई खीमदास नैं सूम मू जोरदार उथको आयो, अर चा' गो चिळियोडो तासळो झळक्यो। तासळो झळकताई बळबळती चा' सू माराज रो हाथ परो बळियो, अर चमकिया। माराज रैं चमकताई मूडा मायली चा' देखै ज्यू पाछी तासळा माय ! लीर-झाण हुयोडैं मैलोडै अंगोछै सू माराज हाथ माथै ढळ्योडी चा' लूसी अर बळ्योडी जगा हाथ फेरण लागा। जठै-जठै बळबळती चा' ढ़ळी ही, बठै-बठै फालरा परा हुया हा। फालरा रैं दाझ रो वेग ओछो पाडण मारू माराज सुगणकी नैं तेल लावण रो कैंवण नैं हेलो करता ईज हा कै मन मे विचार्यो कै काई' ठा' घर मे तेल हुवैला ई कै नी। नै जे तेल घर मे नी हुयो, तो बळ्योडैं मूडा री राड मन मे आवैं ज्यू ई आवळ-कावल बोलण लागैला, नै नवैं ढाडैं परभात रैं पोर, राजा करण री वेळा अणूतोई महाभारत मड जावैला। ओ विचार र सन्ता छाना-बोला हाथ रैं फूक देवण ढूका, अर फालरा री दाझ ठाडी करण हाथ रैं बोका देण लागा।

झळतो मूंठियो की ठाडो पड्यो जरैं सन्ता रो ध्यान पाछो चा' सामी गयो एक'र तो मत्तो कियो तासळा मायली चा' बारैं फैंक देणी चाईजै। थूक्योडी चा' पीवणी ! ऐडो मूगलवाडो किणनैं दाय आवैं ! पण दूजैं ई पळ मन गुळाछ खाई। सन्ता नैं आछी तरैं ठा' ही कै – पीवो'र फैंको। इण घर मे पाछी चा' को मिल सकै नी। आ तो बापडो सुगणकी भली है, जको ज्यूं-त्यूं टावग मूं छिपाय नैं उणरैं चा' मारू गुळ री डळी बचाय राखी ही, नईं तर काळ-बरस मे बां'रा ई परा थाका। आ

सोच, उणरै चा' ढोळण री हीमत पण हुई नी। वेवस बापडो ग्राख्या मीच'र चा' पीवण ढूको।

पीवण नै तो खीमदास चा' पी गयो, पण उणरो जीव घणो दो'रो हुवण लागो'र ऊबका ग्रावण लागा।

मूंडा मे कडवास घुळता मौर विचारां पल्टो खायो। सुगणकी री सगपण करण नै म्है पछै किसा तडफा कोनी तोड्या ? किण सगा-गनायतां कनै कोंय गयो नी ? मूंडो नी देखां, जिणा रा डूंगा देखणा पड्या। गाव-गाव भटक्यो। घणा रा घर-ग्रांगण एक किया पण कठै ईज सगपण बैठै ईज कोनी। सगपण करणो पछै किसो हसा-खेल है ? छोरा री घर-ग्वाडो दोनू ई देखणी पडै। कैंवत में ई कयो है कै सगपण करणो जाण नै, नै पाणी पीणो छाण नैं। ग्रबै म्हूं ई काई करूं ? जावूं जठैई, कठैई घराणा मे ठबक, तो कठैई छोरा मे खोड ! जो कठैई दोनू ठीक हुवै, तो नेगचार री लाल पाई ई देवै नई—पछै छानैं रिपिया री तो बात ई छोडो। भला मिनखा नै पूछो'क हूं घर-गिरस्ती वाळो ग्रादमी, मोटो पिरवार, ब्याव रो खरचो थे नई देवो तो म्हू कठा सू लाऊं ? ग्ररै, ग्रठारा बरसा री छोरी थानै सूपूं ! खावणजोग ही, जरै म्है पाळी, नै हमैं कमावण जोग हुयी, जरै थारै घरै मेला। भला मिनखा, म्हू कोई पाळण-पोसण रा पीसा तो मागूं ग्राथ कोनी। मागूं, तो कोरो ब्याव रो खरचो। ग्ररै ग्रो पीसो तो थे जान ले नै ग्रावोला, जदैई खरच हुय जायला। थारो पीसो थानै ईज खवावणो है। म्हारै तो कन्या रै घर री लाल पाई ई चाईजै कोनी। पण किणनै कैवा नैं काई कैवा ! सुणै कुण, मिनख तो दुनिया मे रैयाई कोनी। सगळा ई मतलब रा यार है। पैला रै घर री कुण फिकर करै ! कोरो ग्रापरो घर भरणो चावै—फेर एक लाबी निसास लेय नै सोच्यो—मिनख बापड़ा काई करै ! सुगणकी रै ब्याव रा ग्रह ईज खोटा पड्योड़ा है।

ग्रापरै निकमाई ग्रर निसोच री भार बापड़ा ग्रहा माथै ढोळ'र मिनख कैडो नैछो कर लेवै !

चा' पीया पछै खीमदास चिलम हाथ मे झाली। साफी भिजोय'र नाळी रै लपेटी। चिलमरी डाडी भागा नै दोय मईना हुयग्या हा। वो नित विचार करतो, कै पूनमा कूभार रै ग्रठै जायनै नवी चिलमडी परी लावै, पण हमेस ग्रो मतो टर जावतो। कारण, कै पौर जेठ मईनै लायोडी चार मटकिया रा दोय रिपिया कूभार नै देणा हा, ग्रर खीमदास ग्राछी तरै जाणतो हो, कै पूनमा रै ग्रठै जावता ई वो होणी नजर सूं उणरै सामी जो'र कैवैला, म्हाराज, काई चिलम देवा, ग्रागली मटक्या रा ई पीसा हाल ग्रावणा है। यूं स करो, तो म्हारा ग्रभाग ईज परा जागै।

आभै री जाडी धुंध सूरज री मोळी-मोळी किरणां नै धरती माथै उतरण रो मारग ई को देवती ही नी। धन-रास रो दिणियर किणी रियाटर पुलिस अफसर रै मिजाज ज्यूं ठाडो हो। धुंध रो ठिठुरतो धुंओं चुनाव रै मोकै पारटियां रै गठ-बन्धण ज्यूं गाढो अर ओपतो हो। खीमदास चिलम री फूंक मारी अर धुंओं काढ्यो। ओरा में वो धुंओ किणी चुनाव हार्योड़ नेता रै मन्तसू ज्यूं घुटण लागो।

चिलम रै कस को असर कियो। दूजी बार उण ऐड़ी जोर सूं चिलम री फूंक खीची जाणै चिलम री ईं फूंक रै सागै सगळाई दुख-दळदर पी आवैला। ऊंतावळै कस सूं खा-खा करनै जोर सूं खासी आवणी सरू हुई। सांस उळझ्यो। खासता-खासता उण री छाती मे पीड़ होवण ढूंकी।

खासी री आवाज सूं एक नैनकड़ो जागो अर जोर-जोर सूं रोवण ढूको। रोय-रोय अर रोटी मांगण लागो। खीमदास नैनकड्या माथै राली ओढ़ाय, थचकारो भर'र "वा' सूव परो, सूव परो" कैय नै उण नै थपथपावण ढूंको पण नैनकड्यो छानो रैयो कोनी। वो बैठो हुय'र घणा जोर सूं कूक-कूक'र आंख्यां मसळतो बरड़ायो-बाई, बाटी, ऽऽऽ!

पछै तो बारी-बारी सूं हाका सागै ऐकण साथै घणा रेडिया बिना बटण दाब्यां ई पूरा वाल्यूम सूं बाजण ढूका। मीरा, प्रेमदास, हेमन्ती, चतरियो, लिखमी, सरसती। खीमदास किण-किण नै छानो राखै?

सुगणकी पाड़ै आय'र टाबरा नै करड़ी निजर सूं देख्यो अर आंख घुरघुराय'र टाबरा नै छाना रैवण री सानी करी, पण जग जाणै है, के भूखो पेट सानियां मे समझै कोनी।

इण हाका-हूक सूं बेमाग मैथी रो माथो फाटण लागो। वा बडबडाट करण लागी—"टाबर काई है, जीवता जागता जिन्द है जिन्द! राडजण्या, मरै न कोई पिण्ड छूटै। सूता ई रोटी'र ऊठताई रोटी! सगळै दिन भखळ-भखळ खाय, पण छिनाळ रांड रै जीव ज्यूं इणांरो पेट तो भरीजै ई कोनी। एक आधो राडजिणियो मरै तो जीव मे जक आवै, नीतर तो सास ई को खावण देवै नी।" बाझियो टाबरा नै कितरो तिरसै पण, टाबरा वाळा ईंज जाणै के भलाई कोई उणरा सुगन मती ल्यो, तो ई वो कितरो सुखी होवै।

टाबर हाल रोवै हा। मैथकी थाणेदार जेडी करडी आवाज में कह्यो—"करमफूटोड़ां, छाना-चोला बळो क्यूं नी।" पण रोय-खोण उण री निबळी बोली किणई गिनारी ई कोनी। आपरै हुकम री यूं बेअदूली होवता देख मैथकी बिफरीजगी। हुकम री तामील करावण मे जठै जीभ थाक जावै, वठै हाथ काम करणो सरू करै। जितरो क्रोध उणनै हुकम री बेअदूली सूं नईं आयो, उतरो आपरै रोटी नईं दे

सकण री असामरथ अर अणनमाऊ धणी माथै आयो। पण, ज्यूं कुंभार री क्रोध गधा माथै अर विद्यार्थियां रो क्रोध बसा माथै निकळै, ब्यूं इंज माईता रो क्रोध बेकसूर टाबरा माथै निकळै। मैंयकी हाथ मे चीपियो लेय टाबरा नै मारण ढूकी। भूखा पेटा री आवाज दबावण सारू कुण रो मारै नी ? इण मामला मे मा नै राज-माई-बाप दोनूं एकण जेडा हुवै।

क्रोध आंधो हुवै। चीपिया री मार सूं आठ बरस री हेमन्ती रै माथै मे लाही आवण ढूकी। चार बरस रै चतरिया रै मोरा मे चीपियो चितराम हुवै ज्यूं उफसग्यो। इण राखसी आतक सूं सगळा टाबर छाना-बोला हुयग्या, पण उणा री आख्या मूं मोटा-मोटा मोतीडा ढळकण लाग्या। आख्या भर सगळा ई दुखी, पण निरदोस निजर सूं, मा रै मामै देख्यो, जाणं गोळी खाय'र छटपटावती हिरणी आख्या फाड़'र सिकारी कानी देखती हुवै—"बोल, म्हारो काई दोस ?"

मैंयकी टाबरा रै उण अणबोले सवाल अर तीखी निजर रो भार नई झेल सकी। टाबरा री निरदोस आख्या मा री ममता नै झझोड नै जगाई। अणूताई टाबरा नै मारणै सूं दुखी अर पछतावो करती मा आपरी भूल-सुधारण नै, आपरो निरदोसपणो बतावण नै मूंडो चलावण ढूकी। हमकै उणरै क्रोध रो धारियो धणी माथै ढूकी—"करम फूटोडो अणकमाऊ नै ऊनो जिमाऊं कैठई री ! पौर दिन चढ्या तक गूदडा मे पड्यो रैवै। निपोचियो कठैई रो ! हूं कैऊं, जे कमावण री पोच नई ही, तो ढीलो मूंडो मेल, घोडी माथै चढ'र तारण-बादण नै क्यूं आया ? जद तो लुगाया वाल्ही लागती ही, अबै कमावणो वाल्हो क्यूं नी लागै ? घर मे तो मणा धान रोज गिटण वाळी फोज भेळी कीनी नै पायली दाणा नीठ लावै। दाणा बापड़ा आवै कठाऊ ! काम करै न काज, पड्यो रैवै अमलदारा री सभा मे बळ नै। कमावण रो हो मन ईज कोनी पछै लुगाया नेडो क्यूं आवतो हो ? निपोचियो, जद तो म्हू ना देवती, जरै मानतो थोडो ई हो। थोडीलो कठै रो ! दो पळ री मोज नै आधी ऊमर री बरण। पण स्वारथी नै टा' थोडीईज पड़ै ! मरै तो लुगाया, दातूर पड़ै तो लुगाया रै। टाबर रोटी मागै नां लुगाया कनै। आप तो वाडै कूतरै ज्यू आखो दिन बारै भटकतो रैवै, नै रोवण-झोखण नै म्हारो करम !

खीमदास निरी ई ताळ तक अणमणो भाव सूं सुणतो रह्यो, पण वाडै कूतरै री ओपमा उणारै दाय कोनी आई। कमजोर नै गुस्सो भारी। चिलम फैंक, खार खाय'र बोल्यो "चुप रै रण्डकी कठी री। गडक ज्यू भाऊ-भाऊ करै ! बेसरम छिनाळ। हरामजादी कुलखणी। थै तो म्हनै मैमूळो ई खाग्री परो। राड कूतरी हुवै ज्य कठा-कठा सूं टाबर जिणै, नै दोम म्हनै देवै।"

बींझियें क्रोध मूं मैथकी री ग्रांख्या में ग्रांसू भरीजग्या। "म्हूं इण ठाला-भूला रो गिरस्ती रै टूटा-भागा गाडा नै मर-खप नै धकाऊ नै ग्रो म्हारै माथै ईज कूड़ी बदनामी रो टीकरो फोडै ! जवानो मे कैंडी गोरी फूटरी ही, नै निखोद जाजो बाप रो, रांड़जिण्यै म्हनै भूख सू भेळी। दो सूखा टुकडा सारू चदण जैड़ी काया नै माटी मे मेळ दीनी। सीधी गूं'यू म्हू इण रांडजिण्या री''' ।"

गम खाणै रो गुण कुदरत मूं वैपार ज्यूं हुवै। दूझती गा री लात ई खावणी पड़ै पण बाखडी सामी भेटी करै, तो ई सोटा री पदरावां। जो खीमदास ग्रणकमाऊ नई होवतो, तो मैथकी उणमूं भूंडी गाळ्यां नाड-नीची कर'र सुण लेवती। पण इण भूखी नै बेमार हालत मे सत ई उणरो जमा पूजी ही, ग्रमोलक धन ! उण माथै ऊठ्योडी ग्रांगळी देखण रो उण मे हीमत कोनी ही, जको किडकिडिया पीस नै बोली- "म्हू दूजा रा टाबर लाऊ जको थू काई नाजर है ?" कै'र वा रोवण लागी।

ग्रापरी मरदानगी माथै दाग री बात सुण'र खीमदास नै काळ चढ्यो। क्रोध मे मिनख रै ग्रकल माथै अकुस रैवै नो। ग्रांधै होयोडै पां'डै पडी चिलम उठाय जोर सूं मैथकी रै माथा माथै बाही। चिलम लागता मौर तावखोणी मैथकी "मा ए ऽ ऽ" कैर जमी माथै पसरगी। माथा सू बगग-बगग लोही पडवा ढूको। हाका-बोक हुयोडी सुगणकी दौड'र मा रै पां'डै ग्राई। धबगट मू धूजती उण ग्रापरै ग्रोढणै रो पल्लो मा रै माथा सू बैवतै लोही माथै दबाय प्रेमदास नै पाडोसी रै ग्रठा मू छीकणी लावण नै दौडायो ! टाबर बगना हुवै ज्यू मा रै चार्र कानी बैठ'र बिलखण ढूका। धारै ग्रांख्यां सू ग्रथाग मोटोडी छोटा रो मेह बरसण ढूको।

हवा रै लैरकै मूं ग्रागणै ऊभी पीपळी रा सदीवाड मू पीळा पाना झड हा। इणी पळ एक कागलो कांय-कांय कर रोवतो-गेवतो उड्यो। इण करतो डाळ सू एक इंडो पड़ फूट्यो, पण उण कानी किणी रो ध्यान को गयो नी।

००००

जसोदा

वा'रैवळियै बेमाता रै लेख लिखण रै पछै मा-बाप जसोदा नांव रूप-रंग नै देखनै भले दियो हुवै, जोतकिया नै पूछ नै तो को दियो हो नी, आ बात म्हैं नै'चै कै सकूं। धणी री सेवा करण मे पुराणा आळी जसोदा कंईक पारगत ही, आ बात तो पुराणा माय को लिखो नी, जिको म्हनै ठा'पडै, पण पूर हुयोडै बिदरग ओढणै रो पल्लो माथै नाख, तावलै धणो नै धाणा-मिसरी री उकाळी देय, माथै पूर ओढाय, एक लाम्बो सास ले नै ध्यान सू क्यारूमेर देख सगळा ढग-ढाळ ढाळ जाण नेखम सूं जसोदा बारणै-बारै पग दियो जरै ठौड-ठौड उधड्योडै फाटे चीथडै जैडै घाघरै रै घेर री हुकम-अदूली करतो जीवणै पग रो गोडो पिडळी-साथळ समेत बारै आयग्यो। काची केळ जिसी साथळ री ओपमा कवियां जसोदा री जाघ देख नै को दी ही नी, आ बात तो नक्की ई है, पण तो ई आदमी री जात उण पर निजर नाख्या बिना रैवै नीं। हीडता-फिरता लीर्‌या सूं नागो देखीजणो कोई नुई बात कोनी। घणकरा गाव रै घरा री आईज हालत है। आ तो रोजीना री बात है। जसोदा नै आपरै फाटे घाघरै री कोई भैंणी नी, असन्तोस नी, ज्यूं पण पिडळी-गोडा रो दीसणो ई कोई लाज री बात नी। साची बात तो आ है कै स्त्रिस्टी रै सगळै औगणा ज्यू घणी लाज ई घणा पढ्या अर थोड़ा कमाउवा अधबिचला मे ईज घणी है।

नुओ घाघरो बणावण री बात विचारणी अणूंतो अकारथ सोच करणै ज्यूं है। उण रै उदास मूंडै माथै दूज रै चंदरमा ज्यूं मुळक री एक खीण रेख इण कारण ही कै आज हफ्तो धकीजैलो नै मगळा पीसा देय-दिवाय नै ई वा पावलै री मिरच्या जरूर मोल लेय लेसी। दाढै-दीठै इण सपनै सूं मिरच रो देवां-दुरलभ चरपरो सवाद उणरै मूंडै माय पाणी घोळ दियो। लारला महीना सूं कोठै री सवाद-बायरी सिड्योडी परदेसी रातोडी जवार रो लखणा-बायरो सोगरो कोरै लूण सूं खाय-खाय वा धाप नै हैरान होयगी ही। बाजरी कै चणा री मोठी रोट्या कोरै लूण सूं खावै तो कोई दैण नी, वा जनमी जद सूं इया ई करती आय रयी है। नै जे छाछ रो छळको माय परो मिलै, पछै काईं कैणो? उण रै सवाद रो काईं पूछणो? ओ तो देवतावा रै राजा इन्दर नै ई दुरलभ है। पण जूनी सिड्योडी रातोडी कोरै लूण साथै किया खाईजै? हां, जे थोडी मिरचा माय होवै तो काम मजै सूं चाल सकै।

जेठ मईनो । माथै सूरज तपै । लाय बरसै । दिनूगै सूं बाळती-झाळती घूम माजै । माथै सूं अेडी तक परसेवै अर रेत रै संजोग सूं सरीर चिपचिपो होयग्यो । पगां मे आधी पगतळी बिना रा फाट्योडा लपतरा परण नै । उणां रा परणा नइ पैरणा बरोबर । उणा रै पैर्‌यां थकां कांटा भांगै नै पग वळै, पछै काई सुवाग ? पण मन रा मोदक गिटकावती जसोदा दुनिया सूं अळगी-थळगी कलपना लोक रै ठण्डै झाड़ हेठै लैरा लेवती मिरच-सोगरै रै अमोलक सवाद मे डूब्योडी ही। परमातमा बड़ो भलो है । म्हा नाजोगा नै बो जे मन रा लाड खावण री कळा नी देवतो तो एक दिन ई जीवणो पण घणो दोरो होवतो ।

जसोदा विचारै, बापड़ै आदमी इतरी इधकी बेमारी भुगती है, भुगतै है, रातोड़ी री रोट्‌या कोरै लूण सूं कियां खावै ? उणनै कोकर सधै ? नई हुवै तो आज उणरै सारू एक रुपियै रा गिवूं जरूर लावूली । जवार रै आटै मे गिवूं रो आटो भेळा तो ठा' ई कोनी पड़ै । को भूख पण खुलै । आदमी धापनै रोटी नी खावै तो त्यागत किया आवै ? जे त्यागत नी आवै तो घरे बैठ्‌या कितरा दिन तक काम चाल सकैलो ? नै आज तो उकाळी री मिसरी ई थाकी परी । रुपियै-आठ आना री मिसरी तो लेणीज पडसी । की भी हुवो बेमार री ओखद तो करणी ई पड़ै । एक रुपियै री मिसरी आवै पण कितरीक है ? आधा पाव ईज तो ? सोळा उकाळ्‌या मे आधा-पाव साकर सूं उकाळी जैर जैडी नी तो अमरत जैडी कीकर हुवै ? ओ तो कैवो कै आदमी भलो है । कोई दूजो हुवै तो परो मरतो मरै, पण अैड़ी उकाळी नी पीवै ।

कौडी-कौडी करनै जे च्यार रुपिया रो मेळ भेळो परो हुवे तो बैद कनै सूई परी देराऊं । बैद बापड़ो कैडो भलो आदमी है, उकाळी सारू दवा मुफत दे दीनी । पण उकाळी सूं हुवै काई ? बैद तो बापड़ै कैयो ईज हो कै जसोदा, सरकारी दवाया रा जूनी नै सिड्‌योड़ी है । जूनी जड़ी धूड़ जैडी । जाणै खाखलै री जात । अैडी दवा सूं काई हुवै ? तूं कैवै, तो म्है असल बिलायती सूई परी लगावूं, रिपिया तो च्यार लागैला, पण झट आराम हुय जावैलो । जे इण सूं थोड़ो फेर-फार पड़ै, तो दो सुइयां भळै परी लगवाईजे । म्हारै की लेणो-देणो है नी । फीस रा पीसा म्हारै लेणा नी । सूई म्हारै घरे नीपजै नी । म्है तो हुवै जैडी बात कैवूं । पछै थारी मरजी ।

बैद कैडो सैणो-समझणो है, नै मिनख कैडा गुणचोर ! एक तो सांवरियो, इण रो सत्यानाश जाय, कैवै कै बैद की जाणै करै तो आय कोनी, सगळै ई रोगा मे एक पेनेसिन् (पेनसलीन) री चवदै आना री सूई लगाय नै च्यार-च्यार पांच-पांच रिपिया लेवै । रोग तो ठीक करणो जाणै कोनी, नै मिनखा नै कोरा ठगै । इणा नै सुइयां लगावण रो राज री तरफ सूं हुकम ई कोनी । हूं कैवूं च्यार रिपिया लेणै सूं ईज

मिनख ठीक हुवै तो थारै बाप रो काईं जाय ? जिणरी पीक हुवै बो दे। बैद कोई गाडी तो लेवै कोनी।

पण जसोदा रा अंड़ा भाग कठै, कै च्यार रिपिया माग नै मादै माटी रै सूई लगवा सकै ? धणी रै सूई लगवावण सारू वो'रै कनै रिपिया लेवण नै गी, तो बो'रै समझदारी रो पड़ूतर दियो। सैणो-समझणो आदमी तो भली सल्ला ईज देवै। जरै ई रामजी राजी है। घर में माया है। माल-मत्तो समझ रो ईज तो है। कोनी ? बी कैयो—जसोदा, काळ बरस मे च्यार रिपिया माय कठै ? नै जो म्हारी मानै, तो सूई लगवावण रो मत्तो मती कर। एक सूई सूं तो ठीक हुवै कोनी। च्यार-पाच सुइयां लगवावै तो बीस रिपिया लागै। एक मीनै पछै बीस रा चाळीस रिपिया हो जासी। अणूता घोवां सूं सरीर बीधावणो ! नै पछै बैद किसो धनन्तरी है कै उण रै सूई लगवावण सूं ठीक परो ईज हुवै ? थोड़ो थम नै फेर कैयो—जसोदा ताव आवै है। लू लागी होसी। च्यार-छै दिना माय आपेई ठीक हो जासी। अणूती देणदारी करनै माथै रा बाळ पराया करणै मे कोई सार कोनो।

ना बाबा, काई करणो है सुइया रा घोबा सूं सरीर बीधाय नै !

आज जसोदा नै बडी रा साढ़ी दस रिपिया मिलण आळा है। इण माय सूं डोढ रिपियो तो बो'रै नै देणो पड़ैलो। बो'रो बापडो कैडो भलो मिनख है। गैग रो मेट रिपियो लिया बिना हफ्तै में नाव लिखण सूं नटग्यो, जरै दौड़ी-दौड़ी इणरै कनै आई ही। इण ठोर-ठोर नै कैयो हा, जसोदा, हफ्तो चूकता ई डोढ रिपियो पाछो देणो पड़ैलो। पछै यूं मती कहजे कै कैयो कोनी। दूजै कनै सूं दो रिपिया लेवूं, पण तूं गरीब है, इज्जतदार है, मिनखां में थारी पैठ है, तूं डोढ ईज दीजे। नै साव नवो कडकडाट करतो नोट काढनै दियो। ज्यूं दोड़्या-दोड़्या लेवण नै जावा, ज्यूं ईज पाछा दोड़्या-दोड़्या पुगावण नै जावा, तो साख वणी रैवै। साख है तो लाख है। जाय लाख नै रैवै साख। जो उण दिन बो'रो रिपिया नी देवतो तो आज साढी दस रिपिया कीकर मिलता ? डोढ रपियो पाछो देऊं तो ई नौ तो रहसी। नौ ईज सई। नीतर नी छोड नै एक ई कठै हो ? राडजणियो सावरियो इणरी ज कटवी करै। उण रा तो लखण ईज बांदा है। जठै-जठै री कटवी करण रो ईज काम है। कैवै कै वो'रो आपणो लोई पीवै। आपानै लूटै, हलाल करै। अो कोई धाड़ायत है कै कसाई है ? बापडो अवखाई मे काम आवै, तो ई इस कठै ? गुणचोर कठै ई रा !

आदमी मेट पण भलो है। बीमो मिनख। एक रुपियो ले नै ई नांव तो लिखै है। जे नाव नई लिखतो, तो मिरच-सोगरो छोड रातोडी रो टुकड़ो ई खावण नै को मिलतो नी। कैडा-कैड़ा मिनख है ? मिनखां में राम तो रैयो ई कोयनी। नै उण सावरियै रै तो हियै री आख्यां ईज परी फूटी है। च्यार आखर कांई भणियो, माथै

में सीग परा ऊगा है। भोगनो फिर्योड़ो कठी रो ई! म्राखो गंग नै कंवै, रुपियो-रुपियो मती दो। मेट री रपट लिखो। मेट घूंस खावै। नांव-लिखाई रा पीसा लेवण री रीत कोनी। औ पीसा राज मे जमा कोनी हुवै, इण रै गूं जे मे जावै। कलट्टर रै सामैं सगळा मजूर भेळा होय नै कंवो—सा'म्हां गरीबां सूं रिस्वत खावणियै बेईमान मेट नै काढो। भार थारो ग्रणू ताई! इण रपट लिखी। मैंगा रा अगूठा दिराया। कलट्टर ग्रायो।। सो पचास जणा कैयो भी सरी कै सा'म्हारै कनां सूं नांव-लिखाई रो रुपियो लेवै। पछै काई हुयो? एकण हफ्तै उणा कना सूं एक-एक रुपियो कोनी लियो, दूजोड़ै हफ्तै एक रो ई नाव को लिख्यो नी! दो मीना हुया। पछै हाथ ई जोड़्या, गरजा ई कीनी, कुण सुणैं? पाधरो पड तर देवैं, भाई, थे मोटा मिनख हो, कलट्टर नैं रपट लिख दो। दो मईना मे दस घाट सौ रुपिया मिलता। जो ग्राठ-दस देवणा ई पड़ता, तो ई ग्रस्सी रुपिया तो किण रै ई बाप रा को हा नी। सवार-सिञ्या किणरै घरे जाणो रैयो? कुण रोटी घालै? काळ-बरस, कोई एक पीसो ई को देवै नी। पायली बाजरी कोनी दे। ग्राज सावरियैं री बऊ ग्राई ही। रोवती ही बापड़ी। दो दिन हुया, मूंडै मे ग्रन्न रो दाणो ई को घाल्यो नी। ग्रादमी भण-लिखनै ई जे भली-भूंडी नी सोच सकै, तो धूड है उण पढाई मे! कलट्टर बापड़ो काई करै? ग्रो मेट नी तो दूजो सही। ग्रावैलो जिको ई रिपियो तो लेवैलो ई ज!

हफ्तो चुकीज रैयो हो। मजूरा री भीड़ लागोडी ही। पेट मे भूखा मजूरा रै मसखरी ग्रर मुळक नैं देखता ई वणै। अंडी निहछळ, अंडी ऊडी ग्रर ऊजळी हसी पीसां सू मोल लिरीजै कोनी, चौहटै बिकै कोनी। ग्रा तो हियै रै ऊजळै मिनखा रै हियै री उजास है। दुखी जीवण रै मिनखा नै ग्रा ग्रमोलक हसी देय करतार किरियावर कियो है। बडा साब, बावू, ग्रोसियो (ग्रोवरसीयर), मेट सगळां रै सामैं रुपिया बटीजै। भीड़ ऊभी वाट जोवै। मोट्यार रोळ-ममखरी करै। रुपिया लेवणियो ग्रादमी सूर री जिया रुपिया लेवण नै जावै, नै पाछो ग्रावै जरै रावड़ी री थर जैड़ो मूडो लिया। कलपना री खुसी री खीण रेख खरै जथारथ री धरती मार्थै पळ एक पण टिकै नी।

वेपोर रा दो बज्या। वावळिया रै झाडा री बैंतेक छियां मे ग्रथाग मिनख किया मावै? परसेवो झाण हुवै। पेट मे ऊंदरा लोटै। ऊनाळै री टेम। भूख-तिरस सू जीव धोतळलै ग्रायोडो! तिम मरता रै ग्रास्यां ग्राडो ग्रन्धारो ग्रायोड़ो। पाणी रो तळाव वठै सूं खेतरवा दो-एक ग्राघो। जसोदा री गत सांप-छछुन्दर ज्यूं होगी। न रहतां वणै, न जाता। तिम सूं घवराट छूट्योड़ी, धोतरलो सूखीजै, जीव जाणै हमैं नीवळै कै हमैं नीकळै। जे पाणी पीवण जाय जद नाव परो बोलै तो पछै ग्रध-रात

तक बैठ्या रैवो नै रुपिया पण मिलै कै मिलै ई नी। 'नाव बोल्यो जरै कठै लदाणी ही ? हमै रुपिया खतम हुया परा, थकलै हफ्तै भेळा मिलेला'—हजार मिस है। जसोदा जाणै है कै जिणनै आज रुपिया नी मिल्या, उणनै कदेई नी मिलै ! इया इणी गाव मे सैकडा कमतरियां रा रुपिया बाकी है। मिनख कैवै कै अै साब लोग उणां रा रुपिया परा खावै। भोळी बात करै ! मिनखां रै काई ? मूडा जितरी बाता। कैवो क्यूं नी, अै मोटै भाग रा मोटा मिनख उणां रा रुपिया खाय नै कठै जासी ? इणा रै किण बात री कमी है ? रामजी राजी है। सगळाई ठाट-बाट। पण मिनख....कहता हुसी, मिनखा रै मूंडै ताळा थोडाई लगाईजै !

ओसियो (ओवरसीयर) नाव बोल्यो—जसोदा ! पचासां मजूरा रै हुजूम घणै जोर सू नाव नै पाछो कैयो। बा जाणै ऊंघ सू जागी। लुगायां खूणी मार नै कैयो—जा जसोदा, थारो नाव आयो परो। भीड री आख्या जसोदा कानी लागी, मरै क्यूं नी झटपट !

जसोदा सतरै ठौड़ सूं फाट्योडै ओढणै नै ठीक कर्‌यो। लीरक्षाण होयोड़ी चोली सूं मघण-स्याम बीटिया रै बोबा नै ढकण रो निरफळ जतन करती थकी ओसियो कनै पूगी। ठौड़-ठौड़ वगारां आळो सीवण उधड़्‌यो बोदो घाघरो हिल्यो, जिण मे सू साथळा री गोराई झिळकी। उण सू दस बरस छोटो मेट बेसरमी सू डोळा काढ नै देखण लाग्यो—जाण ज्यूं कदळी रो थम ! कितरो निसरमो है, जसोदा विचार्‌यो, नै उणरी भूखी डीठ री घणै जतन सू बेपरवाई कर थकै हाली। ओसियो कागदा में निजरा गडाय, पछै उण रै परसेवै अर गरमी सूं लाल हुयोड़ै सलूणै चैरै कानी भूखी निजर फैंक'र कैयो—'जसोदा, साढ़ी सात रुपिया।'

बडै साब एक-एक रा सात नोट गिण'र साभां किया। कैयो, 'आठ आना छूटा कोनी।'

अणमणै भाव सूं धीरै सींक हाथ बधाय जसोदा सातूं रुपिया लेय लिया। पल एक थम, छेड़ै रो पल्लो मूडै मे घाल, होळै सींक बोली—'सा', साढी तीन रुपिया ओछा है।'

'ओछा कोनी,' ओवरसीयर तमतमायनै कैयो—'दोड़ परी, दो दिन री गैर-हाजरी हुवैला !'

'सा' मैं तो एक दिन ई गैरहाजर को रैयो नी।' नस नीची किया बा होळै सीक कैयो।

'तो काईं' ओ हाजरी-रजिस्टर कूड़ो है ? अै राज रा पाना कूड़ा नै तूं सांची ? बदमास कठै ई री ! अै हाजरिया कूड़ी लागै ? सिरकार रो काम कदेई कूडो हुवै, गैली राड !'

भूख, तिस, गरमी, भीड नैं गळ्या सूं उपज्योड़ै नाजर किरोध री पंचधूणी तपती जसोदा कियां कह सकै कै राज रो काम, राज रा रजिस्टर, राज रा लेखा, राज री हाजरिया कूडी है। इण मे जिको लिख्योड़ो है, बो तो सौ टंच साचो ईज है। बा आई तो हरमेस ही। कदेई नागा करी को ही नी। पण ओ हो सकै, कै मेट कनै हाजरी मडावणी पातरगी हुवै। भूल तो उणरोज है। भूल कोनी, तो फळ भुगत। उणनैं लाग्यो कै बा साचाणी गेली है। उण मेट कनै जाय, दो घडी रोळ-मसखरी करनैं तीन-तीन, चार-चार बार उण नैं हाजरी माडण रो क्यूं नी कैयो? मेट म्हारै बाप रो काई लेतो? घणै सू घणो चोळी बारै आयोडा बोबा नैं देखता, कै फाट्योड़ै घाघरै सू झिळकती साथळा नैं देखतो। दो घडी आपरी निजरा ठण्डी करतो। इण सूं म्हारो काई बिगड़ जावतो? हृदयै कठ, आख्या भर जसोदा विचार्यो, कसूर म्हारो आपरो है कै मै घड़ी-घडी भात-भात मेट री तीखी निजरा सूं ओलैं रैवण रो जतन करती रैयी। अबै फळ भुगततां दो'री क्यू हुवै? साढी तीन रुपिया कटग्या'क?

जसोदा टाळ इण बात नैं कुण जाण सकै कै उणरै सारू साढ़ी तीन रुपिया रो मोल साढी तीन सौ रुपिया सूं ओछो कोनी।

छळ-कपट सूं आघो उणरो भोळो मन राज रै काम मे खोट कियां काढ़ सकै? राज रै काम मे कूड़-कपट री बात तो सावरियो कर सकै! बो तो कैवै है कै हाजरी ओछी है, यूं कैवै कै अै सगळा माखा मजूरा री मजूरी रा पीसा हडप कर लेवै। सगळी हाजरियां फरजी है। सगळा रा सगळा मस्टर रोल फरजी भर्‌या जावै। अै तो ऊजळ-धोळिया राखस है राखस! एक-एक हपतै म मजूरां रा पांच-पाच दस-दस हजार रुपिया डकार जावै! कीकर डकारता होसी इतरा रुपिया? इतरा सारा रुपिया रो काई करता होसी? म्है तो जाणूं चार आखर भण नैं सावरियै रो माथो परो फिर्‌यो है। राजा नैं भगवान जोडै, गैला! इणां रो काम कदेई कूडो, फरजी हो सकै है? जसोदा चितराम री ज्यूं टुकर-टुकर देखण लागी।

ले, अठै अंगूठो दे—ओवरसीयर बोल्यो। उण अंगूठो रोसनाई री डब्बी माथै जोर सं घिसनैं लगाय दियो।

"अरै काली, अठै-कठै अगूठो दे दियो? अठै माड।" अंगूठै आळो हाथ पकड ओवरसीयर सा'रै ईज दूजो अंगूठो मडवायो। जसोदा निरलेपी सूं जठै-कठै कैयो, दो-तीन अंगूठा कर नाख्या!

ओवरसीयर दूजो नाव बोल्यो—किसनो!

सात रुपिया मूठी में भीच जसोदा गई परी। पगार लेवण घर सूं नीसरी जरै जितरो कोट, जितरी हूस, जितरो उछाह उणरै मन में हो बो सगळो अणखणाट

में पलट्यो परो। राखम हुवै ज्यूं सोच उण रो पिंड ई कोनी छोडतो हो। डोढ रुपियो बौ'रै नै, एक रुपियो पाछो नावो लिखाई रो, लारै बच्या साढी चार। साढ़ी चार रुपिया में दो माणा रावोड़ी कुण देवै ? कोठै याळो किसो काको लागै ? साव निरणो तो रैईजै नी, नै जै एक वेळा भी खावै, तो ई दो मिनखा रै दो माणा धान तो चाईजै ईज। नै हफ्तो पण किसो वेळा-सर चुकीज ई जावै ? काईं ठा' धकलो हफ्तो कद चुकीजै ?

काचै काच रै कणा ज्यूं उणरो मिरच-रोटी खावण रो सुपनो विखरग्यो। पण जसोदा रै मन मे किणी जात रो वैर-विरोध, किणी जात रो बदळो लेवण री हिम्मत-हूस की कोनी ही। काठ री पूतळी, कै जाणै स्थितिप्रज्ञ जोगी ज्यूं—निरलेप निर्विकार !

☐☐☐☐

कांचली

गाडरा जैडा धोळा केसा री बिखरयोडी लट मूं झूंपै रो उळझ्योड़ो खीपड़ै री तिरणो पोपली आगळ्या सू काढ, हाथ में अगरेजी बावळियै रो वांको चिटियो लेय, खाड़का पैर'र डोकरी समधा बारै निकळी। झूंपै रो फळो बीड़'र भण्डारियां री दुकान सामी चाली। झीर-झीर हुयोडो गोडा लग रो घाघरो अर लीरझाण हुयोडो ओढणो। ओढणो घणो मैलो नै जूनो, जिको रंग रो की ठा पड़ै नी। एक पल्लै में सम्भाळ'र राख्योड़ा जुवार रा दाणा।

झूंपै सूं बीसेक पग माथै हणमानजी रो थान। कीड़ी री चाल डोकरी चिटियो हिलाती थान तक पूगी। थान कनै जाय'र धोक दी। जुंवार रा चारेक दाणा पेडलै माथै बिखेर'र डोकरी पाछी झूंपै सामी वळी। मेरणो उघाड्यो। खाडका उतार्या। चिटियो खूणै मे ऊभो कियो। धान सभाळ'र पाछो मटकै में घाल्यो। मटकै माथै ढक देय'र झूंपै बारै नीसर ग्वाड़ी मे छोटी-सी-क नीमड़ी री नाजोगी छिया मे बैठगी।

ऊनाळै री रत। हवा बन्द। तपत घणी। नीमड़ी रै नीचै एक लांबो लड़ाक कुत्तो पड्यो जोर-जोर सू सास लेवै। कूतरै नै दुतकार'र चिटियो सामो कियो, पण कूतरो किणी रिसवतखोर बाबू ज्यूं निसरडो हो, जिको डोकरी री धुतकार नै धार्या बिना ई चुपचाप आख्या मीच'र पड्यो रैयो। डोकरी मे घणो सत कठै ? बा पण एक कानी पसरगी।

समधा मन नै समझायो—"म्हारै काई बाई ! म्हारै तो कोई धियो न को पूतो। म्हारै अठै कुण है, जिको वै पाछो देवै। कदेई करमा छा' रै छाटै रो काम पड़ै, जिको ई दां'रो घालै।.........नै सारै जुवार रैयो ई कठै बाई ? ऐडी माणी भरी हुवैली, तो दस-पनरै दिन नीठ चालैली। पछै किण रै मूंडै सामी जोवणो ? पोपलो मूंडो कर'र किण रै सामी हाथ पसारा, बाई ? जिण पातर तो पुसवाड़ी नै बैत काचळी रो कपड़ो नई दियो, नै सात सुख।" समधा एक निरासा भर्यो सैरको नाख्यो।

समधा सूती पण मन नै जक कठै ? काईं ठा' छोरी हेजाळी है, लाण माथै हाथ फेरावण नै आई, तो काईं हुवैलो ? जे खाली हाथ फेरूं तो भूंडो को लागै नी ?

भू डो तो वाई लागै ईज ! समधा राड है, तो काई हुयो ? घर में कोई कमाऊ कोनी, पण रोट्या रो देवाळ तो द्वारका रो नाथ है। दाणै-दाणै माथै खाणै आळै री छाप उण लगाई है। मन तो लोभ करै ईज ! मन रो काई—मन लोभी मन लालची, मन चचळ मन चोर। पण मन रै मतै थोडो ईज चालीजै।

चिटियें रो सा'रो लेय'र समधा उठी। रेस झटकण वाधरै माथै हाथ झटकयो। झूपै मे गई। फाटयोड़ै ओढणै रै पल्लै मे घणै जतन सू जुंवार भरी। चार-छै दाणा विखरयोडा हा, उणा नै एक-एक कर चुग्या। अन्न देवता है। देवता नै पगां मे कियां विखेरां बाई ! सूझतो थोडो हो, जिको जमी माथै हाथ फेर-फेर नै सावळ जोयो। दो-चार काकरा नै ई जुवार रै भरोसै घाल्या। मूण माथै ढक दीनो। फळो ढक'र दुकान कानी जावण वारै नीकळी, जद सन्तोस रो एक टुकडो मूंडै माथै उतर्‌यो। "लाण पुसबा नै वैत काचळी तो देवणीज चाईजै।"

जोग री बात, डोकरी री आख्या डबडबायगी। अठै चाईजे, जिको वठै ई चाईजै। नीतर नरबदा रै कोई जावण रा दिन हा ? कितरी भली ही लाण ! बोलती जरै फूल खिरता। जेठाणी-जेठाणी कंवती जीभ मुखावती ही लाण ! अंग मे आळस रत्ती भर ई कोनी हो। आखै दिन घोड़ै आळै दाई दोडती फिरती। फगर-फगर काम करती। सगळा सू बणाय'र चालती। फूटरी फर्री ! गीत-गाळ मे हुंसियार। पण इसा मिनख ओछा दिन लिखाय नै लावै। एक दिन ताव आयो, नै जाणै हीं'क ही ई कोनी। सपनै आळी बात बण नै रंयगी। उण दिना पुसबाड़ो पाचेक बरसा री हुवैली। हरनाथ म्हारै खोळै मे नैमकडी न्हट नाख नै कैयो हो— "भाभी, बापड़ो अबोली जिनावर है, हमै थे जाणो। म्है तो थानै सूंप'र"........कैय'र गळगळो होय रोवण लाग्यो।

सळ भर्‌योडै पोपलै मूडै माथै मुळक री एक रेख बिखरी। "कैड़ी म्हारी छाती रै चिप'र छानी रैयी ही, जाणै सागीई मा होवूं। ओ ई कोई आगोतर रो लेणियो होवै है। म्हारै साग्ळ नईं फाटी, तो कांई, सावरियै रै ओरतो पूरो करवा-वणो हुवै, तो........।"

चैरै माथै उदासी री एक बादळी ऊमटी अर विना वरसुयां ई मारगै वुही। निपूती होवण री बात सूळ हुवै ज्यूं चुभी। बाळ-विधवा ही लाण !

अबै पुसबा कैडी फूटरी दीसै। कपड़ो-लत्तो कैडो ओपै जाणै इन्दर री अपछरा। गाल कंडा गुलाबी पड्या है, लोई जाणै हमै टपकै कै हमै टपकै ! चैरै माथै नूर आयग्यो ! मूंडो जाणै देखो तो देखता ईज रैवो। चार दिसा पैली लटां मे

जुंवां रा माळा टिरता हा। म्हैं कै-कै नै याकती, अे पुसबाड़ी, रांड, थारै इतरी-इतरी जुंवा टिरैं। आव, माथो परो घोवू । कैंडो गैलो चिकार हुयो है। कपड़ा पैरती, तो जाणै खूंटै रै परा टेरिया हुवै, ज्यूं। पग री ब्याउवा सू लोई बैंवतो। पण हमैं ? ....बगत-बगत री वात है।

पायली जुवार देय'र डोकरी समधा बैत भर्‌यो तापेटै रो टुकड़ो लाई। काई करां बाई ? बाणियै रो वेटो, लेता ई खाय, नै देता ई खाय। नीतर पायली धान रो रोकड़ो रुपियो हुवै, अर आगलै जमानै मे रुपियै रो तो घाघरो आवतो—पूरो अस्सी कळी रो। पण इण जमानै रो काई करणो ? मिनखा मायलो तो राम ईज परो निकळ्यो है। पण राम तो लेखो राखै है। आगलै भव में·······।

तावडो की मादो पड्यो। पुसवा हाल नी आई। नैना टाबरां री मा है, लाण, बगत ई को मिळ्यो होवै नी। नीतर उण रो जीव तो अठै ई पड्यो होवैला। छोरी लाण लायकी आळी है। काई ठा.' ओ विचार नै ई नई आई हुवै, कै धा रो अणूतो ई रुपियां खरच परो हुवैलो, कै काई ठा' मायै हाथ फेरावण जाऊ, तो डोकरी खाली हाथ पाछी मेलण सूं लाज मरैली। डोकरी रै अठै कमावण आळी कुण है ? अणूता ई फोड़ा घालणा ' भला मिनख रा अै ईज लक्खण है। मिलण नै तो अठै आई, जरै मिलीज ही'क। पल्ले'क रो ई मिलणो अर दिना रो ई मिलणो। जाऊ, काचळी बैत बटका जोगी तो वा ई है परो'क। थो'-थो,' रामजी मा'राज, मा जिसी ई लायक हुवै, सुवागभाग अमर रैवै। पीळो ओढै, मीठो जीमै। पेट ठरै लाण रो। रामजी मा'राज घणो ई दुख देख्यो है, सैग दिन किसा सिरखा रैवै बाई ' अबै रामजी भला दिन देवै। लाल तापेटै रै पाव गज कपडै नै सामट सम्भाळ नै डोकरी पुसवा रै घर कानी चाली। ताणिया खाती, आपरी जाण खाताई में।

मिनखा नै तो किणरो ई सुख सुहावै ई कोनी बाई। हरनाथ रै गरीब घर नै देखता किण नै ठा' हो कै छोरी नै अैडो घर-वर मिळैलो, पण रामजी सकळा रा ई दिन फेरै। मिनख भूंडिया कर-कर'र जात रो ई मैल धोवै। जाण आई जरै ई कच-कच मच। मोटो जोयो बाई, तीजियात है बाई। पचास बा'रै ऊमर है बाई। मिचमिचियाती आख्या, थलथलो डील है बाई। गावड धूजै बाई। कोरो धन ईज देख्यो है बाई, सुवाग को देख्यो नी। बाप आपरो घर भर्‌यो बाई। बेटी रो सुख को जोयो नी। मू ढा जितरी ई वातां। हूं कैवू, आपो-आप रा नसीब है। छोरी लाण आखी ऊमर में हमैं ईज सुख देख्यो है। इण मूं वत्तो घर-वर काई देखै बाई—चोखो घर-गुवाडी। भण्यो-लिख्यो बींद। गांव मे लेण-देण रो धन्धो। चार-चार गायां-भैंस्या दूझै। ताकड़ियां सोनो तुलै। इण मूं वत्तो पछै काई देखै ? सुवाग भाग तो भगवान रै हाथ मे हुवै। मिनख बापडै रै काई इख्त्यार ? ऊमर तो भगवान री घाल्योड़ी

हुवे, नीतर सूरजड़ी नै देखो क्यूं नी, परण्या नै डेढ़ मईनो ई को हुयो नी, नैं नसीब फूटग्या । मा-बाप जोध-जवान हीरो हुवै जैडो वर जोयो—जाणैं राजकंवर, पण भाग मे नी लिख्योडो हुवै जद कांई हुवै । नै आ पुसवाड़ी, मिनख बूढो-बूढो कंवता, पण आगणं दो-दो रतन रमैं । बीघड़ हुवै जिसी ही, पण राज करें ।

डोकरी हरनाथ रैं घर रैं नेडी पुगी । आसरैं सूं जवाई नैं नेडो जाण घूंघटो काढ्यो । ओरणे री चार आगळ पट्टी आख्या रैं माथैं टिरगी । फाट्योडी माथावटी सू चिट्टा बाध्योड़ा धोळा केस ऊथडग्या ।

पुसवा सासरैं सारू बहीर होती ही । एकण पसवाडैं पावणा ऊभा । पचास बारैं ऊमर, पण सोकीनाई मे अव्वल ! परमसुख धोतियो, टेरेलिन रो झब्बो । सोनैं रा बटण लाग्योड़ा । काची, भीमरी थकी आंख्या माथैं काळो चसमो । हाथ मे राजविया आळं दाईं काम कियोडी चन्नण री छडी । 'आपो आपरा नसीब !' डोकरी आपरैं साद नैं थोडो ताबै कर होळं सीक कह्यो—'बेटी, पुसवा बेटी !'

पुसवा आपरो समान बैळकी मे रखवावती ही । उण नै डोकरी री हेलो गिनारण री फुरसत ईज कठै ? सगळा नग एक-एक कर'र सावचेती सू गिणैं । 'जो कोई सामान लारैं रैयग्यो, तो इणा री मुभाव ईज बाळणजोगो है । पैरण-ओढ़ण मे, *खावण-पीवण मे कितरोई खूटो, मूंडै माय सू हरफ ई को काढ़ै नी, पण नुकसाण एक* रत्ती रो ई दाय को आवै नी ।' एक-एक समान गोख-गोख नै याद करैं ।

डोकरी थोडी ऊतावळी थकी बोली—'पुसबाड़ी ! हा ए बाला, सुणैं ईं कोनी अे ।'

पुसवा रो च्यार बरस रो छोरो डोकरी नै देख'र चमक'र रोवण लाग्यो । छोरैं नैं रोता देख'र पुसवा डोकरी रैं सामो जोयो । मन मे बिचार्‌यो, डोकरी की रुपिया-पीसा मागण आई होसी । घर-धणी घणा दो'रा कमावैं । रिपिया किसा रस्तै *मे पड़्या लाधैं है, माई ! सुर मे थोडी खीज भर'र कह्यो—'काईं कैवै है, धा !'*

समधा चिटियां रैं सा'रैं ऊभी होय'र हाथ हिलाय ओळमो देती थकी बोली—'हां ए बाला, तूं तो माथैं हाथ फेरावण नैं ई को आई नी ए ! सासरैं जाती नै मिजाज आयो बाई तनैं तो ।' कैवतां-कैवता सुर गळगळो होग्यो । आख्या रा कोया मे कोड सूं आलास छायग्यो । पोपलैं मूंडै सू हासती-हासती पर्ण कोड सूं लायोडो बटको सामो कियो ।

पुसबा देख्यो, लाल तापेटं रो बैत भर्‌यो बटको । ओ, अैडो हळको कपडो फेर कुण पैरेली ? आज रैं मुख में लारला दुख रा दिन किणनै याद रैवे ? डोकरी रैं कोड नैं धनबावळी पुसबा को परख सकी नी । उण रो दोस ई कांईं, पीसा आळा री

डीठ मे हरेक वमत रो मोल पीसां सूं आंकीजै। पुसबा री डीठ में बैत कपड़ै रो कीमत आठ आना सू वेसी एक पीसो ई को ही नी, अर माथै मण भर्‌यो पाड। 'हरनाथा! थारी छोरी नै आवै जितरी ई बार काचळी दे नै भेजूं।' रूखै सुर सूं कह्यो—'हमैं इण नै लाय नै क्यू तकलीफ देखी था! म्हारै अठै ओ तापेटो कुण पैरैलो ?'

डोकरी रै काना मे जाणै उकळतो तेल पड़्यो। भावना रै गिगनां सूं हेठी ठोकीज बा चितबगी हुवै ज्यूं होगी। उणनै अहसास हायो, बा गरीब है, उण नै मावजोग कपड़ां को जुडै नी। पुसबा जैडी अमीर घर री वहू नै बैत काचळी देवण री उण नै कांई हक कोनी।

समधा रा पग चिपग्या। पाखाण पूतळी होवै ज्यू बा वठै ईज ऊभी रही, ईस्वर रै माड्योडै ध्यग चितराम ज्यूं।

◘◘◘◘

म्हैं गुनैगार हूं

आज म्हैं म्हारी निजरां मे गुनैगार हूं। मिनख रो मन किसो'क अजीब है? म्हारै गुनै नै कोई कोनी जाणै, पण बोरड़ी रै बोथै कांटै री अणी ज्यूं'कै काच री कणी ज्यूं कोई चीज घड़ी-घड़ी चुभै है। रै-रै'र चुभै नै कसक दे जावै। हर कसक रै लारै विचार आवै। विचार रै लारै मन भीजै, जाणै सियाळै रै परोढियै मे पोयण-फूल।

साचाणी म्हैं कोई पाप कोनी कर्‌यो। ओ तो होम करता हाथ बळ्‌यो है। धरम रै जिगन मे घाल्योडी आहुती ईज म्हनै पाप लाग रैयी है। मिनख रै मन रो काई कैणो? समझाया समझै कोनी।

म्हारी स्कूल मे एक छोरो है—गणेसाराम! माटी रै महादेवजी जिसो दीखै, पण छोरो है तेज। जात रो सरगरो है। बाप कोनी, बडोड़ो भाई आपरो ब्याव कर नै तुरत मा सूं लडाई कर-करा'र न्यारो हुयो परो। मिया-बीबी कमावै-खावै, मजा करै अर जे मन मे आवै तो मईनै-पखवाडै मे मा सूं झगड़ो-टंटो कर'र दुनिया नै आपरो आपो दिखावै। एक बैन है, जिकी अंमदाबाद मे रैवै। उणनै अलबत भाई रो मोह है, जिको राखडी पून्यूं रै दिन लाल-नायलोन रै बडोड़ै फूलाआळी जगमगाट करती रेसमी राखडी मेल्या करै। अठै रैवै गणेसाराम नै उण री बूढी डोकरी थकी मा।

चार-पाच फुट ऊंची गारै री भीतडी माथै जूनी-सिरकिया रो छाळियो बण्योड़ो है। मूंपै रै अर किंवाडां रै भायलापणो कोनी, जिको बावळियै रो भाग्योड़ो माचो किंवाड रो काम करै। पाया री बाड़ सूं घिर्‌योडो वैतक रो आगणो है। आगणै मे बावळियै रै झाड रै नीचै एक खाली हाडका रो पिंजर कूतरो है। ओ गणेसाराम रो चोकीदार ई है नै दोस्त ई। ओ बतावणो दो'रो है कै गणेसाराम नै जादो हेत आप री मा सूं है कै कुत्तै सूं। की ई हुवो, डाव मिनख रै मुकाबलै मे घणो आछो है। मिनख तो मिनख नै हेत देवण आळै नै हेत नी भी देवै, पण ढोर तो आपरै हेतू रो हेत राखै ईज। हेत री जिसी निस्छळ परिभासा ढोर जाणै है, उण परिभासा नै हियै धारण करण जोग हियो वेमाता मिनख रो बणायो ईज कोनी।

संसार में सगळा दुखी है, पण गणेसराम दुखी कोनी । बो तो मा रै आधे री लकड़ी अर उण रै नेह रो एकलो हकदार है; अर जिणनै मा रो निरछळ हेत, मू घो नेह मिळै उण सू बत्तो सुखी इण संसार मे कुण हो सकै ? जिण किणी गणेसाराम सू आत्मीयता नीं राखी, उण रै अंडै-छेडै बो नी रैयो । उणरी जिनगाणी नैं नेड़ै सूं निरखी नईं, उण री दुखियारी मा सू घडी दो घड़ी बात को करी नी, उण नैं गीता रो अनासक्ति जोग समझ मे आवणो कठण है । उणरी दुखियारी मा टाबर नैं कित्तो दुख-दूबळो हो नैं पाळ्या, नैं पाखा आवता मोर टाबर ई कित्तो बेगो न्यारो माळो घाल्यो ! तो ई, मा तो मा है । बा उणीज पीड सू गणेसाराम नैं ई पाळै-पोमै ।

जोगियां, कठै जंगळां मे भटका खाय'र जोग साध रैया हो ? कठै समाधी में डूब्या हो ? भगतां, किण भाठै री सूरत नैं आपरी करुण-कथा सुणाय बिलमावो हो ? कठै पञ्चाग्नि-तप रो दुखदायी पाखड करो हो ? ग्यानियां, भवजाळ री किण गुत्थियां नैं कोरी कथणी रै बळ उळझ-मुळझा रैया हो ? इण पतिता, अणपढ, सूद्र, नाजोगी, होणी पण मैमाआळी लुगाई रै लारै हाल्लो । मुगती थारी दासी बणैली ।

मा सगळै दिन मजूरी करै । साझ रा दस आना रा पीसा लेय घरां आवै । वा पीसा सू रातोडी ज्वार मोल लेय'र रात रा उण नै पीसै । पछै धणी मनवारा सू पोठा थेप'र बदळै में माग नैं लायोडी थोड़ी सी छाछ मे गैं'रो सारो पाणी अर लूण घाल नैं राबडी रांधै, नैं अंधारै पख री चौथ रो चन्दरमा आपरै दूध-धोळै उजास सू धरती माथै सपना रो रग भरै जद बळतै बळीतै रै खीण उजास में सावण री बादळी ज्यू गीली मुळक बिखेर, सपनां री फुलवाडी मे सैर करतोड़ै ऊंघीज्योड़ै बेटै री खाली टूट्योडी तासळी मांय मावड़ी राबडी रै मिस नेह परुसै अर परीलोक मे रमतो बेटो नैं खरै लोक री चिन्ता करती मा चुपचाप राबडी जीमै । उण घर री गाडी रोज यू ई चालै—बिना नागा, बेरोक-टोक ।

ଘଘ

राजस्थान मे अणूतोज काळ पड्यो । अैडो काळ कदेई नी सुण्यो नी देखीज्यो । बडा-बडा नेतावां काळ रै मद मे दान देवण री अपील कर'र सभा मांय बिना टकको एक खरच किया माळा पैर'र अर भासण देय फोटू खिचवाय आपरो करतब पूरो कीनो । नेतावां री बात सूं अफसरां माहतता नै चन्दो भेळो करण री अरज करी । अफसरां री अरज, अरज नईं, हुकम हुवै । अरज रो मतलब हुकम ! म्हे मास्टरां पण टाबरां नैं चन्दो लावण री बीनती करी । रुपयो-आठ आना सरधा-सगती परमाणै चन्दो लावो । चन्दो नईं टैक्स ! म्हे कोरै सिक्का रो ईज नईं सबदा रो पण मोल घटा दियो है, घटावता जावा हा ।

हुकम देवणो नें हुकम री तामील करावणो कितरो सो'रो है। पण अरज ! म्हारै नैतिक चरित्तर मे अजै सुदी इतरो मोटापणो कठै हुयो है, म्हारै व्यक्तित्व माय इतरो निखार कठै आयो है, म्हे गुरु सबद नें अजे लग इतरो समरथ कठै बणायो है, कै गुरु री अरज रो आकर्सण, उण रो महत्व, उण रो मोल, हुकम सू मोटो मानीजै। 'द्रोण' बण नें 'एकलव्य' रो अगूठो लेणै सू पैला आप मे खिमता, माहिरपणो, सिद्धी अर सामरथ उपावणी पड़ै।

छोरा पीसा ले'र आया। अमीर-गरीब, सगळा। म्हे मन्त्री-स्तर रै मांदै नेता नै बुलाय, घणै दिखावै-सागै टाबरा री भावभरी भेंट (?) रै रूप मे वै पीसा काळ साहू दान दीना। वै टाबरा रै त्याग नै हैड़मास्टर रै काम-काज री घणी तारीफ कीनी। इसकूल रो माथो ऊचो हुयो। अखबारा मे नाव छप्यो। जिण दिन छोरा नै मास्टरा रा नाव छापै मे आया, उण दिन सगळा रै मन मे घणो उछाह ऊपजियो, पण एक छोरो हो, जिण रै मूडै माथै हमेस थिरकण आळी मुळक सूखी परी ही। वो गणेसाराम हो।

म्हैं उणनै बुलाय, लाड सू माथै हाथ फेर'र बतळायो—'गणेसिया, उदास क्यू है ?''

''.......................''

वो बोल्यो नई गाबड नीचै घाली परी।

''तैं छापा माय थारो नाम कोनी बाच्यो !'—म्हैं पूछ्यो।

उण आख्या उठाय'र म्हारै सामी जोयो अर पाछी आख्या नीची कर लीनी। उण री आख्या में असमानी चमक ही, जाणै मक्या बाजता पाण आभै मे सनीचर री मोळी मीठी चमक हुवै।

''आछो, जा''—म्हैं कैयो।

उछाह री मीठी-सुघरी राग मे पीड री वीणा रो तार क्दैई गूंज मी जावै, ''जा'' कैवण मे म्हारै अचेतण रो सायद ओई ज मतलब रैयो हुवै।

वो दिन घणै उछाह सू बीत्यो। सगळा अणूता ई राजी हा; जाणै कोई दुरलभ पदारथ मिल्यो हुवै। साझ रा पोसाळ सू घरे जावतो हो। मारग मे जो की देख्यो, उणनै नई कैवू तो 'मिनख री इज्जत वणी रैवै। पड़दो ईज तो मिनख री इज्जत रो रुखवाळो है।

य'वळियै रै झाड नीचै आगरै घर मे गणेसियै रो जिगरी भायलो, उण रो कुत्तो, मूंडै माय रोटी लिया ऊभो हो नें गणेसियो उण रै मूंडै माय सू रोटी लेय

नै खाय रैयो हो। श्रो चितराम देख म्हारै मन मे घणी ग्लानी हुई। मन दुख सू भीनो। गणेसियँ नै बुलाय नैं पूछ्यो—"काई करै है रे ?"

बो बोल्यो कोनी।

"मिनख होय कूतरै री अैंठी बाटी खावै। इतरो भण्यो-गुण्यो, थोडी सी भी तमीज कोनी आई ?" म्है तैंस मे श्राय कैयो।

तैंस मे हू भूल्यो परो कै तमीज जैडा श्राछा, श्राकर्पक पण खोखला सबद उणा लोगा बणाया है, जिका रो पेट धान सू भर्‌यो है।

बो छानो-मानो दूजी कानी देखतो रैयो, जाणै म्है उण सू नईं, किणी दूजै मिनख सू बतळावतो होवूं।

"थारी बाई कठै ?"

वडी माथै गई है सा।'

"हाल आई कोनी ? सझ्या बाजी परी, कद माय नैं रोटी बणावैली ?"

बो छानो रैयो।

"बोलै क्यू नी"—म्हैं जोर घात नैं पूछ्यो।

बो पळेक सकपकायग्यो। पीछै सीधै भाव सूं कैयो—"सा' बोरै रै श्रठै सूं श्राज री मजूरी री दैणगी काले ई परी लाई ही। काळ री फीस रा पीसा देणा हा, सा'। पछै श्राज रोटी कीकर बणै ?"

"तो काई खासी ?"—पूछण नै तो म्है पूछ लियो, पण पूछण री बेहूदगी मनै खटकण लागी।

बो छानो रैयो। उणरी श्राख्या करुणा-भीजी होय छलकण लागी। बुद्ध नैं ग्यान मिल्या पछै उणा री श्राख्या माय सायद इतरी ईज करुणा रही हुवै।

गुस्सै-गंलो होय म्है पूछ्यो—"थारी श्रा हालत है, तो कालै तूं काळ-मद मे बै पीसा क्यू दिया ?"

"श्रापरो हुकम हो, सा' !"—थाड़ी जेज कर'र फेरु बोल्यो—"बाई कैयो कै गुरु रो कैणो मानण सूं विद्या श्रावै। श्रो भी कैयो हो कै एक दिन नईं खावण सूं श्रापां मरा कोनी, पण काळ रै पळ में थारै सूं दान मांगै है तो देणो चाईजै।"

"पछै........पछै कूतरै री अैंठी रोटी........?" म्है उण रै मूंडै माथै तीखी निजरा फैंक'र पूछ्यो।

"मोती मनैं खवायां टाळ मानतो ई कोनी हो, सा'। उण नै म्हारै दुख री

पिछाण है । घड़ी-घडी आय'र म्हारै खोळै मे रोटी नाखै, सा' । काई करू, छेवट मनै उण री बात राखणी पडी । उणरी मनवार कीकर टाळतो.......?"

हा, उणरी मनवार कीकर टाळतो ? मिनख-मिनख नै भूखो मारणै साऊ वेबस कर मर्क, पण जिनावर, बो तो आपरै हितू नै हेल देवै, उण रै दुख मे दुखी होय दुख मिटाणै री कोसीस करै ।

म्हारो हिवडो हबूका भरण लाग्यो । लाखा री मिल्कीयत देवण आळा ! आवो, नै जोवो, थारो दान तो गणेसाराम रै दान सामै तिल तिजोरी भी कोनी है । थे सै उण सू गया-बीत्या हो देखो, हरिश्चन्द्र नै करण री परपरा रो एक नामको टायर भूखो रैय'र, पेट काट'र काळ-राहत सारु दान देवै । म्हारा देस ! तू साचाणी बडभागी है । थरा पूत अंडा सपूत कहावै, तो थारो जस दसू दिसावा मे क्यू नी व्यावै ! अंडो एक तो काई एक हजार काळ भी थारो की नी बिगाड सकै । हू मगन होय जाणं नाचवा ढूक्यो । घणै हरख सू म्हारा पग जमी मार्थं थमता ई कोनी हा ।

□□

आज रै छापै मे काळ-कोस मे घोटाळै रा समाचार बाच्या, तो मनै गणेसाराम पाछो याद आयो । उण री बात याद आवता ई म्हारै मन मे अगन लागगी । हियो हबूका भरण लाग्यो । हाय, हाय ! भावुकता रै जोस मे म्है कंडो जुलम कीनो ? एक मिनख रै आधै नै कूतरै री अेंठी रोटी खावण नै बेबस कीनो, उण रो पेट काट्यो, उण नै भूखा मार्यो अर उण धन रो अंडो दुरुपयोग ।

तद सू म्हारी आतमा मनै फटकार रैयी है, म्हनै गुनैगार बणा रैयी है । वामडै री फास ज्यू कोई चीज मन मे कसकै है । साचाणी, म्है बडो पाप कीनो ।

□□□□



संजीवण

सेठ रिखबचन्द रै टाबरां नै पढाय'र मास्टर किसोरीलाल घरै जावण सारू हवेली सूं बारै नीसर्यो, जद मुजाळै मींनै री चौथ रै चंदरमा री फूटरी किरणां उण रो घणो स्वागत कीनो। माथै मावटो हो अर हवा बाजै ही। ठाड पड़ै, जाणै हिमाळो हालियो हुवै। बारै नीसरतां मौर मास्टर नै धूजणी चढ़गी। उण दोनूं हाथां सूं छाती ढक लीनी। दातां री किटकिटी बाजण ढूकगी। मास्टर मन में विचार कीनो कै ज्यूं-त्यूं करनै अंस ऊनी बडी तो लेवणीज पड़सी। इयांस तो निमूनियो होवतां घड़ी'क बार ई को लागै नी, अर नमूनियो होयां घर रो गाडो कीकर चालसी? 'पैलो सुख निरोगी काया।' दो पग आधा देवता मौर फाटोड़ै खाडकै माय कांकरो घुस पगां मे गडग्यो। मास्टर खाडकै मांय सूं कांकरो काढ्यो अर बिचार करण ढूको कै ऊनी कपड़ो करावणो म्हारै सा'रै री वात कठै? घर मे नैना-मोटा छै टाबर, दोय मा-वाप अर एक लुगावड़ी—जिकी ई नित मांदी रैवै। आधी तिनखा तो दवाई-पाणी में लाग जावै। भगवान गुडावै जितै गाडो गुडकै है, छेवट एक दिन फूंक निकळ जासी। गरीबी रो नै ग्यान रो कितरो जोरदार सगपण है! मास्टर किसोरीलाल जोर सूं एक ऊनी निसास लीनी।

सेठ रिखबचन्द दुकान बड़ी कर नै घरै पधारता हा। तीस-पैंतीस बरस रा रूपाळा मादमी, ठिगणो डील, गोरा गुलल हुवै जेड़ा। ऊमर थोड़ी ही, पण जस घणो हो। तैसीलदार, बी०डी०म्रो० बानै जाणता हा। राज मे पासो हो। बारै बिना गांव री पंच-पंचायती अधूरी रैवती। घरै घणोई बोपार हालै हो। नुवी दुकान सरू कीनी ही। बहैरां री बो'रगत ही। सावू नै बीड़ियां री एजेन्सी न्यारी हालती ही, नै बीमा रो काम फेर न्यारो ई करता हा। सेठां रै चारू कानी सू नोट बरसता हा। काळी मिरचां मांय अरंडकाकड़ी रा बीज, पिसीजियोड़ी मिरचां माय राती (गेरू), हळदी माय मेट अर देसी घी मांय डाळडा भेळ-सेळ नै बेच'र सेठ आपरी मीठी बोली नै सुळताई सूं मिनखां माय देवता बाजता हा।

लाडजी कन्दोई री दुकान सूं सेठ सेठाणी ताणी नळाकन्द रो दूनो लेय'र आवता ई हा कै उणां मास्टर किसोरीलाल नै देख्यो। हाथ जोड़'र बोल्या, 'माट सा, राम-राम।'

मास्टर किसोरीलाल जाणै सरम सूं धरती मांय गाबड नांख दीनी । जुलम हुयो । इत्ता मोटा सेठ, अर उणनैं राम-राम करैं ! दोनूं हाथ जोड़, जाणैं माफी मांगतो हुवै ज्यूं घणी लुळताई सू बोल्यो—'निमस्कार सेठजी ।'

कौ सरदी रै बोळास सू अर कौ अपराध-भावना सू मास्टर रा दांत किटकिटावण ढूका । सिझ्या पांच-साढी पांच बज्यां रा सेठ भांग रा आचमन लेवता । साढी सात-आठ बज्यां तक ठंडाई रो रंग आवतो जद सेठा रो मिनखपणो जागतो । 'मकरधज' अर 'सिलाजीत' रैं सेवन सूं सेठां नैं कौ सरदी रो वैरो को लागतो हो नी, पण मास्टर किसोरीलाल नै दांत कटकटावता देख्या, जद बोल्या—'माट सा'ब, आज तो ठाड घणी पड़ै ?'

'हां सा ! माथै मावटो है । पून घणी बाजै है । बापड़ा ढांडा घणा मरैला ।'

'मिनख पछै किसा बाकी रैवैला ?' सेठा मुळक'र कैयो, 'म्हनै तो इसी ठाड मे बूढा-ठाडा जावता ई दीसै ।'

'टैम आया सगळां नै ई जावणो पड़ै सा, काई' बूढा अर काई' जवान ?' निरवाळै भाव सूं माटसा बोल्या—काई' ढांडा नैं काई' मिनख ? अर मिनख पछै किसा ढांडा सू चोखा है ?' कैवतां-कैवता माटसा एक'र फेर धूज्या ।

माटसा नै धूजता देख ठंडाई री तेरंग मे सेठ रिखबचन्द नै दयां आयगी । पचास रुपियां री उधारी उगरावण मारू सेठां किसनियै मैंणै नैं अंडो भरवायो हो कै सात दिन सक मंदा लकडी पी'र बापडै मेणकै नै मरणो पड्यो । पौर हळोतियां री वेळा गोमलै चोधरी रा बळद कुड़क कर'र सेठा मांपरो ब्याज उतराणियो हो । केई बार सेठ कैवता, 'माटसा घणी दया करै, जिकों पछै जावतो भिखारी हुवै । विणज करै, जिणनै दया कियां कठै पोसावै ?' पण आज माटसा नै देख सेठां नैं जाणै क्यूं' दया आयगी । बोल्या—'माटसा, थारै कोट कोनी ?'

माथो धुण'र मास्टर कैयो—'सा, अैस सिवड़ावणो तो हो, पण...............'
अबै बात कीकर पूरी करणी रैसी ? एक घणो जोगो, घणो लायकी हाळो, घणो हुसियार नैं घणो पिंडत, अर आपरै आप नैं पिछाणणियो मास्टर आपरी गरीबी री बात कीकर कैवै ? कीकर कैवै कै इतरो भण गुण नै ई वो एक कोट ई को करवा सकै नीं ! थोडो ठैर नैं खिणेक मे बात फेर नैं कैयो—'सा यूं है कै मनै तो घणी ठड लागै ई कोनी । नैं साची बात तो आ है कै कोट-फोट पैरणा मनैं तो सुघावै कोनी । परमातमा सगळी रितुआं आंरो असली आणंद लेवणनैं ई बणाई है । कुदरत रै बीच मे पड़ै जद मिनख री नुंकसाण हुवै । कुदरत कुदरत है । कुदरत रै खिलाफ चालण सूं ई मिनख रै रोग हुवै ।'

सबदा रै सौदागर मास्टर आ बात मूंडै सूं तो कै दीनी, पण सरीर इण कंणै रो साथ को दियो नी। मास्टर ऊभो-ऊभो धूजण लाग्यो नै उण आपरा दोनूं हाथ घणै जोर सूं छाती रै लगाय लीना। वाणी रै आळ मे मिनख आपरी कमजोरी छिपाय नै खुद नै कितरै इधकै भ्रम मे राखण रो जतन करै!

सेठ रिखबचन्द घणी दुनिया देखी ही। बै की बोल्या कोनी। होळैसी'क मुळक्या, जाणै छोटै टाबर नै तोतली बोली मे कूड़ बोलतो देख मा मुळकती हुवै। पछै झट मास्टर रा हाथ पकड़'र पाछा आपरै घरै लाया, अलमारी सूं एक जूनो, पण घणो चमकीलो धोबी सूं धुपाय रफू करायोड़ो कोट काढ्यो अर ना-ना करता मुळक'र माझाणी ई मास्टरजी नै पैराय दीनो।

घरै आय माट सा नैचै सूं कोट नै निरख्यो। माखण जैड़ी नरम, कूंळी रेसम जैड़ी ऊन। चमचमाट करतो कोट. सिगड़ी जैड़ो गरमास देवै। नुवै जैड़ो लागै, जाणै आज मोल लेय नै आया हुवै। अंडो फिट, जाणै आपरो माप देय नै सिवड़ायो हुवै। नुंवी फैसन री सीवण देख माट सा रै हियै री कळी-कळी खिलगी। जापानी कपड़ै रो कोट घणमोलो दीसतो हो। लुगाई रै हिवड़ै जैड़ी कूळी कोट री गरमास सूं माट सा रै चैरै माथै चमक बधगी। डोल मे फुरती बापरी। गरीबी सूं लड़तो, साकड़ास मे बंधतो हर मिनख पीड़ झेलण रो उपदेस देवै। होजड़ो भावै ई विरम-चारी! इत्ती दूर माट सा कस्ट खमण रा उपदेस भले देता होवो, पण कोट पैरया पछै बानैं ठा' पड़्यो कै अंडी कड़कड़ाट करती सरदी में कोट रो होवणो मिनख ताणी कितो जरूरी है।

रात रा नौ बज्या हा। सरदी में रात रा नौ कितरा मोड़ा बजै, कितरा दो'रा बजै, जिको तो कोई बापड़ो बोडो ईज बताय सकै। सदाई ज्यूं होवतो तो इत्ती ताळ में मास्टरजी कदै ई घरै पूगग्या होवता। पण आज घरै जावण री कोई उतावळ को ही नी। माह रै मावटै रो बायरो आज माट सा नै डरावण री हीमत को करी नीं। मीरस-पथरणै रो हेज आज मोळो परो पड़्यो हो! रोज तो इतरी ताळ में कदै ई आतडा छीजण ढूकता, पण आज जाणै भूख ई कठैई मूंडो लेय नै परी गई ही। आज तो उणा री एक ईज मनसा ही; उण मिनखा रै मामैं सूं निकळणो, जिका उणा नै सी मे धूजतो देख नै उणा रै उसूलां री मसखरिया करता हा।

सड़कै दस बजो सूं ले नै अबै सुदी बारै पेट मे धान रो दाणो को पूगो हो नी, पण बारै पान खावण री जबरी मन मे आई, जिको बै पनवाड़ी री दुकान कानी चाल्या। ट्यूबलाइट रै दमकतै उजास मे पनवाड़ो टापरै मे बीजळी रो चूल्हो सिलगाया पान लगावै हो। मसीन ज्यूं बीरा हाथ चालता हा, बो मिनख री

सकल देख नैं पान लगावण में पाटक हो। बस्ती रा सगळा ई ऊजळ गाभा ग्रर पतळ पेट ग्राळा राज रा नौकर—बाबू, मास्टर, पटवारी, ग्रामसेवक नैं छोटा-मोटा ग्रोदादार उणरी दुकान सूं ई पान खावता हा। ई दीपता-दीसता दीवा में तेल को हो नी, बो ग्राछी तरै जाणै हो। ग्रैडा ऊजळ-धोळिया घणा जणा उण री उधारी खाय लांवा नीसर्‌या हा। उणरी तीखी निजरां माय एकोएक ग्रादमी नागो दीसतो हो। होठा री गैरो लालो ग्रर फीकी मुळक रै नीचै कितरो काळजो दाभ्रै हो, चिंतावां री कितरी भट्टिया बळती ही—ई रहस रो उण नैं भलो विध बेरो हो।

मास्टर किसोरीलाल घणी वार पनवाड़ी कनैं जाय पेसी माय चूनो भर-वावता हा। मास्टर रै पतळ डील ग्रर लटूठै रै मैला गाभा कानी एक हीणी निजर नांख बंसी तमोळी ग्रोळमा-धोई मुळक सूं पेसी माय चूनो भर'र पेसी पाछी देवता थका मन में जाणै कैवतो—'माट सा, यूं कितराक दिन चालैला? चूनो किसो फोकट मे ई ग्रा जावै?' मनड़े री बात मूडै सूं भली मतो कैवीजो, पण चैं'रो गूंगो को रैवै नी।

बंसी तमोळी रै चैरै री गूंगी बोली मास्टर किसोरीलाल रै काना मे भोंपू हुवै ज्यूं बाजती। पण तो ई बो निसरमाई सूं नाड़की नीची नाख, फीकी मुळक बिखेर ग्राछ्या सूं माफी माग'र हाथ पसार नैं पैसी ले लेवतो, नैं हथेळी मे खासो सारो जरदो ले नैं चूनो लगावण लागतो।

'बंसी, एक मीठो पत्तो लगाइजै भाई'—ग्राज मास्टर किसोरीलाल थोड़ै उछाह सू कैयो, 'चूनो डबल, देसी जरदो, मुस्क-किमाम।'

बंसी रा हाथ मसीन हुवै ज्यूं चालण लाग्या, पण निजरा मास्टरजी रै चैरै मार्थं मंडगी। माटसा नैं चिलचिलाट करतो कोट पैर्‌या देख नैं पूछ्यो—'माटसा, कातो बीत्यो, मिगसर बीत्यो, पोह बीत्यो, नैं ग्रब तो माह रा ई गिण्या दिन रैया है। ग्रबार कोट सिवडावण री काई जची?' बीरै सुर सूं ग्रैड़ो लाग्यो, जाणै पूछ रैयो हुवै कै ग्रंस लोटरी ग्रापरै नांव री खुली है काई? इतरा दिन ताई तो सूटर ई को पैरता हा नी।

मास्टरजी खणेक थम्या। काई पड़ुत्तर देवै? पछै कैयो, जाणै कोरट मे कोई कदेई नई ग्रायोड़ो गवाह कूडी गवाई देवतो हुवै—'काई करा बंसी, म्हैं तो कदेई कोट सिवडावण नैं दियो हो, पण सत्यानास जाज्यो इण भीमनै दरजी रो, जिण ग्रबै मोय नैं दियो, जणै कै सियाळो ई बीत्यो परो है। नैं सिवडाई पण लीनी पूरा ई ...० रुपिया। नुवों पीमो ई ग्रोछो नई, पण कांई करां भाई, गरज बावळी होवै।' यू कैय'र मास्टरजी मुळकण लाग्या। काई ठा' इण मुळकण हेठै कित्तो मोटो विखो

छिपावण री कोसीस ही । नित-रोज छोरां नै 'सदा ई साच बोलणो चाईजै' रो उपदेस देवणिया माट सा अैंड़ो सफा कूड़ कियां बोल्या होसी । कांई ठा इण हंसग लारै बारै कूड बोलण सू कळपतै हिवड़ै री विलख रैयी हुवै । मुळक कैंडी मीठी, कैंडी मुघरी, कैड़ी मोवणी होवै ? पण उण रै लारै अतम री कितरी उकळास, कितरी दाझ, कितरो दरद होवै, स्रो कुण जाणै ?

'कोई बात नईं सा, अैंस नईं, तो ग्रांवतै ई काम ग्रासी'—बीड़ो बणा'र देवता वंसी बोलयो । पछै छालिया फेर देवता पूछ्यो—'कपड़ो कांई भाव रो होसी, सा ?'

कपड़ै रो भाव पूछता सुण'र मास्टरजी नै कंपकपी चढगी । मन मे बैम हुयो, कठैई इणनै ठा' तो कोनी कै कोट म्हारो कोनी, रिखबजी रो है । कदास भाव पूछ नै म्हारी तोहीन करणी चावै ! पण मुळक'र ग्रापरो ग्रग्यान छिपावण ताणी घणी मस्ती जतावता थका कैयो—"ग्रवै भाव कुण याद राखै बसी, चार मी'ना पैली लियोड़ो कपडो है । म्हारो एक खास दोस्त रैवै है दिल्ली मे, उण सागै मगवायोड़ो कपड़ो है । ग्रसल वूलन (ऊनी) है । फोरन (परदेस) रो माल है ।"

लाई बसी नै कांई ठा' कै जठै-जठै मिनख में खोट हुवै बठै-बठै मोटा सबदां री कारी दे-दे'र मिनख ग्रसलियत छिपावण री कितरी कोसीस करै । खुद नै झांसो देवै । सबदां रै सोनै रो झोळ दे पीतळ रै माल नै भरे बजारां चोडै-धाडै बेचै । काव्य, कळा, दरसन, सगळा ई थोथै सबदां री जडाऊ थूका-फजीती है ।

पान मूडै मे दाब, 'पीसा म्हारै नावै लिख दीजै' कैय'र मास्टरजी झट रवानै हुया । वारै झट जावण रै लारै सायद ग्रा भावना रैयी हुवै कै दो-चार पेर की सवाल पूछ्या तो पोल खुल जासी । कै कांई ठा' बंसी उदरत बाबत ई की कै देवै । कूड़ बोलण रै पिछतावै माह री सूखी बादळिया मिमना सूं उतार मास्टरजी रै चैरा माथै थरप दीनी ही । कीमती कोट पैरण रै उछाव भाखरां रै वा'ळै ज्यूं झट उतार दे दीनो हो । मन माय रो माथ फिटकारतो हो, 'जा रै हीणा, कमीण, थारै में ग्रर मंगतै मे कांई फरक है ?'

मिलणै मूं सगळा नै ई ग्राणंद ग्रावै, ग्रो जरूरी कोनी । भोळा मनां ग्रर सजग ग्रातमा ग्राळा नै देणो ई ग्राणंद देवै । कोट पैर'र मास्टरजी ग्रापरी डीठ में खुद नै ई बावना लाग रैया हा । मिनख रो मन जाणै कैंडी रसायण मू बण्योडो हुवै है । विचारां रो झटको लागतां पाण ग्राणद लुटावणियो इमरत वाळणियो विसझाळ बण जावै ।

घरा पूग्या जद माट सा मन री मार खाय सतवायरा हुवै ज्यूं घोड़ियै जंड़ी

मचली माय गुडग्या । मन रो सगळो उछाह मार्‌यो गयो हो ग्रर उछाह बिना जीवण मे बोझ टाळ काई बचै ? एकण पसवाडै पडवै मे पथारी किया टाबर पड़्या हा। बां रै माथै ग्रोढायोड़ी गूदड़्या बासै ही। लीर-झाण हुयोड़ो पछेवड़ो माथै ग्रोढ'र मनोरमा ऊठी। धणी नै नुवो कोट पैर्‌या देख'र रगतहीणै पीळै मूडै माथै खणेक मुळक खिंवी। ग्राख्या चमकाय बोली—'ग्रोय-होय बुढ़ापै मे सोकीन बणबा रो धसको लाग्यो है। थो'-थो', घणो ग्रालीसान कोट सिवड़ायो है'—पछै ग्रागळिया सूं कपडो देख नै कैयो—'कपड़ो जोरदार है, काई भाव रो होसी ?'

किसोरीलाल बुझ्योड़ी ग्राख्यां सू उणरै सामीं देख्यो। पछै होळै सीक ग्रणमणै भाव सू कैयो—'सस्तो ई है'। ग्रर कोट उतार'र खूटी माथै लटकाय दीनो।

'तबियत ठीक कोनी काई ? रोटी खाय लो।'

'भूख कोनी।'

'चाय बणाय दू ? ताव तो कोनी'—मनोरमा धणी रो पुणचो पकड़'र देख्यो, 'नई हुवै तो माथै री गोळी लेवो परी।'

किसोरीलाल नाड़की हिलाय'र ना दे दियो। मूडै सू हरफ ई कोनी बोल्यो।

धणी नै ग्रणूतो ई बेराजी जाण मनोरमा मूडो चढाय टाबरा भेळी सोयगी। दो-एक बळती निसासा लेय ग्रोढणै रो पल्लो ग्राख्या रै लगायो ग्रर रजाई सू मूडो ढक लीनो। छै टाबरां री मा रै इण सू बेसी उछाह कोनी रैवै।

□□

नीदरड़ी मे नक्की कोई न कोई जादू होवै जिको मिनख री सगळी चिन्तावा नै दूर कर सकै। रात खासी जेझ तक पसवाड़ो बदळ्यां पछै मास्टर सा नै धणी दो'री नीद ग्राई ही। दिनूगै ऊठ्या जद मन उछाह सूं भर्‌योड़ो हो। रात रा की छांटा ग्राई ही। ग्रोळा भी पड़्या होसी। सवार रा तीर जैड़ी तीखी हवा चालती ही, जाणै हेमाळो हाल्यो होवै। कोट पैर्‌या सूं मास्टर सा रै दांतां री' किटकिटाट ग्राधी हुई। हसता-बोलता खाय-पीय पोसाळ गया जद बै ई बै दीसै हा।

'ग्ररे किसोरीलालजी ! ग्राज तो भायला बीद हुवै ज्यूं लागै है।'

'प्यारा, ग्रैसे तो मास्टरपीस कपड़ो मोलायो है।'

'जिगर, काई भाव रो कपड़ो है ? डी० सी० एम० री वूलन-टैरेलिन दीसै।'

ग्ररै बगना, डी० सी० एम० रो कठै, ग्रो तो मफतलाल ग्रुप रो लागै है।'

'कठै सिवड़ायो किसोरीलालजी सा ? इणनै कैवै सिलाई !'

थो'थो'। थुथकारो नाखू भाईड़ा, काई ठा' निजर लाग जावै तो।'

'सासरे सूं आयो दीसै, इसरो मूंघो कपड़ो मोल लेवै जैड़ो तो तनै मा जण्यो ई कोनी ।'

पोसाळ रा सगळा ई साथी कोट री तारीफ करै हा । कपड़ो अैडो चमकै हो कै माथै आंख ई को टिकती ही नी । केई जोडी ललचाई निजरां कोट माथै टिकी ही । किसोरीलाल हस-हस नै भाव-ताव अर सिलाई रै सवालां रो जवाब देवतो हो । रात रो कसकतो-तड़पतो मन जाणै अंगेळां री मार सूं मरग्यो हो । जे थोड़ो-घणो जीवै ई हो तो मुधरी बातां अर बिखरती हंसी रै सामी उण बापड़ै रै झीणै सुर नै कुण सुणै ? बेळा रै आंतरै मे मन रा घाव भरण री अणूंती ई खमता हुवै ।

साम रा माट सा सेठ रिखबचन्द रै अठै टाबर पढ़ावण नै गया, जद कोट ठठायोड़ो हो । रिखबोजी रा तीन टाबर माट सा कनै भणता हा । बडोड़ो माधू सातवीं मे हो, छोटोड़ो अमियो तीजी मे । एक छोरी ही—हेमलता । बा पांचवी में भणती ही । टाबर माट सा रै मूंडै लाग्या हा, जिको गुरु-भाव की ओछो ई रैवतो हो । मास्टरजी नै देखतां पाण हेमलता कैयो —'ओ हो जी माट सा, आज तो कोट पैर नै पधार्‌या हो । इण मे तो आप घणा फूटरा दीसो हो सा ।'

अमियै कैयो, 'ओ तो पापाजी रो जूनोड़ो कोट दीसै, काईं सा' ?—फेरूं थोड़ो थम नै कैया—'रातै तो आठ ठंड मे धूजता हा सा । पापा घणो आछो काम कियो है, सा ।'

माट सा नै लाग्यो, जाणै किण ई वां नै सिरै बजार मे नागा कर दिया होवै । कोट रो कूळो कपड़ो लोह ज्यूं करड़ो पड़ र खुबण लाग्यो । बो सांकड़ो पड'र माट सा नै कसण लाग्यो । माट सा रो जीव घुटै, जाणै सास हूमैं नीसरै कै हूमैं नीसरै । उणा नै लाग्यो कै जे बा इण कोट नै झट सू उतार नै नईं नाख्यो तो बा रो जीव निकळ जावैलो । कोट सिकुड़तो जावै हो अर उण री कसण जोरदार होवती जावै ही, जाणै कोट नईं कोई राखस रो पंजो हुवै । बा नै लाग्यो, जाणै टावरा री निजरां में निरादर रो जै'र झरतो हुवै । घणी दौ'री बारै मूंडै सू बोली नीसरी — 'किताबां काढो ।'

टाबर मदा ई ज्यूं माट सा रै कैणै माथै कोई तवज्जै को दीनो नी । बस्तै मे हाथ हिलावती हेमलता कैयो—'बाई रे, कितरी ठंड पड़ै है । माधू भा, आज पापा घरे आवै जरै कैजो जिको मोटा भाई रो एक ऊनो पेंट भी माट सा नै देय देवै । देखो कोनी, लाई ठंडं मरै है ।'

किसोरीलाल नै लाग्यो जाणै टावरां उणां रै गाल माथै कस नै थप्पड मारी हुवै । बो गळगळो हुयग्यो । मूंडै मूं की बोल ई निकळ्यो कोनी । नित ज्यूं टावरां

नैं छाना रैंवण सारू धमकावण री उणरी हिम्मत कोय पड़ी नी। उण रैं हियैं रा किंवाड़ उघड़ग्या। मांयलो मन धिरकार देवण लाग्यो—'फिट तनै, हीणा, कमीण, थारैं अर मंगतैं में काईं फरक!'

बो मार खायोड़ै, बिसहीण, डोकरैं साप दाईं कूद अर उठ्यो। कोट उतार'र खूंटी माथै लटकायो अर टाबरा नैं कैयो—'काल सू म्हैं भणावण को आऊ नी, थारा पापा घरे आवैं जद कै दीजो।' अर तुरत घर सू बारैं निकळग्यो।

बारै सणसणाट करती उतराधी हवा बाजै ही। बो हवा सू सरीर बीधीज रैयो हो, पण माटसा नैं लाग्यो, जाणैं कोई जग जीत'र आय रैया हुवैं। जाणैं कोई घणमोली गमीज्योड़ी चीज पाछी परी लाधी हुवैं। सरीर ठंड सूं कांपै हो, पण माटसा रा हाथ छाती कानी को गया नी। तन-मन नैं धुजावण आळी हवा खुद रैं आपै में आवण सू बांनै फागण री हवा जैड़ी मुधरी-मीठी लागै ही, जाणैं संजीवण हुवै।

◘◘◘◘

खाजरू

जिका सहरा रा पढ़्या-लिख्या बाबू लोग पटवारी नैं अधभण्यो, थोड़ी तनखा आळो नौकर मानैं, बा रैं ग्यान मायं हसी आवणी वाजब है। कारण, पोथी रैं कल्पना-लोक सूं नेड़ा, अर जिन्दगी री कठण धरती सूं घणा आधा, बांरो नागैं साच सूं अर गावा री जिन्दगाणी सूं कोई वास्तो कोनी। पटवारी नैं बीघोड़ी वसूल करणियो राज रो मामूली नौकर समझणो भारी भूल री बात है। आप सड़का चोरस्तां मायं कचोड़ी-कोफता खावता-खावता देस रैं प्रधानमन्त्री री निन्दा सरेआम कर सको, पण अभाग सूं, गांव रो रैवणियो पटवारी री ईजत रैं खिलाफ ऊंडै ओरैं में ई एक हरफ परो काढ़ै तो बी नैं ठा' पड़ जावैं कै पटवारी री सत्ता प्रधानमन्त्री सूं इधकी अर सबळी है।

ये नित परभाते छापा बांचणिया देस रा नागरिक हो। ये विकेन्द्रीकरण अर जनतन्त्र री बात करो। गांधी-नेहरू री बात करो, देस-विदेस री बात करो। म्हारी बात थारैं समझ में को आवैं नी। हिन्दुस्तान रैं गांवां में सिवाय की नाम बदळण रैं, आजादी रो कोई खास फरक को पड़्यो नी, ओ जाणण सारू थांनै मंगळै रैबारी री कथा बांचणी जरूरी है।

थे, जाणूं, मगळै रैबारी नै जाणो कोनी। छै फुट लाम्बो, भरपूर डील, सांवळो रंग। पोतियै रैं नाव मायं लाल चीदी लपेट्योड़ी। कानां में सोनैं री मुरकियां। लो'रैं कुन्दै आळी तेल पियोड़ी डील जेड़ी सावळी ई डांग। कंवर तेजै रो गीत गाता, सीवाडै में एवड चरावती बेळा वो कुदरत रैं जिण रस'रो आणन्द लूटतो, काफी हाउस री कचाकच भर्‌योड़ी मेजां मायं हाकाबोय में खोखलै रसहित री बातां करतां खोपला मिनख उण आणन्द रैं तूमार नै को पूं'च सकै नी। आजादी कांई है, इण रो असली रूप अफसरां री झिड़कियां खाय माथो निवा कठपूतळी ज्यूं नाचणआळा सूं तो मंगळो इधको ई जाणैं।

साझ रो पौ'र। काळ बरस। पाणी रैं सुभीतैं सूं मंगळो घर-बार छोड़ आलाणी रैं सीवाड़ै में रैवैं। रात तारां री चूनड़ ओढ बैठी। मंगळै रोटी पोवण रैं रासैं मे पड़ण रैं भौ सूं सांढ़ा रो दूध पी डकार लीनी। जाळकी रैं आपैं चिलम

री धुंऔ छोड़तो सपनां गूंथै, जितरै थोड़ो आघो अन्धारै में एक आदमी रो झपको पड़्यो। मंगळै जोर सूं पूछ्यो—'कुण है रे ?'

'ओ तो हूं, बादरजी।'

म्हारै मारवाड़ में राजपूत आपरै नांव रै आगै खुद ई जीकारो लगावै।

'काई है ?'

'घरे पावणा आयोड़ा है। एक खाजरू चाईजै।"

'खाजरू रा तीन बीसी रुपिया लागसी।'

'रुपिया तो झाड़ रै लागै है रे, परा खंखेरजे।' बादरसिंघ डोढ़ में कह्यो।

'तो पछै झाड़ माथै ऊं ई खाजरू उतार लीजो।' मगळो किसो डरै हो।

'तूं किण रै सींवाड़ै में चारै-पावै है, नै काई ठा' है के नी ? नेग देणो पड़सी।' धमकी भर्यै सुरां में बादरसिंघ गाज्यो।

'सींवाड़ो तो धणियां, राज रो है, किणरै ई बाप रो कोनी। नेग लेसी, जिको राज लेसी।

'तूं जाणजे, राज म्हारो ईज है।

'अंड़ी बोफी बात सुण मंगळै नै हासी आयगी। मुळक'र हळको होय नै कह्यो—'जाण्यां दाता, किसो राज हुवै ?

'भगियां रे मूत रा, थारी आ मजाल !' किड़किड़ियां पीस बादरसिंघ कह्यो—'सरदारा रै सामो बोलै ! खाजरू दे कै कोनी दे ?'

सामो बोलण री काई बात, ठाकरां ! पीसा है तो खाजरू है, नईं तो काच में ई कोनी।'

'थारी आ मजाल रै फोगटा', बादरसिंघ बकरै रो कान पकड़'र गरतां कह्यो—'हे'र ओ खाजरू तो म्हैं ले'र जाऊं हूं, थारी करजे थाणै में रपट।'

आजाद हवा में रम्योड़ो मंगळो बादरसिंघ रो ओ जुलम किया सह सकतो ? हाथ में लट्ठ ले'र कह्यो, 'जिको किसो थारै बाप रो राज है रै ठेट ? कै तो बकरियै नै परो छोड़जे, नईं तो लुगाई-टाबरां ऊं परो जावैला।'

लकड़ी उगरावतां देख बादरसिंघ बकरै नै छोड दियो। उण नै ठा' हो, 'जंगळ जाट न छेड़िये, हाटां बीच किराड।' नीड जात, काईं ठा', परी दे सो ? पण तो ई एक मूगली गाळ काढतां कह्यो, 'कमीण री जात, सुणजे परो, इण खाजरू री ठोड पांच सौ रुपिया नी भरणा पड़ै, अर पांच मींनां माचो नीं पकड़ै तो म्हनै असल रजपूत रो बेटो मती कहजे।'

हांस'र उणनै चिड़ावतै थकै मंगळै कह्यो—'जा, जा ! देख ली तनै रजपूत री पूछ नैं। हमैं तो गरीब गुरबा माथै जुलम करण मे ई रजपूती बची है।' पछै खरा'र कह्यो—'जे असली रजपूत हुवतो तो डूमा ज्यूं खाजरू मागण नै नी आवतो, अण्टी मे पीसा ले नै आवतो, नैं जे परो ईज आयो हो, तो बकरियो माडो ले नैं जावतो, डाग सूं डर नै नी भाजतो।'

राइकै री-बात सू बादरसिंघ रै अेडी सू ले'र चोटी तांई झाळ ऊपडी। परगाव रैं फोगं मीट घर रैं गाव मे पाणी उतार दियो, मरणैं मे काई लारैं रह्यो ? हमैं करणो, तो कांई करणो !

✿✿

बडाई करण सू इधकी कळा अर बडाई सुणन सूं इधको रस स्रिस्टी में दूजो कोनी। बडाई रो नसो करा'र किण रो ई गळो बाढता की ताळ को लागैं नी। इण मुलक मे घणा ई मिनख इसा है जिणा रो रुजगार खुसामद करण लारैं ईज चालै। बादरसिंघ इसो ईज मिनख हो छुटभाई जिको करड़ो ठूंठ ! हाड़का रत्ती एक नमैं नी, नै खावा नै साझ-सवार दोनूं बेळा चाईजै। खेत घणाई काजू, पण सागड़ी किण नै कमा नैं देवैं ? जिको घर मे भुआजी फिरै। पण बारै ठाकरां री गुवाड़ी री इज्जत राखण नै चार पीसा चा'-पाणी रा ई खरच करणा पडै। दिना रा गाडा गुड़कावण अँलकारा सू पूरा हेत राखै अर करसा नै डरा-धमका, मार-कूट'र पावलै रा पीसा पड़ावै। सिल्ली लगावण मे, जाळ गूंथण में, लोच देवण मे अव्वल !

वात सूं बीध्योड़ो बादरसिंघ घरे आयो। परणावणी मे आयोड़ी आपरी सोनैं री बीटी काढ अडाणै राख बो'रै सूं पीसा लिया। ठेकै माथैं जाय दो बोतल दारू ले हवालै मे गयो। हवालदार कुन्नणसिंघ लालटेण री धीमी रोसनी मे गिरदावरी दरज कर रह्यो हो। बादरसिंघ नै देख आवकारो दियो—'कुण बादरजी, पधारो।'

'पधारणो तो आप सिरदारा रो है, म्हे तो फकत रावळी हाजरी बजावण हाजर हुया हां।'

कुन्नणसिंघ एक टूट्योडी हासी हास्यो। मन मे विचार्यो, 'अै आया जीव रा लैणात, बाढी आगळी मायै मूतणैं रैं ई काम रा नी, पण मायो चाटण नै हाजर।' बीड़ी रो बडल सामैं थामतै थकै कह्यो—'भले आया, लो सिळगावो !'

बादरसिंघ बंडल सूं बीड़ी काढ़ी नै होठां माथै राखतै थकै पूछ्यो—'याळ अरोग लियो काई सा ?'

'नई...........क्यू ?'

'की नई, म्हैं कह्यो, माथै थोड़ो ठाड़ो बाजै है, रावळी मनवार करता, बीजू मी कांई, थोड़ो दारू रो घूंटियो—वीजो....' बादरसिंघ होळै सी बात कान मे घाल'र दो ई बोतला सांमी जाजम माथै राख दी।

माथै मावठो हो। पवन चालै, जाणै हेम री जात। बोतल देख कुन्नणसिंघ नै आणै राम मिलग्यो। गिरदावरी रो रजिस्टर बन्द कर कह्यो—'आज आप इतरो खरचो.......'

बादरसिंघ नै जाणै मोको हाथ लाग्यो। बोतल नै दो गिलासा में ढाळ एक नै हवालदार रै सामी राखतै थकै कह्यो—'अै तो नसीब फोरा है सा, नीतर आप जैड़ा सिरदारा री आ तो कांई, इण सू सवाई हाजरी रोज बजावण री मन में रैवै। पण करां कांई, मियां तो चालै, पण टट्टू को चालै नी।'

दोनूं गिलासा हाथा मे ली। गिलासा सूं गिलासा टकरायी। जै माता जी री कीनी। बिचली आगळी सूं ले'र दारू रो छांटो देवी रै भोग रूप आभै कानी नांख्यो अर दोनूं जणां चाख लेणो सरू कियो।

पैली गिलास खाली कर पाछी गिलास भरी। सरीर मे नसै सूं थोड़ी फुरती बापरी। हळको रंग चढ्‌यो। बादर आपरी बात जारी करी—'आपरो बड़ो प्रताप, बड़ो नांव, बड़ो कुळ। करतार आप नै फुरसत सूं घड्‌या.... ।'

कुन्नणसिंघ रै हिवड़ै मे थोड़ो मीठास बापर्‌यो। मीठी लाज सूं बादर नै वारतां कह्यो—'म्हे तो किण जोग हा सा! रावळै चरणां रा चाकर''' राज रा छोटा सा '''।'

बात काट बीच में बादरसिंघ कह्यो—'खानदानी आदमी रा अै ईज लखण! आप जैड़ा जोगा, आप जैड़ा हुसियार मिनख हमैं कठै रह्या है सा? कांई आपरो सुभाव अर कांई आपरो इकबाल........जद ई सिरकार आपनै मैजिस्ट्रेट जितरा पावर दिया।' फेर थोड़ो थम, एक-एक आखर माथै जोर देय'र कह्यो—'ओ तो कळजुग है, सा 'पोपां बाई रै राज में माल मसखरा खाय।' नीतर किण री औकात, कै आप रो मुकाबलो करै''''''इसो असल खानदानी, दीनानाथ, काम-काज में माहिर, भण्यो-गुण्यो हुसियार........अठै दूर-दराज मे तो कांई जयपुर तक मे को मिलै नीं।'

एक तो दारू रो नसो, उण ऊपर बादर री कियोड़ी बडाई। कुन्नणसिंघ नै आभो टोपाळी जितरो निजर आयो। मन रै कल्पना पंछी पांखां खोली। तारां में जाणै चंदरमा, बन मे जाणै सिंघ, इण भांत ई मिनखा मे कुन्नणसिंघ।

इतरायोड़ै थकै कह्यो—'नाजोगां नाजरां रो जमानो है बादरजी, नईं तर जोधपुर दरबार खुद पोलो खेलता, जद म्हनै साथै राखता। वै रईस, बांरा जमाना को रह्या नी, जद म्हे आज, इण गांव मे....' गळगळो हुवण सूं कुन्नणसिंघ री बात कंठां मे अटक'र रहगी।

'ग्रां तो है ईज सा,' बादर बात माथै रग चढायो—'पण अठै रा मिनख करमहीण, अणसमझ, मिनख रो मोल ई को जाणै नी।' पछै थोडो थम'र कह्यो—'अर की पछै आप ई वडी ढील दे राखी है, सिरकार! आप देवपुरुस, गरीबां-गुरबां नै नी छेडो, जितरै तो ठीक, पण कमीणा लांठाई करै अर आप चुपचाप बैठ्या रैवो, जद गरीबां रो गुजारो कियां चालै?''

वारै डांफर वाजै ही। कुन्नणसिंघ बीड़ी सिलगाई धुंओ छोड, धुंअै सांमी देखतै थकै कह्यो—'नईं तो म्हारै राज मे कुण भगियां रो मूत आपरी कमीणाई चला सकै?'

'बीजो कुण?' बादर नै मोको हाथ लाध्यो। लटकै सूं हाथ हिलावतै कह्यो, ढेढ, कठै रो रैवासी, किण मींवाडै मे आय'र आपरा आखो दुनियां रा टाटा धारै। आप नै आय'र कदेई राम-राम ई को करी नी। आप, आज गांव-धणी जितरा पावर आळा हो........।'

बीच मे बात काट कुन्नणसिंघ कह्यो—'थे ई किण गरीब री बात करो, बादरजी, बापड़ो काळ रो मार्‌यो''''।'

बादरसिंघ मोको देख तुळी लगाई, 'आप कांई कैवो हो, सरकार! आ ई साद री बात, माथै मावठो देख, गोठ करण सारू म्हैं उण रै कनै बकरियो लेवा गयो, जद हजूर नै कांई अरज करूं, हमैं तो जीवणै नै ई धिरकार है, राजपूत री मा-बैन तक राइको सीट पूगग्यो।'

'कांई बात करो हो?'

'तो पछै कांई झूठ कैवूं हूं? म्हैं रावळो नांव लियो। म्हारै कोनी चाईजै, आपा रै पटवारीजी सा मगवावै, थारै हुवै जिका हूता पीसा परा लीजे। पण कुण गिनारै?' एकर बादर री निजरां मे जै'र चमकियो, पछै हिचवतै थकै कह्यो, 'अबै आपनै कांई अरज करूं सा! कैवै, पटवारी री इसी तिसी''''। हूं किसो पटवारै रो दियो खाऊं?'

बात सुण कुन्नणसिंघ रै मूडै रो नूर उतरग्यो।' पण विसवास नी हुयो। बादर री आख्यां में आंख्यां घाल'र पूछ्यो 'साचाणी?'

'सो, इण गळै हाथ सा !' विसवास दिरावता थकां बादरसिंघ कुन्नणसिंघ रै गळै हाथ लगायो।

पलक मारता पाण हुदा रो रंग बदळग्यो। दारू मे यूं ई बत्तो विचार करण री खमता को हुवै नी अर राजपूत रो लोही मा री गाळ सुण क्यूं नी ऊकळै। क्रोध मे दारू री गिलाम नै सामली भींत सू अफाळतै कुन्नणसिंघ कह्यो--'मगळियै री····! आज उणनै चीर'र थामडै मे मिरचा नई भरी तो असल राजपूत रो जायो नी !'

कुन्नणसिंघ री आख्यां मे लोही देख बादर धूजण लाग्यो। जे कठै ई साच रो ठा' पड़्यो, तो मगळै री जगा म्हारी खाल मे लोही भरीज जावैलो। अबै कुन्नणसिंघ नै कुण समझावै, उणनै पिछतावो होवण लाग्यो। एक पलक थम'र कह्यो, 'खानदानी राजपूत रो औ ई ज सुभाव हुवै हुकम, पण ···'

'पण-फण कुछ नी, हाथ मे धारियो लेवो, अर म्हारै सायै चालो, म्हारी मा-बैन तक पूगै। आज मंगळियै रो मायो वाढ लावूलो।'

धारियो लेवण री बात सुण बादरसिंघ रो मूतर छूट्यो। डाग-पटेलाई सू मिनखा नै बीरावणा एक बात है, हाथ सस्तर झालणो दूजी बात। डरतै-डरतै कह्यो--'हुकम'।

उण नै डरतो देख कुन्नणसिंघ कह्यो, 'बादरजी, धूजो क्यूं हो ? नामरद री ग्रोलाद हुवो, अर लट्ठ बाजे जद नाठ'र पाछा आवो, तो म्हारै सायै क्यानै आवो।' पछै रीस मे कड़कडी पील'र कह्यो, 'आखी ऊमर सिल्ली लगावण रो धन्धो ई ज कियो है। मरदा सायै को चालिमा नीं।'

'ना, हुकम। थारै हेमाळो हालै, आपरी अमीरी काया....म्हारी फिकर थे क्यानै करो, चालो।'

बादर पटवारी रै हाथ मे धारियो दियो, आप लट्ठ लियो अर नीची धूण घाल लारै-लारै चालण लाग्यो। आभै रै अझोअझ हिरण्या चमकै ही।

सीवाड़ै मे, जठै मगळो घोळो बणाय नै रैवतो हो, बा जगा हवालै सूं आधी कोस ही, पण दारू रै नसै अर मायली झाळ सूं मावठै री लल ई बानै फागण रै गुंवाळै बायरै जेड़ी लागी। पणो ठड सूं आभै रो चन्दरमा ई जाणै घोळो फक परो पड़्यो हो—बादर रै मूडै ज्यूं !

झूंपड़ै रै नेड़ै आवता ई कुन्नणसिंघ गाळ्यां काढतै कह्यो, 'कमीणा, थारी आ मजाल कै तूं म्हारा ताणो ना दे।'

मंगळो ग्रोठै कनै धूणी कर मांथै हीरावळ ग्रोढ पेट में पग घाल सूत्यो हो। हाक्रो सुण जझक नै जाग्यो ग्रर पूछ्यो, 'कुण हुवैला रै ?

'हुवैला थारो बाप' पटवारी जोर सूं बोल्यो।

'ग्रै तो ग्रापणै पटवारी जी है, गैला ! धणी है, जिको बाप बरोबर ईज है कै !' बादरसिंघ जाणै झगडो निवटावण रै ग्रन्दाज में बोल्यो।

कुन्नणसिंघ लगतो गाळां रा गोळा दागतो हो।

पटवारी रो नाव सुण मगळो डर्‌यो।

बादर कह्यो, 'लै, हमैं मालक ग्राया है, तो एक सावजोग बकरियो दे परो।'

मंगळै डरतै-डरतै कह्यो, 'बकरियो लेवण नै ग्राया है तो गाळ्यां क्यूं काढै !'

कुन्नणसिंघ किरोध मे कांपतो बकै—'थारी मा री....। थारै मर परो, ग्राज थारी खाल नी चीरूं, जितरै ग्रसल रजपूतण रो जायो मत कहजे। तूं म्हारी मा-बैनां तक जावै ! थारै मर परो....।'

'बकरो ले जावणो हुवै तो ले जावो, पण कूड़ा लांछण लगायां किसो बकरो मिलै !'

बादर—मंगळिया ! 'सामो बोलै !'

'सांमो बोल नै किसो मिनख मार्‌यो है ? गाळा कांढ़ण रो कूड़ो कळंक क्यूं लगावै !'

कुन्नणसिंघ—'कूडो कळंक है ?'

पोल खुलती जाण बादर रो जीव धड़कण लाग्यो। बीचं मे पड़'र कह्यो—'मंगळा, तूं गैला है। पटवारीजी धणी है, ग्राज इणां कनै मजिस्ट्रेट जितरा पावर है, इणा सामी मती बोल, नई तर थारा घरबार नीलाम करा देसी।'

रैबारी जात भोळी भली हुवो, उणा मे हीमत ग्रर ग्रभिमान री कमी को हुवै नी। कह्यो—'घर नीलाम करासी तो ग्रठै तो सदा ई डाग माथै डेरा रैवै। साची बात करतो किण सूं डरूं ?'

'डरा क्यूं नी रै गैला ! ग्रापां धन्धारथी ग्रादमी········।'

'जिको किमो इणां रो दियोडो खावा ?

कुन्नणसिंघ रै ग्रेडी सूं चोटी सुधी झाळ-झाळ छूटी। जे बार करै तो रैबारी बळी हो। ग्रै तो दो हा, इसा च्यारां नै ई धारै जिसो नी। लडाई कर माथा खोलावण मे सार हो कोनी। नसो की उतर्‌यो हो, थोड़ी समझ बापरी। कह्यो—'दियोड़ो नी खावै जिको परो देखूं।'

मायो हेठो कर दोनूं पाछा हवालै तक आया।

दूजै दिन कुम्भर्णसिंघ बादरसिंघ नै थाणै भेज्यो । पुलिस नै पटवारी जलम सूं ई भाई । दोनूं एक दूजै रै सगत-साथ सूं ई आपरो राज जमा सकै । थाणैदार नै सनेसो काई जाणै लाडू मिलग्यो । उरदी कस, एक सिपाही नै साथै ले'र ऊंट पिलाण मझ बोपारां झालाणो आय पूग्यो ।

गाव मे थाणैदार रो आवणो सुण भला रै घर मे जाणै स्यापो पड्यो । मरपञ्च, वार्डपञ्च, ग्रामपञ्च सगळा हवालै मे आया । रामा-स्यामा हुया । अमलपाणी री मनवारां होवण लागी । चा' री देगची चूलै चाढी । ग्वाडी मे तावडै ढोलियो ढाळ्यो । माथै पथरणो, चादर, मगळा ठाठ ! चिलम, बीड़िया, सिगरेटा रो धुंग्रो स इतरो उड़ै, जाणै कुंभार रो नेवा लाग्यो । पञ्चा-सरपञ्चा सू थाणैदार खोटी-खरी रा समाचार लिया । थोडा-घणा मिनखा नै बुलाय, डरा धमका पीसा पटकवाया । धीरै-धीरै कोई खास बात नी जाण माड्या बीखरी ।

एकान्त जाण पटवारी मंगळै रैबारी रो किस्सो बयान कियो । कागरेस राज सू गांव रा मिनख माथै बिना रा होवण लागग्या है " थाणैदार-पटवारी नै फोतरै बराबर ई नी गिणै, इण रो रोणो रोयो । इणारो की इलाज नई हुयो तो सरकारी अैलकारा रो गाव मे रैवणो मुसकल हो जासी, इण री चेतावणी दी अर अब इण मगळियै नै पाधरो नी कियो तो जीवणै मे धिरकार है, डूब नै मरणो पड़सी, इण भात तरै-तरै सू अरज की ।

सगळी हकीकत सुण थाणैदार तहकीकात सारू ऊंट माथै सवार मेल सीव माय सू मगळै नै बुलवायो । राजस्थान रा मिनख हाल बगाल रै मिनखा जिसा सभ्य नै खरा को हुया नी कै खोट खावणिया थाणादारा रै माथै भरे-बजार पगरखा मारै । सीवाड़ै मे जिका मिनख सिंघ सूं ई को डरै नी, बै ई पुलिस रै एक मामूली सिपाई सू डरै । थाणै रो नाव सुण मगळो दौड़तो-दौड़तो हवालै मे आयो । थाणैदार बावजी नै जैरामजी री करी ।

'काई नाव ?' थाणैदार पछ्यो ।

'मंगळो ।'

'जात ?'

'भ्रो तो बावजी, म्हैं रैबारी ।'

'दो माया आया है कांई ?'

'जिको तो बावजी, आप भण्यां-गुण्यां रै ई को ऊग्या नी, म्हारै कठै सूं ऊगै ?'

थाणेदार सोड़ा-लेमन री बोतल ज्यूं भरीज्योड़ो तो हो ईज, फूट्यो। कह्यो—'जवान घणी परी बूगी है, रे ! बेंत लगाओ ! रामसिंघ !'

'पण बावजी, कसूर तो बताओ'—मंगळो भरड़ायो।

'कसूर तो सजा देवण पैलां मजिस्ट्रेट बतासी। थाणेदार कसूर बतावै, अंड़ो थारा बडेरां ई सुण्यो हो ?'

रामसिंघ सिपाई बेंत ले मारणी सरू करी। रैंबारी घणो ई कूक्यो, घणी ई माफी मांगी, पण कुण सुणै ?

'रामसिंघ, साले के गिन-गिन कर लगाओ। पूरी सौ बेंत।' थाणेदार रौब जमावण हिन्दी में बोल्यो।

बादरसिंघ कह्यो—'अरे बावजी, रैंबारी बापड़ो परो मरसी !'

थाणेदार—'नई, साळो है ई इण लायक !'

बादर—'मंगळा, थाणेदार सा देवता मिनख है, इणां रा पग पकड़ नै माफी माग। औ तो भलै खानदान रा है, कोई कमीणो थाणेदार हुवतो, तो दो सौ बेंत मूं कम को लगावतो नी।'

भरड़ाटा करतै मंगळै थाणेदार रा पग झाल लिया।

थाणेदार अंडा पग झालणिया नै घणां नै देख्या हा। भोड़कै माथै ठोकर मार अळगो कियो।

बादर कह्यो—'बापडो गरीब है थाणेदार सा, बापड़ै नै माफ करो। छो', फूल री जागा पांखड़ी, आपनै ई राजी राखैलो। पछै मंगळै सामी देख कह्यो—'गैलो रा, कह कनी थाणेदार सा रो नारेळ। जे मुकदमे में परो फस्यो तो घर री लुगायां रा घाघरा ई परा बिकसी।'

मंगळो, वन रो भोळो पसु, बापड़ो कदेई इसै रासै में आयोड़ो नीं। काई बोलै ? जळजळती आंख्यां सू अठी-उठी देखै, जाणै हिड़क्यां कूतरा बिचै घिराणोड़ो गऊ।

बादरसिंघ मदद दी—'करम फूटोड़ा ! अठी-उठी नै काई देखै ? क्यूं बिना मोत मरै ? बोलै कनी दो हजार रुपिया थाणेदार सा रै नारेळ रा।'

मगळो तो जाणै मायंसूनो हुयग्यो ! दो हजार रुपिया कोई इयरी सीक बात है ? घर रो खूट्योड़ो को हो नी, ग्वाड़ी रो घर हो। कनै बीस-पच्चीस सांढा, सो-डेढ़ सो टाटा, अंडी सो एक लरड़ियां, पच्चीस-तीस हजार रै माल रो घणी हो, पण दो हजार नगद सुण बगनो हुयग्यो। यूं रुपिया कोई मारग मे पड्या है !

थाणेदार मंगळै नै चुप देख, कड़कड़ी पोल'र कह्यो—'म्हारै एक पोतो हराम ! म्हैं तो इण रा सळ ईज काढणा चावूं। साळै नै चोरणो नईं कियो तो काईं कियो !'

बादरसिंघ मंगळै नै फेर समझायो—'मंला, तैं भली म्हनै धाजरू नी दीनो हुवै तो ई आपा दोनूं पाड़ोसी गांव रा, भाया बरोबर !' पछै धीमैसीक समझावतां थकां बात कही—'अै राज रा अंलकार आप रै बाप रा ई कोनी। छो', संकट मिनख मे ईज पड़ै नै मिनख-मिनख रै काम आवै। जे थारै कनै पीसा पवार नईं हुवै, तो अै काना मामली मुरकियां दे परो। कमो-बेसी हुसी जिकी म्हैं पूरी परो करूं। अेडा पाच-पच्चीस परा छोडावा भाई। दे-दिया, हाथ-पग जोड़ ज्यूं-त्यूं इणा रो पाळो कर भाई, क्यूं विना मोत मरै ? अै पुलिस माळा तो जाणै खास राखस ईज हुवै। कठै ई ठोड़-कुठोड़ लागी, तो आखी ऊमर लुगाई रा सपना देखसी, मंला ! म्हैं कंवूं जिको थोड़ो मानै नीं परो।'

आपतकाल मे दो मीठा बोल मिनखा रै मना रै लाग गाडी री आंतरो परो मेटै। मंगळै नै लाग्यो, जाणै बादरसिंघ जेड़ो सैण दूजो एक ई कोनी। पण ओ विचार एक पलक सूं वत्तो को रह्यो नी। आ सगळी विपदा इण रै घाल्योड़ी ईज तो है। मंगळ कड़कड़ी भौंव उण सांमी देख्यो।

नीं मानतां देख, थाणेदार हुकम दियो—'रामसिंघ ! गाव भाभी नै साथै ले'र दूजै तरीकै सूं मनावो।' दूजै तरीकै रो मतलब पांताळिया नै खेंच, पीड़ पुगावणी। रामसिंघ मगळै नै मांमलै पसवाड़ै लेग्यो।

सीयाळै रो मूठो दिन। रामसिंघ मगळै नै हवालै रै ओरै मे लेग्यो जद तक दिन आथमग्यो हो। मार्यै ठाड़ परी पड़ी ही। थाणेदार साब रो इन्तजाम करणो बाकी हो। बादरसिंघ रै गळै ईज सगळो खरच। कनै कोडी एक नी। मांगै, तो किणरै कनै मागै ? बडी धाकमी हुई।

देवट बो'रै कनै जाय डाव्यैं हाथ घाल्यो—'थाणेदारा री मनवार करणी है, एक सौ रुपिया दो, सवारै पाछा परा देवां।'

बो'रै कह्यो—'रुपिया तो मागला ई आवणा है सा।'

'नेठो राखो, सब आ जावैला। आज तो ईजत रो सवाल है।' बो'रै कनै ठाकरां रा सैंत लिख्योड़ा हा, सो रुपियां सूं की वेमी फरक ई को पड़तो हो नी। मार्यै अहसान न्यारो। पचास रिपिया काट सामा करया—'हाल गल्ला मे इतरा ईज है।' रुपिया दे नै समझातैं थकै कह्यो—'कवर सा, अै काम थारै जोग कोनी।'

बादरसिंघ जमी घूण घाल ततैया मनाया।

मूगीवाड़ै रै इण जमानै मे पचास रुपिया री कांई गिणती ? दो बोतल दारू, दो-तीन पैकेट सिगरेट, एक बीडिया रो बडल, पाव डोढ पाव सेव-पापड़ी। जिनस ले'र बादरसिंघ हवालै मे पूग्यो।

प्यालिया चालणी सरू हुई। ग्राधै दिन रा थक्योडा हवालदार नै थाणैदार। पाच मिनख नै दो बोतल दारू, काईं पातो ग्रावै ' हुकुम हुयो—'पाच मिनखा मे इतरो सीक काई दारू लायो है रे, भोडा गोला ! दो बोतल फेर मंगाड़।'

हुकम तो हुयग्यो पण बोतला कठै सू मंगाड़णी ? बादर बात फोरण रै मिस कह्यो—'सूम है भोडो। इतरी मार खायी पण एक पीसै सारू ई को हाकरियो नी।'

'ग्रो तो काईं, इण रा बड़ेरा ई हांकरसी, पण तूं तो दारू मंगाड़, भोड़ा गोल !'

'म्हैं तो म्हारी सगती परमाणै भगती कीधी परी, म्हारै दाता।'

नसो ग्रोछो हुवै जद ग्रादमी ऊलफैलापो घणो करै। इच्छा जगाय नै नीं पूरै जद ग्रादमी नाग ज्यूं फुंफकारै। थाणेदार कह्यो, 'तो पछै थारै बापा नै बोलाया क्यू हा, बागरी ?'

बादरसिंघ ई कोई कमीण कोनी हो। ग्राख लाल कर'र कह्यो, 'मूंडो सभाळ'र बोलो, थाणैदार सा।'

बादर जिको दो बोतल दारू नी पा सकै, उणरी ग्रा मजाल कै थाणैदारां सामी बोलै ! थाणैदार थोडै नसै नै घणै किरोध मे पगरखो उतार, खांच'र बादर रै माथै मे मारतै थकै कह्यो—'ले, ग्रो संभाळ'र।'

कुन्नणसिंघ रो ई पारो चढ्यो—'जिको खूंट्योड़ो दो बोतल दारू नी पाय सकै, बो खाजरू राध'र कद गोठ कर सकै।' कनै डण्डो पड्यो हो, ले'र माथै मे ग्रफाळतै थकै कह्यो—'घर मे तेल न ताई, मरै गुलगुला ग्राई।'

बादरसिंघ माथो पकड़ नाठो। ग्राख्यां में मोतिया रा चोसरा बरसता थका। कुण जाणै, बै चोसरा मार री पीड़ रा हा कै मन रै पछतावै रा।

□□□□

बडो बाबू

घण्टा भर सूं मिनख बात दबायां बैठ्या रैया, पण यूं बैठ्यां कितरीक जेज सरतो ! मिनख मार्थं भूंड रा ठीकरा नी फोड़ै ! छेवट मायो नमाय धीमै-गळगळै सुर सूं कसूरगारै रै दाईं समरेस कैयो—'भाभी बड़ा बाबू दगो देग्या ।'

सांकड़ी सेरी । सीलन लाग्योड़ो कमरो । सुख रै भागे सपनै ज्यूं लेदरी लाग्योड़ी ईंटां रो चूरो बीखरै । कमरै री हवा जैड़ै घुट्योड़ै मन भाळी लाजवन्ती नीसरी । भाडो-डोढ़ी छिण्योड़ी चार हाडकियां मार्थं मढ्योड़ो चामड़ो । लीर-भाण हुयोड़ी मैलोड़ी साड़ी में भुरती जवानी बुढापै नै मात देवै । उण रै मूंडै सू दुख रो एक भाखर ई को निकळ्यो नी । भाय, एक मादो सैरको नाख, उण मचली रै भदावण कनै बैठगी, जिण मार्थं बड़ै बाबू री माटी पड़ी ही । छिण, जाणै पथरायग्या । पथरायोड़ी भाख्या सूं टकटकी बाय बेडोळ हुयोड़ी, लोथ निरखण लागी । बाचा सू एक भाखर नी ऊगरै । गूंगी फिलम ज्यूं सो' की चुपचाप !

लाजवन्ती री भा भणहोणी, लाजहोणी निरापेखी हरकत बठै बैठ्या डोकरां नैं दाय को भाई नीं, पण तुरत हुयोड़ी विधवा नै इण नाजक वेळा मे रीत-भात रा दो भाखर कुण समझावै ? दुखणोणी लाजवन्ती सारू एक हरफ ई काढण री किण री हीमत पड़ै ? लुगायां, जिकी उण कुवेळा मे हीमत बधावा सारू रोणै रो नाटक कर इधकी रोवावण भाई ही, लाजवन्ती री इण हरकत सूं दांतां आंगळी दायी—'बला, ऐड़ी लुगाई तो भाखी कमर मे ई को देखी नीं !'

एक पळक मे उणां रै सक-सूबाळै मन लाजवन्ती नैं पतिव्रत-धरम रै पुन्न-सिखर सूं घणो नीचो—ऊंडै खाडै में नांख दियो । वैसाख रै दोपारां री वेळा जिकी यूं ई विसामो लेती हालै, उण पळ तो जाणै पसरगी ही । टैम फिजूल जाती देख, गुप-चुप में निंदा रस री सिरजण सरू कियो, जिण मार्थं बां रो जलम सूं ई हक है ।

छिणां रा अै छोटा टुकड़ा भाखर हुयग्या । समैरै भार सूं दब्यै सुरां समरेस फेर कैयो 'भोजी, धीरज राखो ! बीतवा भाळी बात बीतगी ।'

'धीरज राखो ।' रो मतलब रोवो ! गुमसुम चुप्पी सूं इधको रोणो काईं

हुवै, जाणू समरेस नै इण रो ठा'कोनी ! मन री मांयली मार रै पुळ मे ग्राख्या रो पाणी सूख जावै । जमै, जाणै वरफ ! पीड री सघणता रो नरमास ई तो इण सू हुवै ! विरखा पैली री सूखी लाय नै देखी है, उण री खोळ में ई वादळा री नमी बसै । समरेस अै मायली बाता कठै समझै ?

'धीरज राखो ।' दो ग्राखरा रै गीलै बोल धीरज रो काचो वाध तोड़ दियो । ग्रोसर जाण, ग्रायोडी लुगायां उण रै ग्रोळी-दोळी होय लय-ताल समेत रोवण लागी । इण रोणै गळी-वास ग्राळा नै किणी री ई मोत री खबर दी । मा नै रोवती देख बापड़ा बणण रै फोडा सू ग्रजाण टावर, काई ठा' क्यू, रोवण लाग्या ! मिल्यो जिण रै वास्तै हसणो, ग्रर गमायो जिण रै वास्तै रोणो कितरो सहज है !

मिनख री ग्रणथिरता ग्रर मोत री ग्रजोरी बात रा तोतै दाई रट्या-पिट्या भावहीणा बोल कैय'र सैणा-समझणां नै माटी ठिकाणै पुगावण री चिन्ता हुई । एक ग्रधेड़ थकै कैयो—होणी ही जिसी हुई, लो, ग्रवै बाजरी काढो । पिण्ड वणावण नै ग्राटो लावो ।

'ग्राटो !' मरण पैली मिनख भले पाच दिन भूखो रैयो हुवै, ग्ररथी उठावण नै तो ग्राटो चाईजै ईज ।

'ग्राटो !' जिको जीवण री धुरी है !

'ग्राटो !' जिण सारू मिनख मसीन बण'र जीवै, ग्रर जिको जीवण री मसीन रो ईंधण है !

लाजवती रै रोणै जोर मार्यो । बडै बाबू रै जाणै सू ई इथको भो उण नै इतरा मिनखा मे इज्जत उघाडी होवण रो हो । कठै ग्राटो, जिको लाजवन्ती ला'र देवै ? बा कठै सूं ग्राटो लावण रो कैवै ?

समरेस उठ्यो । रसोईघर रै दो-चार खाली डब्बा रै मिस बडै बाबू रै घर री इज्जत उघाड'र बो ग्रापरै घर सूं ग्राटो ले ग्रायो ।

मिनखा नै ग्रचंभो हुयो । चख-चख सरू ! इतरा मोटा बडा बाबू, ग्रर घर में ग्राटो ई नई ! डब्बा रै ग्राटै री कमी मिनखा रै मन मे ई कमी लाय दी ।

काठ-खापण सारू चन्दो उगरावणो सरू हुयो । परदेस धरतो, नाक-कान रै सोनै रो तुम ई घर में नई । लाजवन्ती किणनै काई कैवै ? उणनै लाग्यो जाणै कमर माथै सूं गांठ खुल'र साडी रो गाभो मिरकग्यो हुवै । जाणै कोरवा री सभा में द्रोपदी ज्यू उणनै कोई नागी कर रैयो हुवै । लाज सूं [illegible] जे

कोई मरतो होवतो, तो लाजवन्ती कदेई मरणो होवती, इण में संका री गुंजाइस कठै ?

००

मसाणघाट जावण आळी सडक जाणै है कै मिनख रो मन कितरो छळ-छन्दो, कितरो अणथिर हुवै ! इण सड़क मायं जिका मिनख करम फोडता अर आमुवा रा परनाळा छोडता जावै, वै हसता-मुळकता पाछा आवै । इणी सडक मायं 'राम-नाम सत्त है' री रटण रै बीच मे झूठा-साचा मामला मुकदमा तैयार हुवै। करम रै थिर सुभाव अर ग्यान रै अणथिरास नै आ सडक नेडै सूं जाणै । मरण रो दुख कितरो खीण, कितरो घडी-पलक हाथ मुरळवा रो हुवै, आ सड़क आछी तरियां बता सकै । किणी री मौत मायं रोणो कितरो छळ, कितरो पाखण्ड, कितरो लोक-देखावो है, इण नै ठा' है। निन्दा-रस कितरो सुवाद, कितरो समरथ, कितरो सबळो है, इण सडक सू बेसी किण नै ई ठा' कोनी । वडै बाबू री अरथी नै जिको मिनख लोक-लाज सूं ले जा रैया हा, चन्दो दियोड़ै पावळा सगळा नै ई नागा कर दिया हा। अैड़ै गरीब, अैड़ै हीणै, नाचीज मिनख री मौत मायं मूंडै मायं दुख रो नकाब ई कुण राखै ! कुण अणूतो गळो फाड-फाड रोवण रो नाटक करै ! कुण 'राम नाम सत्त है' रा बोबाट करै !

मिनख थोड़ी ताळ ताई चुपचाप सीधी रै मारग चालता रैया, पण कितरीक जेज तक आदमी बिना काम चुप रैवै ? छेवट एक भलै मिनख कैयो—'इदमै नै सहू को सकयो नी, बापड़ै नै मरणो पड़्यो ।''

दूजै हामळ भरतै गावड हिलाई । थोडो थम सुर में बिसवास भर मूंडो बिगाड, हाथ फटकार, धीमै-धीमै, पण खराय-खराय नै कयो—'काळजो बज्जर होणो चाईजै जी, बज्जर ! गबन रो काम हळकै पोचै आदमी रो कोनी । मिनख वो, जिको हजारा डकार जावै नै मूंडै मायं सळ ईको पडै नी । राज री रकम डकारणियो जीव रो ठाकी चाईजै । औ काम कोई नाजरा रा है ?'

'सो टच सही बात !'

'आधा क्यूं जावो, इण माधूसिंह नै ई देखो बनी, एक दिन मे दस हजार रुपिया डकार गयो । आरा मसीन घाल ली, आटै री चक्की लगाय लो । मिनखां रै सेनो मायं आध में पम्पिंग सेट लगवाय लीना । आठ-दस हजार रुपिया री साख कमावण रो सलीको कर लियो । पदरा बरस मुकदमो लड्यो, जीत्यो अर पचास हजार रो एरियर राज कना सू वसूल कर्यो । इणनै कैवै गबन करणो ।' कंवणिया रै निलाट मायं जगजीतण रो तेज चमकण लाग्यो ।

'माधूमिध री वातां छोडो सा, उण तो आपरै सरीडै रैतां-रैतां घर री जीप गाड़ी खरीद लीनी ।'

'मिनख में उतरी हिम्मत नी हुवै, तो साप रै बिल मे हाथ नी घालणो चाईजै । मिलै जिण मे ई आपरो गुजारो करणो । लोग कैवे, जीभ रा बड़ा चटोरा हा !'

'नई तर कांई' ! पाव भरी रबडी रोज चट्ट कर जावता ।'

'पीसै नै पीसो गिणता, तो अै हवाल होवता ?'

मसाण री इण सडक माथै बड़ै बाबू रै चटोरपणै, अणूतै खरचै, रिसवत री आदत अर गबन री परम्परा री जितरी वातां हुई, बडै बाबू रै घर रो दाळद अर बां रै जीवण में लाग्योडा झटका री कथा भलै आ बात साबित नई करै, कैवणियां री आडी कल्पना अर कैवण रै लटकै सूं तो बो चसमदीठ गवाह ज्यूं ई लागतो ।

अै बातां समरेस रै काना में नी पडती हुवै अैडो बोळो तो समरेस ई को हो नी, पण अैडी कुवेळा मे इतरा सारा मिनखां सूं मगजपच्ची करणी उणनै दाय को आयी नी । हा, घणा भला बाजणिया पंडित अर खानदानी पीढी रो गरब करण आळा मिनख असल मे कितरा नीच, कितरा मगज बिना रा, कितरा हियै हीणां हुवै, फकत इणरो ठा' तो पड़ै ! इण वातचीत सूं उण री नसां में बिस रमण लाग्यो । इण बिस री गहराई रो वेग को, आळ रो अनुभव वै ई मिनख जाण सकै, ज्यारै मन मे ऊचा आदरसा माथै मर मिटण री मनसा संमूळी ई खूटी नी हुवै ।

समरेस अर बडे बाबू रो हेत गिणा जितरो जूनो कोनी । रामा-स्यामा रो सगपण ! पण बडै बाबू माथै लाग्योडो गबन रो दोस, पुलिस री कारवाई अर इण कारवाई सूं बडै बाबू री कुमोत जिण-जिण हालातां में हुई, समरेस उण हालातां रो निरापेखी देखणियो रैयो । बिलकुल चसमदीठ गवाह !

बडै बाबू री चिता दहण लागी, जद लपटां पर आंसू भरी आंख्यां सूं चितराम दीखण लाग्या--जाणै फिलम चालै ! सतरज रै खेल मे चाल चूक'र बडै बाबू डाळका नांखिया---'अबै मात खायग्यो, समरेस !' थोडी ताळ ठैर संरको नाख झीणै सुर में, जाणै हियै री ऊंडी गुफा सूं गूंज निकळती हुवै, वाणी फूटी---'आ जिन्दगी है नी, आ ई एक सतरज है । है नी, समरेस ! एक चाल चूकै तो सगळो खेलो बिखर जाय, सगळाई मो'रा खतम !'

हायी री 'सह' देवता समरेस अचम्भै सूं आख्यां फाड़ी ।

बड़ा बाबू सतरज रा नामी खिलाडी । पण जाणै क्यूं सतरंज रै खेल में बांकी किलाबन्दी कर'र, टेढी चाल चाल'र, खरोखरी बाजी जीतणियो, जिन्दगी मे टेढी चाल क्यूं नी चाल सकै, अर सीधी बाजी क्यूं नी जीत सकै, इण रहस रो भेद तो कोई मनोविग्यान रो जाणणहार ई खोल सकै ।

'सह बचा'र बड़ा बाबू बाल्या'—'जिन्दगी री घट-बध देखणी हुवै, आकस्मिकता देखणी हुवै, तो सतरज मे देखो। एक-एक पळ मे कितरो उतार-चढाव ! सबळो नित जीतै, सखरो नित जीतै, बुद्धि आळो नित जीतै, बळआळो नित जीतै, ओ कोई जरूरी कोनी । मौको आया, वजीर बापड़ो पड़्या रोवै, अर प्यादो मात कर देवै ! है कै नी ?

'पण बड़ा बाबू, जे बादसाह नै सावळ राख नै चाल चालै, बो.... ।'

समरेस री बात पूरी होवण सूं पैला ई बडै बाबू कयो—'आ ईज तो बात है, बो आपरी सेना रै घेराव मे ईंज परो फसै ।' पछै रहस सू सूखी हसी हस'र कैयो—'मिनख कैड़ो अजीब है, समरेस ! आपरी सेनावा रै बन्धण मे फस'र ज्यूं बादसाह मात खावै, आपरै सिद्धान्ता रै जाळ नै नी तोड़ण वास्तै आप खुद मर मिटै ।'

समरेस बगनो हुवै ज्यूं देखै । बात री गहराई नै को समझ सक्यो नीं । इण सूखी दार्सनिक बाता सू सतरज रो काई सम्बन्ध ! अणखणाट सू पूछ्यो—'आज बो'ळी इग्नै-बिग्नै री बातां करो हो बड़ा बाबू ! काई बात है, मैं तो की समझ्यो कोनी ।'

'बात की खास कोनी । सीधी-सादी बात ! जमानै सू तानो नी बैठै जिण री बात । हा'र ना रै बैर ! इण सू इधकी काई बात हुवै ।

'...........................' बगनै ज्यूं समरेस मूढो ताकै ।

थे समझ्या कोनी ! एक फर्म जाळी बिल अर रसीदा देवण नै त्यार है । बीस हजार रा फैंच सेदर खरीदण री सैंक्सन आयोड़ी है । माल बाटणो है । सा'ब कैवै, माल आयो दरज करो, अर खरच माड देस्या, हूं सही कर देवूं । दो हजार थारा ।' बडै बाबू लांबो सीरको नाख्यो—'सूरदास बापड़ै ठीक ईज कैयो है समरेस ? 'माधो मन नाही दस-बीम ।' म्हारो मन मानै कोनी, अर सा'ब मूं माडाणी री तणरी है........चवदै-पनरै हजार रुपिया रै सपना मायै पाणी फिरै....' समरेस पयरीजग्यां ।

बड़ा बाबू चुप ! सांस चालै जिकी साफ सुणीजै । लम्बो सास अर फीकी हूंसी ! फीकी हूंसी सूं इधकी मन री पीड़ा नै कुण उजाळ सकै !

कोई नवी बात हुवै, अंडो की को हो नी। राज रा सगळा दफ्तरां में कमी-बेसी म्रोईज होवतो रंवै। इण जुग में वैवती गंगा में न्हाय'र पुन्न नी लूटै बो बेवकूफ। लोक में जस रो भागी वो जिको समै रै बा'ळै में बह जाय। पण बड़े बाबू सू अै सगळी बाता कैवण री हीमत किण में ?

सगळो किस्सो सुण बड़े बाबू रै मन रो घुटणो भलै म्रोछो नी पड़्यो हुवै, समरेस रो मन जाणै घुटवा लाग्यो। मन पम्पाळ में पड़्यो—रेसम कितरो चमकदार हुवै ? कितरो कूळो, कितरो सुवाळो भ्रर कितरो दिढ ! पण रेसम रो कीड़ो एकर जद भ्रापरै च्यारूमेर तांतो लपेटणो सरू करै, पछै मर्‌या ई पिण्ड छूटै। मिनख री मूरख जात, उण बळिदान नै नी, रेसम नै पवित्र मानै। ठीक भ्रा ईज गत भ्रादर्स री हुवै। दीखणै मे भ्रादर्स कितरा सोवणा, कितरा मोवणा, कितरा पवित्र हुवै ! पण वै ई मनस्वियां री मोत रा कारण बणै। उण मोत नै कुण पूछै ! दुनिया तो भ्रा री जे वोलै जिका मिनखां रै माथा माथै पग देय'र भ्रागै चढै, जीतै।

चुपचाप किणरी ई दरद री बात सुणण सू पीड़ रो उपाय की कोरो, की पिलपिलो पड़ै। समरेस नै भ्रापरी विपदा रो भागीदार जाण बड़ै बाबू भ्रोजूं कैयो, 'मनै सस्पेंड करण रा कारण सोजणा को पड़ै नी। हुजार मिस मिल जासी। ठीक ईज होसी। इण दुख मे थोड़ो सावरियै रो भजन हो जासी। फाकाकसी हुसी तो टाबर-छोरा ई कार को छोडै नी, राम नै याद करसी।' पछै चाणचक भोत भावुक हो'र समरेस रो हाथ पकड़ कैयो—'पण अै बातां कितरा दिन चालैली समरेस ? अै मिनख, जिका ससार भर रो माल लूट'र देस री नींवा खोखळी करै, जन-हित रो जमन विघूसै, भ्रारी भ्रा बाळणजोगी भूख कद मिटसी ?'

समरेस चितराम मडियो हुवै ज्यूं चुप ! कांई बोलै !

मन मे मीठो कल्पना-चितराम भ्रायो। बडा बाबू रोय नी सकै, इण मजबूरी सू हस्या। मूंई माथला सळ मन री गैरी उदासी री झाकी देवता हा। कैयो, 'सेवट थकरै री मा कित्ता दिन खैर मनासी ? राष्ट्र-जात रो विघूस करणिया नै देस री जुवा पगती माफ को करै नी समरेस, माफ को करै नी। वारी फौत खेलसी। हत्या होसी। देस रै जवाना री ताकत जिण दिन जागसी, उण दिन पिरळै होसी। पण, पण वो दिन कद भ्रासी समरेस !'

बड़े बाबू रै सवाल रो समरेस कनै पड़ूत्तर कठै ?

वातावरण रो बोझ सहणजोग को रंयो नी तो समरेस कैयो, 'ठीक बड़ा बाबू, म्हैं चालूं !'

चिता बळ री ही ! चटाख-चटाख कर हाडक्यां बीखरै। समरेस री आंख्यां मे आंसू। फिलम पाछी चालू हुई।

दूजै दिन बडा बाबू आफिस पूग्या जद कैस बुक अर वाउचर फाइल दोनूं ई गायब। गबन रो दोस मंढ्यो। घण्टा भर में ई सस्पेंसन। बडा बाबू हवालात रै मांय धरीज्या। पूरै सहर मे सुणो जठै आ ई चख-चख।

सात दिन लगती भागादौड कर, पीसो-टक्को होम, समरेस बडै बाबू नै हवालात सू छुडवाया, जद कळक नै सहण मे असजोगै जर्जर सरीर रै पीजरै नै तोड बड़ा बाबू रै प्राणां रो पंछी ई उडग्यो—फुरै।

□□□□

लाल बत्ती

उणरी साइकल रै लारलै पैडा में हवा की ओछी ही अर वो दो'रो-दो'रो साइकल चलाय रह्यो हो। उण विचार्‌यो कै साइकल मे हवा ओछी होया ज्यूं साइकल दो'री चालै, ज्यूं ईज जीवण मे पीसो नी होवै तो जीवण रो गाडो दो'रो गुडै। बजण नै तो साढी दस ईज बज्या हा, पण माथै ऊपर जेठ महीना रो तडतड़तो तावडो हो अर हवा सूं पल-पल माथै पसीनो चव'र चस्मा रै काच माथै चिप रह्यो हो, अर उणनै साइकल सू उतर'र घडी-घडी चस्मा पर सू पसीनो पूछणो पड़तो हो। माथै दफ्तर में जेम सू जावण री चिन्ता न्यारी ई सवाई ही। अफसर हाजरी रजिस्टर आपरै कमरै मे मगवाय लियो होसी तो गई एक दिन री छुट्टी तो। अफसर खुद साळा मरजी होवै जद ई आवो, मातहत वेळासर पूगणा ईज चाईजै। दफ्तर मे पूग'र भली आखै दिन गप्पा ईज मारो, कै एकर पूग'र बीच में भलाईं गोत ईज मलाओ, पण पूगो टैम सर। अबै टैम सर कियां पूगीजै। आ साइकल तो बीच मे ईज ठै बोलती दीसै। उणनै लागै कै उणरै खिलाफ जितरा जाळ गूथ राख्या है, उण जाळां मे साइकल ई एक जाळ है। दो मिनट ई मोड़ो हुवै तो अफसर तो अफसर, बड़ो बाबू ई ग्यारी-ग्यारी आंख्या सू घूर'र पूछण लागै—'गुप्ताजी, आज इतरा मोड़ा ?'

भलो आदमी जबान सूं मानलो भी चाहै तो कांई होवै ? मोडो आयो तो म्हनै किसो ठा' कोनी कै आज मोडो हुयो है, अर देर सू आवणो बुरी बात है। पण जो वै गम करी जावै, तो उणारो रोब गालिब कियां रैवै ? म्हूं नीची धूण घाल'र कैवूं—हा, साइकल मे हवा कम ही।

म्हारै में आ नीची धूण घालण री आदत ईज खोटी है। पण कोई उपाय कोनी। हीजडो भाखै ई ब्रह्मचारी है। म्हानै हर रोज, हर वेळा, हर एक रै सामी नीची धूणां घालणीज पड़ै। बड़ो बाबू कांई ठा' किण जमाना रो रटियो-पिटियो बासी वाक्य बोलै—कै तो थे साइकल बदळो अर कै म्हूं बाबू बदळूं। म्हानै ठा' है कै ज्यूं साइकल बदळणी म्हारै रहारै री बात कोनी, ज्यूं ईज बाबू बदळणा पण उणरै रहारै री बात कोनी। पण तो ई म्हूं नीची धूण घाल'र सुणूं।
हिसाब करण नै आवै, मकान मालक भाडो लेवण नै आवै, दूध वाळो पी

नै ग्रावै, म्हारै तो एक ईज बात, म्हूं नीची धूण घाल दूं। नीची धूण घालण में एक मजो है, बै कांई ठा' कांई-कांई कै'र रै जावै, वा री भड़ांस निकळ जावै, ग्रर म्हनै की ठा' ई को पड़ै नी। दफ्तर सूं घर गया लुगाई पूछै—'ग्राज साग को लाया नी ?'

म्हूं चुपचाप नीची धूण घाल लूं।

टाबर पूछै—'पापा, म्हारी किताब लाया ?'

म्हूं नीची धूण घाल लूं।

नीची धूण घालण में किसो मजो है। पण तो ई ग्रापो ग्राप रा भाग है। नेता नीची धूण घाल'र कुरसिया माथै बैठा राज करै ग्रर म्हारो नीची धूण घालियां मन बळै। नीची धूण घालिया पण ग्रो कैवण मे खासी हीमत चाईजै कै बाबू बदळ दो, सा।' ग्रर ग्रो पण कैवण नै खासी हीमत चाईजै कै कोई सी ई व्यवस्था ग्रापरै नोकरा नै इतरा पीसा को देवै नी कै वै जरूरत मुजब बो'रा रो हिसाब चुकाय सकै, कै वेळासर टाबरा री पोथिया मोलाय सकै, कै सफा खराब होया साइकल रो टायर-ट्यूब बदळवाय सकै। इण सारू फकत पिलपिलो मूंडो कर'र इतरो ईज कै सकूं—'काल सूं वेळासर ग्रावूंला, सा।'

ऐस पैली तारीख नै किणी साथी नै ढोफो बणाय'र की पीसड़ा उधार ले'र इण साइकलड़ी रा टायर-ट्यूब बदळवाय देवूं तो ईज ठीक रैवै। उणनै गरमी जेझ ग्रर खटाळा साइकल माथै जूझळ ग्राय री ही। इण जूझळ मे वो खच्चू-खच्चू तेजी सूं पैडल मार रयो हो. कै चोराया री लाल बत्ती दीसगी ग्रर उणनै ब्रेक मार'र एक टागड़ी लटकाय ऊभो रैवणो पड़्यो। उण लारै ग्रावणियां एक ग्राघ साथारा नै फुरती स लाल बत्ती नै बिना गिनारिया ई पैडल मार'र चौरावो पार करता देखिया। उणनै ग्रफसोस होयो कै वो ई फटा-फट दो पैडल मार'र चौरावो पार क्यूं को कर लियो नी। पण झट देसी उणनै ग्रापरै पगा री दुबली नसा ग्रर साइकल रै टक्करा-गाडी होवण रो विचार ग्रायो ग्रर उणनै बोध होयो कै लोग किसा-किसा नालायक होवै जिको कायदा री परवा ईज को राखै नी ग्रर ग्रापरी धुन ई मे दौड़ता रैवै। बै झटकै सूं ग्रापरा ग्रागला साथिया सूं ई ग्रागै पूग जावै। पछै उणनै एकदम विचार ग्रायो कै हरेक ठौड़ यो यूं ईज ग्रधर में लटकतो ऊभो रैवै है, ग्रर उण रा लारला साथी उण सूं ग्रागै पूग जावै। पैलम-पैल किणी उणनै खबर दी ही कै विभाग मे की बाबुग्रा री तरक्की होवण वाळी है ग्रर सीनियरटी रै कारण उणरो नाम सै सूं ऊपर है। लोग-बाग मीठ्रेठ खबरा लावता रया, ग्रर उणनै ढफोळ बणा'र उण सूं मिठाया खावता रया। वो उथक'र

अधर में लटक गयो। खासा दिनां पछै जद तरक्की री पानड़ी नीकळी, जद उण देखियो कै उण पानडी मांय मूं उणरो नाम गायब है। अर एक सैं सूं नवैं (जूनियर) धाबू नैं तरक्की मिलगी है। उण नैं खूब अचम्भो हुयो अर वो इण वात रो रहस पूछण नैं बड़ा सा'ब कनैं पूगो जद उणनैं ठा पड़ियो कै ऐ तरक्किया मैंरिट रैं आधार माथैं हुई है अर सा'ब नैं अफसोस है कैं वो मेरिट मे को आय सक्यो नी। उणनैं भ्रो सुण'र वडो अचम्भो होयो कैं बिना किणी इम्तियान रैं ई अफसरा नैं मैंरिट रो काई ठा' पडें ! जद इण बावत पूछ्यो तद उणरा साथिया हस'र कह्यो— 'बावळा, भ्रो आदमी सा'ब रैं जात रो है।' जद उणरैं समझ मे आयो हो कैं मैंरिट रो मतलब है जात।

सूरज रैं चिलकै मूं बच'र उण पाछो बत्ती कानी देखियो। हाल तक बत्ती लाल ही। झटकै सू उणरैं दिमाग मे एक रूपक ऊग्यो। भ्रो जमारो एक सड़क है जिको सुख रैं मुकाम तक जावैं। सुख रैं मुकाम मे दौलत है, गोरडिया है, नसो है। बठै दुख-दुवाल नाम री कोई चीज ई कोनी। सगळा मिनख आखी ऊमर आपो-आप रैं पगा सू चाल'र, कैं साइकलां माथैं, कैं मोटरा सू उण मुकाम कानी दौड़ रह्या है। वा रो खानदान, वा री जात, वा रा सगा-सम्बन्धी, वा रो पीसो, वां रो ग्यान, ऐ सगळी सवारिया है। मक्कारी, कपट अर घूंस ई खासी चोखी सवारिया है। जिणा रैं कनैं तेज चालण वाळी सवारिया है वैं सुख रैं मुकाम तक झट पूगैं। राज रा कायदा-कानून ठिकाणैं-ठिकाणैं लागोड़ी लाल बत्तिया है। जिको आ बत्तिया री गिनार ई को करैं नी, वो सुख रैं मुकाम तक झट पूगैं। जिको इण लाल बत्तिया री गिनार करैं वो लारैं रै जावैं। जिको लाल बत्ती री गिनार किया बिनां एक'र आगैं बध जावैं, उणनैं नावडणो घणो दो'रो है। सगळी ई चिन्तावा रैं बीच उणरैं होठा माथैं एक खोणी मुळक बापरी—एक दारसनिक मुळक! जाणैं उण ई रिसिया ज्यूं कोई मंतर देखियो है, स्रिस्टि रैं एक साच नैं भ्रोळखियो है। सनातन परम्परा रैं रिसी कै बुद्ध कै महावीर रैं ज्यूं वो ई एक साचो ग्यानी बण गयो है। आगलो जमानो होवतो तो उणनैं आगैं की करण री दरकार ई को ही नी। बो मत्तै ई सिद्ध महातमा बण जावतो अर मगध, बंग, कलिंग अर कोसल रा बड़ा-बड़ा राजा-राजवी बड़ा-बड़ा नजराणा नजर करता। उणरी हाजरी मे हाजर रैंवता। भ्रो तो खैर, वो जमानो को रह्यो नी पण इण जमाना में ई इतरैं बडै सांच नैं जाणणो कोई मामूली वात है? पछै उण आपरैं इण तुरत जलमियैं दरसण रैं आधार माथैं ई विचारणो सरू कियो। नईं, उण जमानैं मे ई म्हारी कदर को होवती नी क्यू कैं उण जमानैं मे ई कदर होवण वास्तैं कोई राजा कैं राजकुमार होवणो जरूरी हो। कोई साक्य कैं लिच्छवी नी होवतो तो उण जमानैं मे ई कदर

को होवती नी। कारण कै सत्ता, खानदान अर जात, ऐ सैं सू तेज चालण वाळी सवारियां है, जिणां मे बैठ'र आराम सूं सुख रै मुकाम तक पूगीज सकै। पछै उणनै याद आयो कै रिसी जिण सत नैं देखैं बो कोई एक पलक रो सत को होवैं नी। बो तो अखूट सत होवै। सगळै काळ, सगळै मुलका, सगळै मिनखां माथैं उण रो एक सिरखो असर होवैं। इण सत नैं जांचण सारू उण आपरैं ओळी-दोळी रैं बडै-बडै मिनखां कानी निजर नाखी। बैं सुख रै मुकाम तक पूग्योड़ा है, पण क्यू ? उण झट्ट देसी देखियो कै बडा-बडा नेता इण वास्तैं बडा है कै बैं बामण है, कै जाट है, कै भगी है, कै मुसळमान है। बैं सगळा जिणा रा नाम अर चोखटा रात-दिन अखबारां में छपैं अर जिका जात कै धरम-निरपेख रा बध-बध अर भासण देवैं, जिका किणी ई पारटी रा अध्यक्ष है, कै मन्तरी है, जिणा री घणी-घणी पौंच है, वा सैं' क्यूं है ? वां रा पद, वां री ईजत, वां री पैंठ क्यू है ? उणनै साफ उथळो सूझियो। फकत इण सारू कै बैं किणी न किणी इसी जात रा है जिणा रा वोट घणा हुवैं। पछै उण वा मिनखां नैं देखिया जिका अफसर है। जिणा रै कारां अर बंगला है। जिणा री परणेतणा तो पाडा जिसी है, पण गोरी–फूटरी लुगायां जिणा रै घेरा घालियां राखै। बैं ई अफसर क्यूं है ? दूजोड़ा अफसर क्यू कोनी ? वो खुद अफसर क्यूं कोनी ? उण आपरैं नवैं सत नैं फीता सू नापियो। सत तो सत ईज है। बैं अफसर इण वास्तै है कै वैं एक खास खानदान रा है, कै एक खास जात रा। कै तो उणारै बाप कनैं पीसा री बोळास ही, अर कै उणारी रिस्तैदारियां ऊंची है। थोड़ा-घणा जिका इण नाप माथैं खरा को ऊतरैं नी, बैं वैं मक्कार है, जिका खुद हाथ जोडिया गिडगिडावता रैवै अर आपरी लुगायां नैं दूजां री सेजा माथैं पोढ़ण भेजै। बैं सगळा, जिका नियम कायदा री लाल-बत्ती री परवा को करैं नी, सुख रैं मुकाम कानी झपाटैं सू दौड़ रह्या है। अर बाकी सगळा, जिका एक खास खानदान रा कोनी जिका एक खास जात रा कोनी, जिणा रा मा-बाप पीसा वाळा कोनी, उण सगळा रैं वास्तैं सगळी ठौड़ बाकायदा लाल बत्ती लागोड़ी है।

लटकता-लटकता उणरो मन खासो थाक गयो हो, लाल बत्ती लागोड़ी उणरी जिन्दगी रैं ज्यूं ईज। उण देखियो कै उणरैं आसवाड़ै-पसवाड़ै खासी भीड़ भेळी होयगी है—इसी भीड़, जिकी मन मे भरोसो लिया चुपचाप लाल बत्ती रैं बुझण री बाट जो सकै, लाल बत्ती नैं गिनारिया बिना ई चोरस्तो पार को कर सकैं नी।

बो दुखी होयो। आ लाल बत्ती तो सायद अबार बुझ जासी, पण वा लाल बत्ती..............वा लाल बत्ती ?

वा लाल बत्ती सायद कदेई को बुझै नी, जठै तक कै म्हे आ खम्भा नैं ई नीं उखाड़ देवां। ००००

सगपण

घर मे वळ'र म्हे वैन-बनेई नै पगेलागणो कियो। भाणूं रै माथै हाथ फेरियो ग्रर भाणजी सामी मुळक'र देखियो। पछै साळ मे विछ्योड़े मांचै माथै जाय'र वैठ गयो। परदा माथै पूतळी चालै ज्यूं ऐ सगळी बातां फकत एक देखावो ही। मन मे प्रसल ललक की ही कोनी। भाई-बैन रै रिस्ता रा गीत जद-कद ई म्हैं सुणू, म्हनै लागै कै उण गीतेरण रै कोई भाई को हुवैला नी। जो उणरै भाई होवतो तो सायद वा ऐड़ा मुधरा गीत को गाय सकती ही नी। फेर बिचार ग्रायो कै लोग कित्तै यूटोपिया मे जीवता हा ? खून सू रिस्तो मानता। ग्रर ऐ रिस्ता ग्राज लग चालिया ई जावै—ज्यू जीव बिना री पूतळी ! फकत एक देखावो। म्हैं सोचण लागो, लोग कियां इसा रिस्तां नै निभावै ?

सिगडी मे कोई काचो कोयलो हो, जिको धुकवो हो, म्हारी जिन्दगी रै ज्यू। धुग्रै सू बैन री ग्रांख्यां भरीजगी ही। यू ई म्हैं बैन नै मुळकतां सायद ई कदैई देखी हुवै ! भाटा रै घरां मे रै-रै'र उणरो चैरो ई भाटा जिसो होय गयो हो—सपाट !

'ग्राव .... . ।' उण म्हनै देखियो ग्रर ग्रांख्यां नीची कर ली। पछै म्हारै कानो की संकेत सूं देख'र साग रो तपेलो नीचै राखियो। सिगडी मायं चा रो पाणी चाढियो। भाणजा नै पावला रा पीसा दे'र दूध लेवण सारू दोड़ायो। पछै म्हारै कनै ग्राय'र कह्यो—'घरे तो सगळा राजी-खुसी है ?'

म्हे हाकारा मे माथो हिलायो।

'था म्होटोड़ी छोकरी कितरमी मे भणे है ? छट्ठी मे होवैला ! [illegible] मे है ? छोटोड़ो छोरो हमें चालण ढूंकग्यो होवैला ? कितरा बरस रो होवैला, रै ? थारी वऊ रो पग भारी तो कोनी ?' बैन पूछै। सायद कोई टेप [illegible] धाजै। सायद रिस्तां नै जीवता करण वास्तै ऐ किणी मंतर रो [illegible]।

म्हू चुचकारा कै डिचकारां सूं काम चलाय नूं। [illegible] कोनी। ठेसण सूं ग्रठै ग्रावण तक टैक्सी रा चार रिपिया [illegible] रिपिया मखरण लागा। इतरा रिपियां मे तो म्हैं [illegible]

सिनेमा में बैठो रै सकतो हो। पण घरै आवणो ई तो जरूरी हो।........क्याईं जरूरी हो ? म्हनै ठा कोनी।

बैन पाछो चा रै काम मे लागगो। बस, मा, भोजाई कै टाबर—इण सूं बेमी बैन किणी रै बारै मे बात को कर सकै नी ! बैन री बोली जाणै कोई काछवो है, जको एक बार गावड काढ'र पाछो आपरै खोळ मे बड़ जावै। पछै भाटा जिसो उणरो खोळ दीसै, बस"""""।

'और कांई समाचार है ?' बैनोई नै ई की पूछणो चाईजै, इण वास्तै पूछै। पूछ'र मुळकै, जाणै आपरो फरज पूरो कर लियो होवै।

'सब ठीक है।' म्हूं पाछो एक पळ री मुळक सूं जवाब देऊ।

पछै सगळा पाछा आपोआप री खोळ में बड़ जावा, अठै कोई डर-भौ को रैवै नी। लागै, जाणै जवान री गावड़ बारै काढता ई कोई धारियो चलाय देसी। बारै मईना पछै म्हूं मिलण नै आ ो हू, पण किणरै ई मन मे कोई उमाव-उछाह ई कोनी !

कितरी रद्दी बात हुई। बेळासर 'ना' ई को दे सकियो नी। अबै म्हनै चाय तो पीवणी ई पडसी। पैला 'ना' दे देवतो तो अबै कोई काम रो मिस कर'र ऊठ सकतो हो। पळ पड़ी धीरप सू म्हैं अठी नै उठीनै देखण लागो। मकान मे हैं मू नीचै चार फुट रो एक कमरो है, अर छः फुट रो एक बरामदो। चाल्मेर यू ई कमरा अर बरामदा मे न्यारी-न्यारी ग्रिहस्थिया बसै। कबूतरा रा दड़बा होवै ज्यूं ! टाबरा रा रोवण री अर रेडियो री मिलियोड़ी आवाज, मिळगती सिगड़िया रो धुंओ, पाणी-पेसाब री भूंडी बासना अर मूगफळिया रै छिलका अर कागजां रै टुकड़ा सूं भरियो ऊरळो होवै जिसो आगणो। मिनख जो आपो-आप रै मना रै खोळ में छिपियोड़ो नई रैवै, तो इसा घरा मे किया जीवतो रै सकै ?

मेरणा सू हवा रो एक लैरको आयो—बारत मूं टकरा'र आई हवा रो लैरको। मूग मूं म्हारो माथो फाटण लागो। म्हैं रूमाल लेवण सारू गूजा में हाथ घालियो ईज हो कै बैन चाय रो कप सामै कियो। म्हनै उण नवाब री बात याद आई। अंगरेज उणनै फासी देवण री तजबीज सोर्जी हा कै किणी सैणै मिनख कह्यो—इतरी पम्पाळ करण री कोई दरकार ई कोनी। इण री सवारी बैंडवाड़ा कानी सूं निरळवाय दो। मूग मूं आपेई मर जासी। म्हारी ई मौत ईज ही पण कोई चारो को हो नी। म्हैं रूमाल जेब मे ई रैवण दियो अर कप हाथ में झाल लियो। बैन रो मूंडो इया ई मूजियोड़ो रैवतो, जो की नखरा किया तो बेसी मूजण रो भौ हो। कप रो डांडी टंटोळी। डांडी नी मिसी जद कप कानी देखियो। डांडी

ही ई कोनी अर कप रै निरोई त्रेड़ां आयोड़ी ही। कोर मार्थं निराई टीचिया पड्योड़ा हा, जिणा मे मैल भरियोडो हो। कप कानी देखतो रै'र मन नैं दुखी करण मे की सार को हो नीं। म्हूं निरलेप होय'र चा रा घूंटिया भरण लागो। जूना जमाना मे सरदार राजावा रै इसारां माथै इया ई जैर रा घूंटिया भरता होसी। म्हनै चाय खासी कड़वी लागी। इण वेळा-कुवेळा चा पीवण री रीत मार्थं रीस ई आई। होडाहोड गोडाफोड! किसा वेवकूफ हां म्हे ई। राजा-रईसां रै गैल चालण हूक जावा। आ चाय पावण री लीक कूटणी ई कोई जरूरी है? पण नई। आपरी हैसियत देखावण सारू उनो पाणी पावणो जरूरी है। भलाई धकला नै आगै जा'र उलटी'ज करणी पडै।

म्हैं वैन कानी देखियो—मैलखाऊ लीलै रंग में ई मैली दीसती थकी मैल भरियोडी साडी पैरण नै। मूडो कठोर! म्हूं सदाई मुळकतो रैवतो हो, पण वैन नै देख'र म्हारी ई मुळक पथरायगी ही। वा कप हाथ में ले'र आंगणा में बैठगी ही। चाय रो सबडको ले'र बोल मारती थकी कह्यो—म्हारी गरीबां री चाय थनैं कैण री दाय आवै।'

'नईं' चाय तो वढिया बणी है, म्हैं कह्यो।' कैवता-कैवता आवती उवाक नै नीठ रोकी।

'बाई रा समाचार मिलिया हा?'

म्हैं माथो धूणियो। असल मे म्हारै मा है, इणरो बेरो ई म्हनै जदीज पड़तो, जद कोई म्हनै उणरै बाबत पूछतो।

'भाई रै, उण लाण रो इलाज कराव। एक आख सूं तो पैला ई को सूझतो हो नी अर अवै दूसरी सू ई सूझणो बन्द होय गयो है! वा वापडी आधी होयोडी रोटी सेकै, जरै तवा नै पम्पोळता उण लाण री आंगळिया ई परी बळै। थे तो थारी रईसी मे ई इतरामो हो, उणनै तो एक कावडियो ई को मेलो नी अर न थारी मेम सावां नै गांव मे रैवणो ई दाय आवै। पण भाई रै, नैणा-गोडां नीठियां ई जे छोरा काम नी आवै, तो पछै मिनख तो माजना में धूड घालेला ईज।' उण आपरै सुर में खासी पीड़ अर नरमाई भर'र म्हनै म्हारो करतब सुझायो।

म्हूं चुपचाप सुणतो रह्यो। किणी दूजा नै करतव वतावता गांठ रो कांई' लागै? बाकी कुण किणरी कितरी सेवा करै, जिको म्हासूं कांई छानो है? वैन री सासू बेमार कोनी? वापडी एकली गांव में पड़ी है। कई-कई दिनां तक ताव ई को ऊतरै नी। लंघण राखणा पड़ै। उणरी गिनार कुण राखै? मा रै सारू जको दरद इणरै मन मे है, सासू सारू क्यूं कोनी? म्हनै अठै उपदेस देवै, आप ई जा'र

री सेवा क्यूं को करै नी ? आप गुरुजी बैंगण खावै, दूजा नै उपदेस सुणावै। पण इणनै आ बात कुण कैवै ! अबार गडियो ऊभो हुवै। ऊमर में आ बडी है, इण सारू सुणावण रो सगळो हक इणनै ईज है, अर म्हनै चुपचाप सुणण रो हक। एक'र मन में आई कै मूडा माथै ईज कैय दूं—फलाणो मिळियो हो, थारी सासू बाबत कैवतो हो'क छैला सासा है। थूं म्हनै इतरा उपदेस देवै, उण बापड़ी री कोई खबर ली है ? खबर राखै जको किसो म्हा सूं छानो है ? पण ओवडा गम खावो। राड आगै बाड़ भली। अबार तो दो मिनट में सुण-सुणा'र छुट्टी होसी, नईंतर आखी ऊमर री देण। म्हूं चुपचाप छत कानी देखतो रह्यो। मा रै मोतियाबिन्द रै आप·सन में कोई खास खरचो को हो नी। ज्यादा सूं ज्यादा सौ-ड़ोढ़ सौ रुपिया। पण................।

म्हैं पाछो वैन सामी देखियो। टेप चालू हो। म्हैं कह्यो—म्हारो ना कठै है ? पण घडोहा भाईमा ई आध-दूध देवै जद होवै'क ! कोरो म्हूं ईज खाड़ा में ऊतरूं ? मा कोई म्हारै एकला रै नो है कोनी। म्है तो उणारै एक आख रो अपरेसण पैला ईज करवाय दियो है, तो ई म्हूं आध-देवण नै त्यार हूं। म्हूं तो मा नै घणो ई कैवूं, क्यूं एकली रै'र फोडा देखै ? घणा चूल्हा रो घणो खरचो। अो ई म्हारै माथै ईज मडीजै है'क ? थूं किसो कमावण नै जावै ? पण आ म्हारी बात तो मानै जदै होवै'क ? अब म्हारै अठै तो भाई बन्धणी में रैवणो पड़ै, जको तो रैवणो ईज पड़ै। अठै तो ऊठ-बैठ, बोल-चाल मैं-की कायदा मर ईज हो सकै। आपस में सासू-बऊ लड़ीजै, तो-तो बाई फजीतवाडा ईज होवै। जिण पातर तो नईं आवणो चोखो। अठै आवै, नै धाऊ-धाम तो करै नईं, घाला जिमो खावै, देवा जिमो पैरै, अर सिव-सिव करै, तो रोटी-कपड़ा री उणनै किसी कमी है ? जिसो म्हे खावा, जिसो उणनै ई परो खवावा। आपरै सोयनी-सुखी रैवै, टाबरा में मन ई परो लागै, कोई दुख न कोई दुबाम...... ...।'

एक पल म्हैं वैन रै मूडा मामी जोवूं'क म्हारी बाता रो उण माथै किसोक असर पड़ै। या ध्यान सूं म्हारी बात सुणै है। उणरी आंख्या में एक चमक है। सायद उणनै यो एहसास होवै कै म्हनै खासी चोखी तनखा मिलै है, अर म्हैं खासो बडा आदमी बाजूं। उणरो ओ सोचणो म्हनै मोटो लागै अर लागै'क अबै म्हैं म्हारी मा माथै वार करण री स्थिति में हूं। सुरां में थोड़ो ठीमराम भर'र बात आगै कैवूं—'पण आ तो भाई आपरो राज चलावणो चावै। बीनणी ! इसी पानडिया जिसी पटप गाड़ी क्यूं पैरी ? इण गाड़ी में तो थारी दोनूं ई टागां उघाड़ी दीसै। यो माथै आटो होवै जिसे चूनो क्यूं पोतै, किसो मेळै में बिकणो है ? यो यूं क्यूं करै, यूं क्यूं को करै नी ? अठी बीनणी तो इसी गाडी रैवै, जाणै साक्षात् लिछमी।

अबै भाई. बडी बीनणी लिछमी है, तो पछै उण सागै ईज रैवो' कंवता-कंवतां म्हारो मूडो भोजाई रो जिक्र आवता ई खासो बिगड़ जावै। बैन नैं वकारतो पको कैवू'--'अबै थू' ईज कै'क अठै नित राडा-भाडां तो कुण सुणै ? मन मानै तो तो रै, मन नईं मानै तो मत रै—सीख सगाई चाकरी राजीपा रा काम' ! म्हूं एक छिण थमू।

भोजाई री बात मायै मूडो बिगड़ता देख'र बैन म्हनै हिकारत सूं देखै।

म्हू उणरै होठ री परवा को करू नी। थोड़ो इधको खारो होय'र कैवू'—'भोजाई तो लिछमी है, जको जाणा हा, घर नै भुआजी फिरतो कर दियो। श्रो तो म्हू हूं, अर इण घर री इतरी ईजत जमाई है, बाकी अठीनै कुण कूतरोजी ई को फुरता हा नी। अबै चार आदमी घरै आवै तो अफसर ई आवै, मातहत ई आवै ! फोरा ई आवै, तो चा ई पावणी पड़ै नास्तो ई करवावणो पडै। चाय पावो तो घर मे चीणी माटी रा वरतण ई राखणा पड़ै। इणनै तो ऐ वाता ईज को सुहावै नी। हर पल वकती रैवै, हीजडा री कमाई मूछ-मुंडाई मे ईज जाय। मल्ला आय नै ठोक नै जाय। अबै थू ईज कै'क म्हू कमाऊ अर म्हूं ईज उडावू तो थू दैण क्यू' करै ? थारै कनै तो मागू कोनी। पण नित ऊठ'र खोडीलाई करणी ! इणरो अबै काई इलाज ?'

बैन नै सायद बात की दाय आई। बोली—'हां, सई बात है, वा दैण क्यू' करै ? आपरै टुकडो खावै अर राम रो नाम लेवै।'

म्हैं बैन कानी अचभै सू देखियो। बाई री निन्दा मे आ हाकारो कीकर भरै ? आ म्हारै बळू कीकर होई ? आ तो सदाई भाई री पिण्डताई अर भाभी री सेवा री तारीफ करती ही। म्हैं एक'र फेर उण रै सामी देखियो। वा सायद उपेक्षा सू बात नै झट्ट निवेड'र आपरै काम में लागणी चावती ही।

थोड़ी देर चुप्पी रई। म्हैं छत री छीणा गिणण लागो। पछै कह्यो—'अबै घर री करजदारी नै ईज लै। नित्त ब्याज बधै। मिनख रात रा तो सोवै, ब्याज रात रा ई को सोवै नी। म्हू किसो जाणू कोनी ! पण म्हू एकलो कठा तक चुकावू ? थोड़ो-घणो विचार तो भाई सा'ब नै ई करणो चाईजे'क ? दुनिया मे कोरी माळा फेरण सू ई तो गाडी को धिकै नी।

बैन सायद बात टाळणी चावती ही। म्हारी घड़ी सामी देख'र पूछियो—'आ घड़ी कितरा में ली, रै ?'

'साढ़ी चार सो मे।'

बैन मुग्ध भाव सूं घड़ी सामी देखती रई। पछै सुर मे थोड़ी नरमाई भर'र

बोली—'उण रो लाई रो गाडो थोड़ो दोयलो गुड़ै है रै ! म्हूं तो एक बात कई है। करो, तो था रो चोखो लागै। नईं करो, तो वा तो बापड़ी ग्रघकाचो, ग्रघबळियो, रंधीजै जिसो खावै ईज है'क ?'

म्हूं दो मिनट बैन सामों देखतो रह्यो। उण री बात साची ही। भाई साहब मायलो देणो कियां चुकावै ? उणा रै माथै देणो तो हर महीनै बधतो ईज जावतो हो, पण निसरमाई सू कह्यो—'गाडा तो सगळा रा राम ई गुड़ावै है। बाकी किण रा गाडा सो'रा गुड़ै है ? 'बाबाजी धूणो तापो, कै बेटा, जीव आणं।'

म्हारी दीठ कलैण्डर माथै गई। स्कूटर माथै एक जोड़ो बैठो हो। आदमी रै खव्वा माथै हाथ राखिया लिपटती सी लुगाई री मुळक घणी सांवणी लागती ही। उण री हवा मे लैरतो साड़ी म्हारै विचारा नै उडावण लागी—'स्कूटर वास्तै रजिस्ट्रेशन तो आज ही करा लेवणो चाईजै।'

साढ़ी दस बजणवाळो ही। भाणजो कालेज जावण नै त्यार होयो। कारी लागियोड़ी पेन्ट, रंग उडियोड़ो बुसर्ट, हिप्पियां जिसा बधियोड़ा बिना तेल लगायां बायोडा बाळ। बोलियो—'बाई, म्हारै पगरखा लावणा है। म्हनै पीसा दे।'

बैन ऊबळती थकी बोली—'म्हारै चामड़ा रा पगरखा बणवाय परा।'

उण और तेजी मे कह्यो—'तो म्हू अळवाणो ई कॉलिज जावूं काई ?'

'म्हनै पैर परी।'

भाणजो भणभणाट करतो अळवाणी पगां ईज निकळ गयो।

जमीं धीरा ज्यू तपती ही, पण फाटोड़ा खाडा पैरता उणरी साख मे बट्टो को लागतो नी काई ?

सामीं तावड़ा कानी देख'र म्है धूप रो चस्मो चढ़ाय लियो।

इण मुलक में लोग कितरी गरीबी मे जीवै है ? ग्रो इसा तावड़ा में अळवाणी पगै किया जासी ? एक'र विचार ग्रायो—दस-बारै रिपिया दे दूं। बाटा रा चप्पल कै कपड़ा रा जूता पैर लेसी। पण पछै सोचियो–उरबांणा चालण वाळा तो भाणजा-भतीजा निराई है, म्हू किण-किण नै दस-दस रिपिया दे देसूं ?

ओफ्, दुनिया में दुख घणो है। मिनख-मिनख में इतरो फरक कै कोई तो एयरकंडीसण्ड बंगला मे रैवै घर घणा ई पैरण नै पगरखा ई को मिलै नी ? इण असमानता माथै हू आज ई एक लेख लिखसूं।

घड़ी देख'र म्हूं ऊठियो। कह्यो, 'अबै जाऊं ?'

'रोटी जीमं कोनी ?'

'नई आज वरत है।'

म्हे कूड बोलियो, पण खोखलै सुर साच छिपण थोडी ई दियो होवैला ?

बैन चुप रई। पण लागतो हो, जाणं कठा सूं ई टूटगी होवै। उणनै ठा'हो कै म्हूं मिस बणाय रह्यो हूं, पण वा कीं बोली कोनी। गळगळी हो'र रैगी।

म्हारै मन में आयो कै चार रोटी अठै ई चेप लूं, पण ओ विचार थिर रह्यो नी। किया भावैला—बिना छमका रा सूखा साग, बिना चोप री रासन रै आटा री रोटी।

'श्रोफ्, आ म्हारी सगी बैन है। इणरै थोड़ै सो'क सन्तोस देवण नै दो रोटी ई का खा सकूं नी ?' पण भावुकता विना पगा री होवै।

म्हैं पर्स सू काढ'र बैन रै सामा पांच रिपिया किया। पर्स खोलतां बखत उणमें सो-सो रा कई नोट चमकता हा।

—'ऐ कैंण रा!'

—'राखड़ी रा'

—'पण म्हे तो राखड़ी भेजी ई कोनी'—बैन सूखी हसी हसी—'बार-तैवार मैं' बधू' पीसा रा है, कै बाळपणा री ऊमर रा। अबै तो वो जमानो ई बीतो रै जद कोई आप रै टाळ किणी दूजा रो फिकर करतो। अबै किणी मैं न तो बैन री परवा है न किणी नै भाई री। ऐ अणूता दो रिपिया राखड़ियां रा कुण बिगाड़ै ?'

म्हनै खासो ग्रारो लागो, पण पांच रिपिया हिलाय दब-दब करतो बारै नीसर गयो। बैन री सूनी-सूनी आंख्या म्हारै मोरा मे चिपी ही, जाणै कैवती होवै, भाई बैन रै सगपण रो मोल फकत बरस मे पांच रिपिया है ?

म्हनै लागो, जाणै जोरदार भूख लागी होवै। बारै आय रिक्सै वाळै नै कह्यो, ऐ रिक्सा, एन एम. बी., अर उचक'र उण मे बैठ गयो।

□□□□

ओ घर म्हारो कोनी

सिझ्या रा साल बजिया म्हनें प्लेटफारम माथै पटक'र गाड़ी चालती रई। म्हूं गाडी मे देखतो रह्यो, अर उण जातरा रै बाबत सोचतो रह्यो जठै मुसाफिर नैं गाडी सू कदे ई उतरणो ई नीं पड़तो हुवै। कैड़ोक मजो रैवै? पण दुनिया रै मिनखां कैड़ा-कैड़ा ठेसण बणाया है अर किसा-किसा टिगट बणाया है कै आदमी सफा ठिगणो होय गयो है।'

'हल्लो, डाक्टर सा'ब—ठेसणमास्टर रै उछाह भरियै सुर म्हनैं मायकारो दियो—'क्या हाल है!'

—'हल्लो, आप कैसे हैं?' म्हैं म्हारै मूडै माथै एक मुळक चेप दी। सैर में रै'र म्हूं म्हारै सागै निरी ई भात रा मूडा राखू—मुळक रा, ठीमरास रा, तारीफ करता चमकती आख्यां रा, कौड़ रा, उदासी रा, गम रा, खासा टुकड़ा एकै सागै *राखण रै हैवा हूं। म्हारै मूडा रो असली नकसो छिपावण सारू जठै-जठै जिसी-जिसी* जरूरत पड़ै, विसो-विसोई टुकड़ो म्हू म्हारै मूडा माथै चेप दूं।

'कोई अखबार बीजो लाया काई?' उण आचक दीठ सू म्हारै सामी जोयो।

'नई यार खरीदण री वेळा ई को मिली नी। सैर री जिन्दगी, थांनै ठा' ई है, दौड़, दौड़ नै दौड़। मरण री ई फुरसत कठै?' म्हैं सफा कूड़ चेप दियो, अर मन मे सोचण लागो कै आदमी नै आपरी असली औकात बतावता लाज क्यूं आवै? सायद आदमी इण वास्तै ईज सै मूं बत्तो सभ्य बाजै कै बो सै सू बत्तो कूड़ बोल सकै।

आगै म्हारी बात सुणण मे उणनै की तन्त निजर को आयो नीं अर बो आपरै कमरै कानी टुर गयो। इण 'हल्लो-हल्लो संस्किरति' रा ऐ सम्बन्ध है। गरज मिटी रै गांगला, जाणै जठी नै ई जा।

म्हैं उणरी चाल नैं एकटक देखतो रह्यो। म्हनैं उमेद ही कै बो घबार पाछो बळ'र घा-पाणी री मनवार करसी, पण उण तो पाछो बळ'र देखियो ई

कोनी। म्हारो मूंडो कडवाय गयो। सायद उणनै म्हारी असली हालत रो ठा' पड़ गयो हो। गूंजा मे पीसा री कमी ई आदमी रै चेरै रा रग उडाय देवै।

सामान नांव म्हारै कनै एक हैण्डबैग हो, जिको म्हारी सहाबियत री साख घालतो। उणमे को म्हारै लेखा री कार्टियोड़ी टूकड़िया ही अर एकाध मामूली पत्रिका ही जिणमे म्हारी कोई रचना छपियोड़ी ही। चालता बखत ठेसण सू बबलू सारू दस पीसा रा बड-बोर लिया हा, वै ई इणीज बेग मे हा।

इण ठेसण सू म्हारो गाव दो कोस है। साडी आठ वजी तक म्हैं घरे पूग जासू, अर ···म्हारा पग मण-मण जितरा भारी होवण लागा।

डोकरो पोळ मे मचली माथै पूर ओढ़िया पड़ियो होवैला। खच्-खच् खच् थो डड्। खासी अर कफ रो थूकणो। पेट माथै गोडा नै थेपड़ा गिणती आखिया। 'ऐ आखै दिन, आखी रात थेपडा मे काई सोधै ?' म्हू विचारू।

'काका, पगै लागू'—म्हारो मुळक वाळो चेरो तो मारग री हवा सू ई फाट जावै। च् च्, गेलै मे ई कोई न कोई सामो-अपूठो मिल जासी—'अबकै तो घणा दिना सू आयो रै।'

'वा, रै, वा ? कोई कागद न कोई पत्तर, थारी मा तो सोच कर-कर नै मरगी। सैर जा नै मा-बाप नै इया भुलाईजै है कठैई ?' एक मीठी फटकार।

'काई रै रामधन, थै तो खासी पढाई की है, भाई······ सोळमी सू ई ऊपर ? सत्तरमी······ अट्ठारमी·········कितरी रै ?' अचभै री कोई न कोई डोठ म्हनै जरूर पूछै।

आ बात सुण'र एक पळ सारू म्हारै मन री कळी-कळी खिल जावै।

'आछो जी, राम जी म्हाराज, पेढ़ी री पुन्याई है। नीतर ओ धीगड़मल लखपति है, ओ सरपन्च है, डेढ सौ बीगा जमी रो चक है इणरै कनै, पण इणांरा छोरा, दसमी पास करणी किसो होवै है ?' एक तारीफ रो सुर फेर फूटो।

एक पळ म्हनै वेम होयो'क हा, गाव मे म्हारी की गिणती तो है।

'काई रै, अबै थनै कितरी'क तनखा मिळै ? चारसौ-पांचसौ तो मिलता होवैला ? दो-चार सौ तो ऊपरली पेदा ई परी होवती होवैला, काई रै········?'

म्हारी मुळक म्हाट जावै। म्हनै लागै'क अबै पळ दो पळ [illegible] ई सगळी भणाई नागी होय जावैला। म्हारो चेरो काळो परो पडै, जाणै खीच माथै कोयटी जमी होवै। काई कंवू ? उदास-उदास आंख्या सूं दूजै कानी देखण ढूकू। म्हनै लागै'क

धीगड़मल कै सरपन्च रो बेटो म्हारै सूं ज्यादा भणियो-गुणियो हुसियार। आखिर सगळी भणाई री कदर इण वास्तै ईज तो है'क वी सू घणा सूं घणा पीसा मिलै।

'भलै-भलै, रामजी म्हाराज, भलै-भलै'—पछै थोडो सी'क धीमो सुर इक मारै—'बेटा, ऐस इण धीगड़मल रो तो निपटारो कर ईज परो। मोटो है रै! भरियै बजार गाभा ऊतारै। बकणो सरू होवै तो आगै-लारै रो कोई ध्यान ई को राखै नी। दड़ाछट गाळा काढ़ै। बडेरां तक पूगै। यूं तो बेटा इतरो भणियो-गुणियो है, थारै सामी तो कोनी बोलै, पण थारै परपूठ थारै घरै कजियो मांडै—भलै लुगाया रा घाघरा बेच नै रिपिया लावो, म्हारो तो देणो चुकावो।'

'नै बेटा, वा ई लाण थारै म्हारै माई है, रै! उणरै सामी ई देख। थनै भली पांच सौ मिलो'क हजार, लुगाई तो बापड़ी भीलणिया-बामणा ज्यूं बडी मजूरी कर'र पेट भरै। पछै माई, मिनख तो थारी पढ़ाई-कमाई माथै धूड़ नाखै ईज'क?'

ऊकळता सीसा ज्यूं ऐ सुर म्हारै कानां में पड़ै, पण म्हनै बिल्कुल रीस को आवै नीं। वैं'रा माथै गरीबी चिप जावै। गूंगो हुवै ज्यूं सै की सूणू। चस्मो नाक माथै सूं खिसक'र थोड़ो आगै बध जावै।

सीमाड़ा रै खेतरा सू फिळा तक रो ओ रस्तो नित यूं ई कटै। कोई न कोई हमदरदा देवण वाळो काको कै भाभी कै बडी मा मिलै'र मिलै!

फिळै सूं ले'र घर रै पेडलै तक म्हू जमी में धूण घालियां चालू। गांव में हर दूसरो-तीसरो आदमी बता नही तो पांच-दस रिपिया रा ईज सही, म्हारा तो लेणायत है। यो-निजरा होवतां ई काई ठा' रिपिया मांग लेवै—'रामधन, कद आयो रै! एक दस रिपिया देजै भाई, जरूरी चाईजै रै, यू दिन ई घणां ई होय गया, थारी मा नै दिया नै।'

म्हारै मरण में काई घटै?

ज्यूं-ज्यूं घर रो पेडलो नेड़ो आवै, लागै, जाणै मसूखणी आवतो होवै। कोई फांसी री सजा दियोड़ो कैदी सूळी कानी जियां चालै बियां चालूं। भो मौत सू ई खोटो होवै।

'काकाजी, पगै लागूं।' सारला चार-छ. बरसां सूं म्हारै बाप कानी ताखण री म्हारी हीमत ई को पड़ै नी।

पेरड़ां कानी ताकतो निजरां म्हारै मूंडा माथै घूमै—टुकर-टुकर, चुपचाप। निजरां कोनो। कोई धणीज सोयो छुरो म्हारै काळजा में धुवै। हू एक पळ ई उण निजर नै बरदास्त को कर सकूं नी। यूं कयूं भारै? इणसूं तो मोटो है कै

कान पकड़'र चार रैंपट री जरकाय देवै,""""नी हुवै तो बड-बड करता गाळ्यां ई काढ दे। सै की खम सकू, पण बाप रै बाप, यूं देखणो म्रो को खमीजै नी।

म्हारो जीव घुटण लागै।

सोनू, साप ज्यू कोथळी छोड देवै, ज्यूं ईज मिनख सगपण नै क्यू को छोड़ सकै नी? क्यूं को छोडै नी? सम्बन्धा मे बास आवण ढूक जावै, रिस्ता सिड़ण ढ़क जावै, पण मिनख है कै ग्रा नै गळै लटकाया-लटकाया दाझतो रेवै।

बाप री इण मारथा मे जितरा सवाल भरियोडा है, वां माय सू एक रो ई जवाब म्हारै कनै कोनी। इण ग्रास्था मे सवाल है नौकरी रो, पगार रो, पीसां रो। म्हू रोत्रणखाळो होय जावू। ऐ सब बातां काईं म्हारै स्हारै री है? म्हनै झाळ छूटै। बाप कैरीजण वाळै इण प्राणी सू म्हारो दो बोल रो ई सगपण कोनी। मूंडै सू इतरो ई कोनी निकळै—बेटा, ग्राव! इणमे किसो जोर पड़ै? इणमे किसा पीसा लागै? दुख मे मिनख दार्शनिक हो जाया करै। म्हनै पण याज्ञवल्क्य रिसी रा वै बोल याद ग्रावै जका म्हैं कदेई पढिया हा—'न खलु पुत्रकामाय पुत्रो प्रियो भवति, ग्रात्मनस्तु कामाय पुत्रो प्रियो भवति।' खलु"""'ऐ दुनिया रा सगळा रिस्ता स्वारथ रा है। कोरै स्वारथ रा। उण दिना म्हनै ग्रो सूत्र वाच'र याज्ञवल्क्य माथै दया ग्राई ही—बापडा मे कोई बिखो पडियो होवैला, पण ग्राज म्हनै बिसवास होवै, जाणै रिसी म्हारी हालत नै देख'र ई ऐ बोल लिखिया होसी।

फितरै उमाव सू म्हैर हो'र जोधाणै सूं ग्रावू। जाणै कोई चुम्बक खाचतो हुवै। ऐ ई जो म्हारै सू बाता करै तो करण नै बाता री कोई कमी है? म्हारै फितराई साथिया रा बाप म्हारी बाता सुणै। सुण'र ग्राख्या चमका'र दातै ग्रागळी देवै। साबास, बेटो हुवै तो इसो हुवै! म्हारो थीसिम डेढ साल मे ई लिखीज गयो। ग्राछा-भला मिनख बारै-बारै बरसा तक तड़फा तोडै, तो ई इसो टाइट थीसिस को लिखीजै नी। ग्राज री राजस्थानी कविता माथै लिखियोड़ै म्हारै निबन्ध री चरचा ग्राखै राजस्थान मे हुई। ग्राछा-भला थापित कवियां नै बापडा नै ऐडा रगड़िया कै वां नै धोळै दिन तारा दीखण लागग्या। चारू कानी वाह-वाही बरस री है। ग्राखै मुलक रा प्रोफेसर, लेखक, पत्रकार म्हारी कितरी-कितरी ईजत करै? हर दसवै पांवडै चाय ग्रर पान री मनवार करण वाळा मिल जावै। ऊमर ग्रोछी तो काई होयो। है किणरो ई इतरो जस? इणा नै काईं तो ठा' ग्रर काईं ऐ समझै? इणां लेखै तो धीगडमल कै सरपन्चां रा पांचमी कै छट्ठी फेल छोरा ई चोखा है, जिणा रो न तो कोई मॉरल है ग्रर न कोई कदर। उणा री एक ईज तारीफ है—वै मोड़ो नै कूटणो जाणै, नै लूटणो जाणै। सूद्र दण्डे मो पण्डिता। गाव मे भलाई मिनख बावजी बावजी करो, घार ग्राखर भणियोड़ो सोवै बठै सो इणां री

जितरी ई कदर कोनी । बीजी तो बात ई छोडो, जिण वकील सूं म्हारी दोस्ती है, जिको ऊभो हो'र म्हारो सत्कार करै, हाथ मिला'र म्हनै आपरै पाड़ै बैठावै, इणा नैं पूछो कै उणा रै अठै सेठ धींगडमल अर सरपञ्चा री काई कदर है ? जठै म्हैं पगरखिया उतारू वठै तो ऐ हाथ जोड'र बैठा रैवें । वो डपटै अर ऐ घिघियावै । आ सूं म्हारो काई मुकाबलो ? कठै राजा री रेवाडी अर कठै·······

पण तो ई म्हारै बाप री डीठ मे तो ऐ ईज म्होटा है । म्हारी तो कोई कदर ई कोनी ।

थिना मंजे पणी दूर उडीजै कोनी । म्हूं लपाट करतो नीचै आवूं । पण इणा सगळी बातां सूं नौकरी रो काई लगपण ? नौकरी रो नै थीसिस रो काई लेणो-देणो ? नौकरी रै नै प्रतिभा रै काई मेळ ? नौकरी रो कविता सूं कोई तालको कोनी । नौकरी नै चाईजै सिफारिस, रिस्वत, जात नै पोंच । ऐ म्हारै कनै कठै ? आ ईजत, आे जस, ऐ मनवारा—ऐ मैं होठा री है, हिवडै री कोनी । सूर्ज होठा सूं आखर काढता की देवणो थोडो ईज पडै । वा री तो गति ई विचित्तर है । तारीफ म्हारी करसी अर नौकरी दूजा नै देसी । म्हनै थोथी जगै चिपियोड़ा साथी याद आया । दुनिया सरळ रेखा कोनी, कै सट सूं नाप लेवा । म्हनै छगन याद आवै, अर साथै ईज मिस मालती रो भारी भरकम कटरूप सरीर । पैलमपैल जद आ बात सुणी ही तो म्हनै विसवास ई को आयो हो नी । छगनराज ज्यादा सूं ज्यादा बीस बरस रो होसी—दूबलो-पतळो । इणरै मूं छा री तो मसा ई को भीनी ही नी । अर मिस मालती ? डिपार्टमेन्ट री हैड है तो चाळीस-पैंताळीस सूं काई कम हुवैला ? पण नपरो इतरो कर'र आवै, आणै कालेज मे पढावण नै नई परणीजण नै आई होवै । पढावता-पढावता छगनराज कानी किमी मीठी निजरां सूं दयती ! अर छगनराज दिन-दिन गैलरो होवै ज्यूं सूधतो आवतो । पढाई री करड़ी मार इसीज होवै है, भाई ! उण दिना पढाई री करडी मार सूं उणरी आख्या गीमरी पड़गी, सूग गियो । न दिन देखियो न रात, गुरवाणी रै सागै खूब विद्या सीखी । उणरो फळ है कै गोल्ड मैडल ई मिलियो परो, अर भली जगै ई चिपियो परो । बाकी म्हे ई हां । म्हारै मुगाबला मे छगनराज जाणै काई है ? पण इसा विस्वविद्यालयां री तो पाना ई न्यारी है । अठै जितो, ऊंची-ऊंची इमारतां है, बिताईज नीचा घन्धा होवै । जितरा पढा-चडा हॉल है, बितरै ईज साकडै मना रा मिनख मांय रैवे । घणा मिनख भाग री बात कै-कै'र छगनराज रो दाखलो देवै—सुण कैवे कै म्हारै देस मे मिनख नै जात-पात थापै, आपोआप री मैनत अर आपोआप रै भाग री बात । देखो'नी, छगनराजजी कानी······· । नै छगनराज सायद आपरै भाग माथै रोवतो

होवें, 'कांई करां भाईड़ा ! कॅरियर वणावण वास्तै काई को करणो पड़ै नी ! बाकी घाट-घाट रो पाणी पियोड़ो राड इसो लपरो लगाय दियो कै········ !

इण बात नै म्हारै बाप नै कुण समझावै ? कुण कैवै कै म्हनै नौकरी को मिल्री नी, उणमें म्हारो कोई दोस कोनी । हिन्दुस्तान में करोड़ा आदमी भण-लिख'र म्हारै ज्यूं नौकरी री बाट जोवै । नौकरी री बाट जोवता-जोवता अधकाळै ई बूढा होय जावै, अर मायद अधकाळै ई मर ई जावै । म्हारी मौत ई इया ईज होवनी दीसै । नक्की ई ऐ वकील साहब म्हारी मौत मार्थ एक सोक-सभा तो करसी'ज । घणा नई तो दो-तीन अखबार तो चोखटो दे'र खबर ई छाप देसी । इण विचार मू म्हनै एक'र हसी आवै । हिन्दुस्तान रा प्रेस जीवतै आदमी री रचना को छाप सकै नी, पण मरै तो मिरघाजळी छाप देवै ।

लारली वेळा अठै आयो जद रो चितराम म्हारी आंख्या में ऊतरै ।

चारेक हाथ री एक पोळ है, जिणमें एकण कानी मचली मार्थ म्हारो बाप पड़ियो रैवै । पसवाड़ै सू आदमी जावै जितरी जगां बचै । बाप री उण सूनी-सूनी आंख्यां रो इसो भौ कै जो म्हारै बस मे होवतो तो चार हाथ री वा दूरी पार किया पैली'ज म्हू जमी मे धस जावतो । पण जमी मारग को दियो नी जको खासी ताळ म्हू बठै ईज ऊभो रह्यो । म्हारै घर मे वस्तो नाम री कोई चीज को बळै नी । फालतू करण नै खरचो कठै ? पगा नै बाजता सुण मा पूछियो—'कुण है, रै ?'

म्हैं लप करतो मा रै पगा रै हाथ लगाय नै पगैलागणो कियो ।

अध-पाकियोड़ै मोतियाबिन्द री कोकिया सू डोळा फाड़'र जोवती मा कह्यो—'रामधनिया, आयो बेटा !'

स्वागत री खुसी री बीजळी एक पळ पळकी अर झट सी घटाटोप में कठैई ऊंडी रमगी ।

'बीनणी, इणरै रोटी करो, बेटा, राबोड़ी रो भाव नै·······।'

जोधपुर सूं म्हारै गाव तांई रो कोई चवदै घण्टां रो रस्तो है । इण चवदै घण्टा मे सिवाय हवा-पाणी रै अन्न रो एक दाणो ई गळै सूं नीचै को ऊतरियो हो नी । तो ई एक'र इच्छा हुई कै 'भूख कोनी' कैय'र रोटी बणावण रो ना दे दूं । म्हूं मणूं ताई री हद तक सकोच रह्यो हो, जाणै म्हूं कोई बटाऊ हूं, अर किणी असैंदा घर में कोई म्हारी रोटी री मनवार कर रह्यो होवै । ओ संकोच खासो ताळ म्हनै घेरियां राखियो पण भूखा मरतां रै मूंडा सूं कोई सुर ई को नीकळियो नीं ।

थीनणी, मतलब कै म्हारी बऊ ऊठै। म्हारै आवण रो सुण'र सायत बा राजी होई होसी, सायत बेराजी ई होई होवै। थो काई, अठै तो एक-एक कौड़ी नै रोवां, नै ऐ थोवै-थोवै भाड़ा रा रिपिया खरच भर आ जावै। सायत बा म्हनै भलाई की मती कैवो, पण इणीज बात मायं इणनै लड़-लड़'र आभो परो ऊंचावती होवैला। धन्यारा रो श्रो ईज तो एक सुख है कै म्हे अठै म्हारै मन मुजब फकत महसूस कर सका, हकीकत नै देख को सका नी। म्हैं ई उणनै खासो नाळ निरलेप भाव सू महसूसतो रह्यो। कोई सुगन्ध वाळै फूलां री वेल ही जिणनै मधकाळै ई दा'बो लागग्यो हो। उणरा लोना छम कूळा पाना खोड़ला पड़'र कमळीज गया हा। कोई पीपळो ही जिण रा पळ-पळ मायं नाच'र सुर-नै'रा गावता पाना झरग्या हा, अर जको फकत ठूंठ बण'र रैगो हो। कोई इमरत री तळाई ही जिणरो पाणी सूखग्यो हो। लागै, जाणै किणी ठूठ मायं छाणी होवै जिसो श्रोढणो नाख दियो होवै—किणी मुरदा ऊपरलो कापड़ो। म्हनै लागै जाणै म्हैं किणी घर मे नई मुरदा री किणी सराय मे श्राय गयो होवू, जठै किणी रै ई हाथ, पग, मूडो की कोनी, फकत ऊडी-ऊडी श्राख्या है। फकत सूनी सूनी सासा है। फकत सूखा-सूखा सरीर है। अर वै आख्या वै सासा फकत एक सवाल पूछै, वो ईज सवाल, जको म्हनै रात-दिन नळै है, पण जिणरो ऊतर म्हारै कनै कोनी। वो सवाल है नौकरी रो, रोजगार रो, पीसा रो। सायद इणरो ऊतर मिळै, तो इण मुरदाघर रा सगळा ई मुरदा जीवता होय जावै। पण म्हे इणा नै कीकर समझावू कै म्हार हाथै सिरफ मेहनत करणो हो। म्हैं मेहनत सू पढाई की। पढाई किया पछै रोजगार देवण रो फरज राज रो हो। इसी निकम्मी पढाई, जिकी रोटी को दे सकै नी, म्हैं शुरू कोनी की। आ पढाई राज शुरू कराई है। राज रो फरज इसी पढाई करावण रो हो, जिको रोटी सू जुड़ियोड़ी होवै। उण एक मोटोड़ो फरज नी निभायो, इण मारू म्हारै जिसा करोड़ा ई रवड़ता फिरै। इण भणाई सू तो आछो हो कै म्हू फका ढोर ईज रैवतो, अर म्हारै बडेरा, जिनावरा ज्यू दिन रात मथ'र, नै धन्याव-अत्याचार सै'र ई पेट रो गडढो भरता रह्या, ज्यू म्हूं ई पेट रो खाडो भरतो। अबै श्रो म्हूं सू हो कोनी, क्यूं कै म्हारै मूडा मे जबान है, अबै जो म्हूं अन्याव बरदास्त को कर सकू नी पर भूखां मरू अबै जो मेहनत-मजूरी करता म्हारा हाथ-पग को थकै नी, पर म्हनै लाज आवै तो इणमे म्हारो काई कसूर ? इणां नै किया समझावूं कै इण जुग मे जिनावरा सू थोड़ो ऊंचो, मिनख होवै ज्यूं विचार करणो जिनावरा सू ई माठ होवणो है।

म्हनै ठा' है कै जैड़ी तसवीर इण गाव री है, बा ई बा तसवीर पूरै मुलक री है। अठै अजूं ठार मरघट री राज चालै, पांचमी पास पटवारी रै हवेलियां

चिणीजै, कक्कै कली भणियोड़ा वाणिया लाखां रा वारा-न्यारा करै क्यूं कै बा री दीठ श्रापरै घर तक ईज है। म्हूं म्हारै बाप नै किया समझावूं कै नफो लूटणै कानूनी रूप रो नाम है, अर जिणा रै हवेनिया चिणियोड़ी है उणा मायं कई-कई इसा कानूना री मोहर है, जिणा सूं लोगा रो खून किणी बढ़िया लेवल रै सार्थ उणांरै भडार मे पूग जावै। म्हूं म्हारै बापनै किया कैवूं कै अको मिनख ज्यादा सूं ज्यादा किणरोई बिगाड कर सकै, ज्यादा सूं ज्यादा लोगा नै अन्धारा मे राख सकै, अर ज्यादा सूं ज्यादा श्रापसरी मे माथा फोडवाय सकै, उण आदमी रै घरे चादी मतै ई बरसण ढूक जावै, अर ऐ काम सीखण सारू किणी पढाई री जरूरत कोनी। इणीज हालाता नै देख'र किणे ई कैयो होसी—

भणिया मागै भीख, अणभणिया रै श्रागणे
आ सतगुरु री सीख, भूलै ई भणजो मती।

म्हारो बाप म्हनै तो की को कैवै नी, पण श्राड़ोसिया-पाड़ोसिया नै नित कैवै—मावीतरा तो फरज टाबर नै पढावण-लिखावण रो हुवै। म्हे म्हारै रामधन नै कलट्टर जितरो पढाय दियो, हमै ई नई कमावै तो मावीतर बापड़ा काई करै? पण म्हैं म्हारै बाप नै किया समझावूं कै म्हूं तो किसै बाग री मूळी हू श्रठै तो श्राछा भला वैज्ञानिक श्रापघात कर'र मरै, अर म्हनै ई इण दुख सू कदेई श्रापघात ईज करणो पड़सी। कितरी मजाक री बात है कै श्रापघात करणो कानून रै खिलाफ है, पण भूख सू तड़प-तड़प'र मरणा, गरीबी सू कळप-कळप'र मरणो कानून रै खिलाफ कोनी। अर म्हूं श्राज जे मरू ई परो तो राज जनता रो मन जीतण नै ऊगे सदार री सहायता देवण रो ऐलान कर देसी। थे मजो तो देखो, जीवतै नै दाणा का मिलै नी तो कोई परवा नई, मुरदा मार्थ खापण श्रोढ़ाय दो अर जस लूटो।

म्हारै देस मे लोग मरणै नै इतरो ऊचो क्यूं मानै ?

चूल्हा मे छाणा भारियोड़ा हा। उणनै कुचर'र बीनणी छाणां रो भूरो मार्थ नाखियो। उण मार्थ दो-तीन छोटा-छोटा छाणा चिणिया। घटाटोप अन्धारा मे लाल फूल खिळ्या। म्हारो हियो धक-धक करण ढूंको। श्रबार बीनणी मिरच कोनी, कै तेल कोनी, कै श्राटो कोनी, की न की कैय नै नीची धूण घाल देसी। मा एक लाम्बो निस्कारो नाख'र पाडोसणा कनै मागण नै जावैला।

—'म्हारो रामधन श्रायो है, बला एक टीरी तेल दीजो।'

—'दो चिमटी मिरचा देवो नी, बला, रामधन श्रायो है, मो! साग करणो है।'

—'दो रोटी रो आटो तो दो नी भो ! घर में ज्वार रो आटो है, म्हारै रामधन नैं ज्वार भावै कोनी ।'

पैला, म्हारै चोखी कमाई होसी, इण उमेद सूं लोग-बाग चीज-बस्त, पीसो-टक्को उधार दे देवता, पण उणा रा विसवास बूढाईज गया हा । अबै लुगाया म्हारी मा नैं टोकण लागगी ही—

—'बला, थांरो रामधन नौकरी को करै नी ?'

—'हाल तांई कितरो भणावोला, भो अधबूढ तो होय गयो है ।'

—'खावण नैं चोखो भावै जरै कमावण री कोसीस क्यूं को करै भी ।'

—'बला, रोज-रोज मागण नैं ईज आवो, कदेई कोई चीज पाछी ई पुगाया करो, भो ?'

ओडणा रै पल्ला लारै छिपा'र लायोड़ी चीज रै लारै कितरो दरद है, इणनैं म्हूं किसो जाणूं कोनी ! 'इतरी-इतरी बाता सुण'र ई भा चीजा किया मांग लावती होवैला ?'

पोळ मे म्हारो बाप खास'र ढगळा जितरो खखारो थूंकै । म्हनै लागै भो थूंक म्हारै खाणै माथै है, म्हारी पढाई माथै है, म्हारै जीवण माथै है ।

डोकरी बबलू नै ले'र पाडोसिया रै अठै परी जावै । जद कठैई जा'र बबलू रै सूवण री ठौड़ मुगला पूरा मे म्हारै सोवण री जागा बणै । ऐड़ै नरकवाड़ै मे एक उमावहीणी लुगाई नाम री ल्हास रै सागै सिसकारियां सुणता आखी रात काढणी भो-भो सवाल हां-हूं करनै टाळ देवणा, झूठी थावस देवणो । आ ई कोई जिन्दगी है ! म्हारै काळजा मे कठै-कठै घाव पड़िया है ! उण बाबत पूछणो का माथै मल्हम लगावणो तो अळघो रह्यो, आ तो इण बाबा नैं ओळखै ई कोनी । कोई कोरै भेळो सूवण रो नांव ईज लुगाई है ? इणरै कितरैक सुख री इच्छा है, दो वेळा रोटी अर आपरै कै बबलू रै वास्तै दो गाभा ! अर म्हारो दुख कितरो बडो है—पूरै देस रो दुख ।

आथेंटै री भी धाई । टांका मांय सूं काढ'र पाणी पियो । आखै दिन रो भूखो हो, पण घरै जावण रो कोई उछाह को रह्यो नीं । उलटो म्हनै पोता रै माथै ईज नोध आयो । म्हूं क्यूं जोधपुर सूं रवानै होयो ? अठै कोई भूखो हूं जको नैवण नैं भा जावूं ? म्हारा मन जवाब देवण लागग्या । बाप री बै सूनी-सूनी आंख्यां देखण री हिम्मत को हुई नीं । ऐड़ी रोटी खावण री कल्पना सूं ईज ढबका आवणा शू कग्या । ऐड़ै मुगलवाड़ा में रात बितावण सूं मुग आवण ढुक गी । मन थोपाटा कर-कर'र रोवण ढूंको—'जीवड़ा, कठै जावै ? कठै कुण है थारो ? कुण

थारै माथै हाथ फेर'र थनै हीमत वंधाय सकै ? कुण थारै दरद नै समझ सकै ? मा-बाप, घर-टाबर सैं' क्यू कमाऊं पूता रा हुवै । धरती रै सगळै रिस्तां रा मिणिया धादी रै तार सूं जुड़ियोड़ा है । ऐ तो था सूं ई वेसो दुखी है। श्रां रै दुख श्रांनै भाठा रा बणा दिया है । गूंगा ! श्रर ऐ थारै काईं लागै ! घर-बार सगळा बारुजगारा रा होवै । यूं तो बेरुजगार है, बेरुजगारा रा कोई घर को होवै नी । थूं कठै जावै है ? वो घर थारो कोनी, वो घर थारो कोनी ।'

म्हैं एक'र चारू कानी देखियो । म्हारै गांव री कोई चिड़ी री जायो ई कोनी हो । पाछो ठेसण री रस्तो पकड़ियो । रात दस री गाड़ी सूं पाछो जोधपुर जासूं जठै कम सूं कम यार-दोस्त तो म्हारो दुख-दर्द समझै है ! भो घर म्हारो कोनी ।

oooo

धरम री जै

ठाकर मजनसिंघ किणी गांव रा धणी को हा नी। छुट भाई ई को हा नी। एक छोटै सीक गाव रा म्राडा राजपूत, पण राजपूती माण मर रोब-दाब मे गाव-धणी रा ई डाविपाळ। ठेट्ई उन्नत मजावण रै सवाई पड़ियोड़ा जिको जनता में पक्को भयवास। बैगण छाप लट्ठ रो धोतियो। मटिया साफो। बीच्छू रै डंक जैडी मूंछां। खाकी जीण रो कमीज, गूंजै मे संगर बीड़ी रो बंडल, ग्रमल री डब्बी मर हाथ मे तेल पियोड़ी डांग। जठै-कठै ई पच-पचायती होती, वठै मणनूत्या ई त्यार।

म्हारै मुलक मे एक बताई है। मठै नागाई नवमो रतन गिणीजै। जिको सत्ता री विकेन्द्रीकरण हुयो, जद मजनसिंघ सगळां री ई रजामदी सू सरपच चुणीजिया। लारला पदरा बरसा सू सरपच हा, उण दिन सू ग्राज तक गाव मे घणोई फरक मायो हो। बाटको मो न्होड़ियो ताळाब माटी सूं बूरीजग्यो हो, जिण सू वापड़ी भुंडी पाळ नै फूटणो पड़्यो। पैली नवो-जूनो पाणी भेळो हूयतो, मबै धार मईना पाणी टिकण रा ई जोडा पडै। वबुवारिया तारा यका पाणी नै जायती नै बाटकियै-बाटकियै नीठ घडो मर लावती। घरा रा चौनरा बधण सू सेरिया साकडी पडगी ही। बिजळी-पाणी रो की बन्दोबस्त नी। बिकास नाम इनरो कै दिनोदिन कारलो बधतो जावतो हो, मर गाव घटतो जावतो हो।

जमानो भू डो मायग्यो जिको मोटरा बधगी, मखबार बधग्या मर मिनख री निजरां म्राडै-पाडै रै गावा नै देख'र भगवान री जगै मिनख नै भू ड देखण लागगी। नतीजो यो कै मजनसिंघ रै जीतण री उम्मेद घटगी।

पंचायतां बण्यां पछै म्राडै-पाडै रै गावा में पाकी निसाळां बादगी ही। सड़कां बणगी, कूपा खिणीजग्या। गावाऊ पेचका सुरू हुया कै टूटियां लागगी। रात रा घठैई म्यान्टेणां बधीजती तो कठैई धमाधम करती बीजळी रा पळाका पड़ता। गांवाऊ रेडिया सूं नित लड़ाई रा नै नवा-जूना समचार मावता पण मठै गाव रै सरै बिचाळै हणमानजी रै घुड़्योड़ै चौतरा मायं मायो दिन कूतरा सूरता।

चुनावं रै दिनां मे चौहटै री धसक ई न्यारी। डोकरा नैं मोट्यार भेळा हुया नैं भांत-भांत री वातां करै। प्रजातन्त्र में च्यार मिनखां में वैठ'र सगळी दुनियां नैं गाळ काढ़णा री ई तो आजादी है। गूजरा रै रामधनियै कह्यो—'वराळा मे मखुप्रारिया चोकळा में फिसळ'र हेठो पड़ै। तळाव रै घाट परो बधावै तो..........'
—'तो सरपंचां री पोळ मायं चोणा कियां पड़ै ?

सात पीढियां सू झूपा में रैया। मेपदा ई कठै हा ? नैं हुमैं झरोखा-माळिया कठा सू चिणोजै ?'

'वेगे खिणीजण नैं हजार रिपिया आया हा, दो धोवा धूड़ ई वारै को पड़ी नी।' —मो मुर पुरोहिता रै केलै रो हो।'

—'पीसा ऐडा पचै कै म्हे तो डकार ई को सुणी नी।'

जरदा-बीड़ी फाकता मा'राज कह्यो, म्हारै ठाकरा री दतवो ई न्यारो है। बी ए. पास मास्टर तो बापडो मठै ट्रैक्टर खडै है मा'राज........'

'........मर वारै वरसं छोरो दूसरी पास करै।'

—'आपोआप रै नसीव री बात है। वाप तो बापड़ै आखी ऊमर टाटा पराया। घर में कठाळ काती भूखाजी फिरता हा।'

दोनूं हाथा सू चिलम खींच'र साफी सूं मूडो लगावण सूं पैली एक डोकरो बोल्यो—'थे बठै धूणो तो किसा लारै रैवो ? थरूं अणहूती फुरमाई ठोको'

—'इण में फुरमाई री काई बात, साची बात तो कैणी ई पड़ै।'

'कोयला खाय जिणरो काळो मूडो हुवै। आपणो इण सू काई लेणो-देणो ?'

'लेणो-देणो कोकर कोनी ? गाव किसो बिण रै ई बाप रो है।'

रामलो तिळ'गी लगावण मे हुसियार। उण नै पकडो ठा' कै बात में रंग लावण मारू घणा मिनखा मे ऊंडी बात कैवणी। उण चिलम री साफी समेटतै थकै भूमड़की चेपी—'सो म्हारी बात ई सुणो परी। इण गाव मे जीवसी जितरै तो ठाकर सजणसिंघ ई सरपच रैसी। ओरै मायं मे ब्याज भाई हुवै वो खिलाफत करज्यो। बाळ एक को रैवण देवै नी।'

गोळी निसाणै मायं लागी। रगहट धमकी सू उफणीज गया। जवानी रै जोस मे हाथ हिला-हिला'र बोल्या—'ए रामला, सुणजे परो, अंम जे ठाकर सरपंच परा हुवै तो म्हानैं असली री औलाद मती गिणजै। थारै ईज मूनर रो लेयधजै।'

पछै तो ठाकर रै खिलाफ धुआंधार प्रचार होवण लाग्यो।

ठाकर सजणसिंघ हुवा साथै बेंवणिया मिनख हा। थोड़ा तो भणण सूं अर घणा बाळपणे मे बम्बई मे वाणिया रै अठै चौकीदार रैवण सूं दो-चार अंगरेजी रा लफजा समेत बम्बैया हिन्दी बोलणो सीख गया हा। आडै-पाड़ै कुडोठ सू देखण सू सेठ. मीठो उत्तर देय रवानै किया। पाछा मारवाड़ आया। राजपूतां रै नाम माथै भू-स्वामी आन्दोलन मे उतर्या। सैर कानी आवण-जावण सू गाव आळा जोगो आदमी जाण सरपच बणाय दीना। पछै क्यूं पूछणा? टूटै भागे छपरियै री ठोड़ माळिया झुक गया। राज सूं करजो लेय'र ट्रैक्टर लेय लियो। बैंका मे खाता, पण सूजो इतरा कै हथेळी सू बोरडी रा बेर ई को उतरता नी। अठीनै सरपच होवण सूं राज रै अफसरा रो आवणो-जावणो लाग्यो रैवतो जिकै सूं पंचायत री आमद रा पीसा डकार'र अफसरा री मिजमानी करता। मिजमानी टाळ ऐलकार पूछै नी। पटवारी, मास्टर, ग्रामसेवक माथै धणियाप रैवै नी। इण टाळ गाव आळा माथै दबदबो पड़ै नी। दूजै बेली रै सरपंच बणता पाण राज करजो वसूल करणो सरू करै इण बात रो पण पक्को भो। इण सारू सजणसिंघ आयो इलेक्सन लड़ै।

पंचई इलेक्सन मे ठाकर नै राईरत्ती रा ई फोडा पड्या नीं। गांव रा दकियानूसी मिनख आंधै मे ग्याडा नी पडै जिनरै अकल ई कोनी आवै। आदमी रा माथा फदेई रस्तो नी छोडै नै हियै रा फूट्योड़ा कदेई लीक नी छोड़ै। भणियो-लिखियो भगवान जोड़ै हुवै, आ सोच पैलड़ो इलेक्सन भोळी जनता बिना किणी करामात रै ई जिताय दीनो।

दूजोड़ै चुनाव तक गाव मे खासा भणिया-लिखिया होयग्या। अबै ईसर रै मैळोड़ आळी बात किया चालै? चोधरिया रो एक छोरो ई आठवीं किताब पास कर'र कांगरेस री बाता करण लागग्यो हो। उथाई माथै रावळा रै सामै निकळतो अर राज रै अफसरां सू गिटर-पिटर बात करतो। चोधरी हुवै तो कांई हुवै? छोरो पक्को हुंसियार। तगड़ी-कुसमट पैरै अर धोळकी बीड़ी पीवै। घणी हूंस सू सजणसिंघ रै सामी सरपच रो चुनाव लड़ण री बाता करै। अबै कांई करणो रह्यो?

ठेवट सजणसिंघ रणछोड़ै नै कोटड़ी मे बुलवाय जल्लर उडाया। थाणै मे रपट लिखावण नै गयो जद थाणैदार आळै कायदै (?) मुजब ऊंचो-नीचो लियो।

रणछोड़ै थाणैदार रै खिलाफ रिपोर्टां ई लिखी, पण थाणैदार रै खिलाफ सुणाई कुण करतो? ठेवट मारो माग फूट्यो।

तीजोड़ै चुनाव मे उघाड़ै माथै नै ओछी तंगडिया वाळा छोरा घणा बधिया। रावळा में बोलाय फोड़ावण रो जमानो रयो नी। दिन इसा फोरा आया कै दुनियां री मति भ्रस्ट हुयगी। राजनीती री पारटिया रा बिना ठा' रा नेता टक्कै री टोपली पैर सरे आम खिलाफत करता। सजणसिंघ रै सामी सभा करता अर पंचायत री धूड़ उडावता। दिन इसा फोरा कै सरपंच नै कदेई वै सामी मिलता, तो सरपंच ई मुळक, हाथ जोड'र रामा-स्यामा करता। मारकूट तो मारकूट, किणनै ई तूं-तकार करण रो ई जमानो रह्यो नी। कई छापा मे छपै, कई इनक्वायरिया हुवै। अर जे वेळा-पुळ सामी परी डगगवै, तो वडेरा री इज्जत धूड़ मे परी मिलै। बामण-बाणिया री तो बात ई न्यारी, ढेड–भील रा माथा ई सूज गया है—ठाकर विचार मे पड़्या।

छेवट नोळी रो मूडो खुल्यो। बामणा रै ब्रह्मभोज होवण लाग्या। भावियां रै अमल री बोतलां खुली। चौधरिया रै नित अमला रा नतरा जावणा सरू हुया। मिन्दर मे लुगाया सारू कथा–भागवत होवण लागी। जूनी रीतां-भातां री बातां होवण लागी। भण्या-लिख्या छोरां अर नवी रीता री भूंडियां। इलेक्सन तक सरपच माखां नै हथेळी रै छालां ज्यूं राखण लाग्यो। खावै मूडो नै लाजै आख। इण भात सजणसिंघ तीजो चुनाव ई जीतग्या।

अंस चोथो चुनाव घणो जालम हो। एक देसावरी बाणियै रै फन्दै में आय, सगळी जात वाळा मिल, अमल गाळ, धरम सूं एक होय, द्वारका रा नाथ री आण खाय, ठाकर सजणसिंघ नै सरपच री गादी सू उतारण रो फैसलो कियो हो। सामैं ऊभो हुयो रिखवो बाणियो। देसावरी। गोरो-फूटरो। घणी लुळताई आळो घणो हसमुख। पीसां आळो। मदरास मे उणरी पेठवन्द फरम। आजादी रै पछै परमिट लाइसस भाग खोलिया। दो नम्बर रो धन्धो कर चार-छः लाख रिपिया जोड्योड़ा। खरच-खातै में ठाकर सूं सवायो। भलै मे साख घालण री पेठ। कोरट-कचेड़ी चढण रो अभ्यास अर रिपिया रा वा'ळा खळकावण री खमता। एक पेडला रै टन्टा में रिखबचन्द सजणसिंघ रै खिलाफ हुयो जिण सूं उणनैं पण चुनाव लडण री हूंस चढ़ी।

मिनख-डीठ रिपियै री दिखणा सागै मईनै में चार ब्रह्मपुरियां नूतरीजण लागी। भांवियां रै वास में रामदेवजी रो पक्को पेडको बंधीजग्यो। इग्यारस-अमावस जागणां होवण लागी। गांव रै अधबिच डाकघर रो कमरो बंधावण रो ऐलान कियो। चाय री होटला मडगी। आधै दिन चाय पियो, बीड़िया फूंको, रिखबचन्द रो परचार करो, पीसो देवण रो काम नी।

सजणसिंघ तो भूखो मरै। जाट री छोरी नै जुवार सा। म्हनै सरपंच बैवादो देखो तो घरी, पक्की डमकप नी बाद जाय, कुवा मे बोरिंग नी लागै, बीजळी री रोसणी सूं गाव चमकै नी—पळाक-पळाक ! रिखबचन्द कैवतो।

रिखबा कनै पीसो घर आज रा मिनख नै पीसै रो ईज पतियारो। मिनख धरणू हुवै ज्यूं आख्या फाड़'र रिखबा रो मूंडो देखता—अंम बस्ती रा भाग जाग्या है।

सजणसिंघ रै छाती माथै धक्को हाय। मगज काम ई को करै नी। माटीलै साफै अर बादीलै सरीर रा मरमट गळण नै ई हा। मूछा री मरट्ट निभणी दोरी। जोग फोरो आवै जद घर री नार ई दुसमण हुवै। ऐस दूजा री तो वाना ई छोडो, मायोमाय जात रा राजपूत ई मूडो परो फेरियो हो। कारी काई करू ? नरसीजी रै मामेरै री सावरिया नै लाज।

हां—मो करता चुनाव रो सागी ई दिन आयो। पंतडै दिन रै सुबागण-भागण आळी-वाळी रा सुगन लेय सजणसिंघ सागै रिखबचन्द ई फारम भरियो।

दूजै दिन वोट पड़ै। रिखबचन्द बुगला री पाखा जैडो ऊजळो परमसुख धोतियो पैरियो। माथै मलमल रो चोळो। चोळा में सोना रा बटण। केसरिया साफो। लिलाट माथै चन्नण री झीणी टीकी, आख्या माथै काळो चस्मो, मूडा माथै बिसवास री मुळक। सज-धज मिन्दर गयो। ठाकुरजी रा दरसण किया, पुजारी नै पूजा भणया रो सवा रिपियो दियो। उठा सू धरमसाळा मे बावजी कनै गयो। साता पूछी। पगा रै हाथ लगाया, माथै वासखेप नगवायो। मुळक'र कह्यो—'बावजी, जीत री आसीस देवो।'

'महाराज कह्यो—धरमर छै।'

मुळकता मोट काना लग पूगा। बावजी री आसीस।

मूगेजी मा'राज आपरै हाथा सूं वासखेप लगायो।

सजणसिंघ री काई मजाल म्हासू जीत सकै।'

गाव रै मिनखा रा रग-ढग देखता सजणसिंघ रै जीतण री उमेद राई-रती जित्ती ई को ही नी। बाजार मे रिखबचन्द रै माथा माथै वासखेप देख'र सजणसिंघ री धकल छोटी, धरम रै नाम माथै काई कोनी होवै ? मिनख तो माथा ई काट'र देवै है, आ तो फगत एक वोट रो सवाल है। अट गांव रै उतराद मिनखो ई ध्यान गया।

सोमवार मही मे गाव रा दस भैळा होयोडा। धरम मळै। विषमा सगीजै।

मनवारां हुवै । वातां चालै । गांव री वातां । चुनाव री वातां । ठाकर री भूंडियां अर नाजोगाई री वाता नै रिखवा रै जोगाई री, काज-किरियावर री वातां । लारला दो मईना सू गाव मे ग्रमल रिखवचन्द री कानी सू ई गळतो हो ।

मंढी में एक बाबाजी धूणी तापै । दूध रैबारी रो । इतरै दिन ग्रठा सूं पाच कोस दिखणादै-दूधियाणै तापता हा । उठै चेनी रै साथै भिस्टा खावतै किणई देख लिया, जिणसूं घणा दिनातर बाबाजी नै मंदा-लकडी खाणी पडी । रातो-रात न्हाट छूटा नहीतर लोग खाडाबूर कर देवता । घणा दिन बीत्यां वात दबी, जद ग्रठै ग्राय तपण लागा ।

बस्ती री सेवा करण ग्रर माखा रो मान "ाव्रण सूं बाबाजी रो घणो मान । मुफत रो माल खावण सू थुलथुलिजियोड़ो सादळो सरीर । चौड़ो लिलाट । धोळी, छाती लग ग्रायोडी डाढी । मूंडा मार्थ माता रा वण । ललाट में भसम-त्रिपुण्ड नै गळै में रुद्राक्ष री माळा । माय-माय ग्रजे दरसण करण नै चेलिया वेळा-कुवेळा ग्रावती. पण तो ई ब्रह्मचारीजी रै नाव सू छावा !

कदास ऊची-नीची वात चालिया मिनख कैंवता—'कोयला खाय जिणरो काळो मूडो । मिनख नै कुण नमै ? म्हे तो भेख नै नमा ।'

–'भेख, जको नारायण ।'

–'पगां हेठै माटी फोरी । पाप री बात मती करो ।'

सजणसिंघ पगरखा खोल जाजम माथै गया । उठा सूं ऊबा-ऊबा महादेवजी रै हाथ जोड़िया । मिनख मांयोमाय सानी कर'र चुप रह्या, पण किणई सरपचा नै ग्रावकारो दियो नी । ठाकर रो मूडो थाप खाय गयो । सवा मिनखा रो मूडो ई धोळो फक्क ।

ग्राभै मे बीजळी चमकै ज्यूं ठाकरा नै करामात सूझी । ब्रह्मचारीजी रा दोई पग झाल लिया ग्रर देवता रै सामी पसरतो होवै ज्यूं ग्राप लाबो लड़ाक पसरग्यो । ब्रह्मचारीजी नै एडो सनमान ग्रापरी ग्राखी ऊमर मे ई को मिल्यो हो नी । हरख-हरख-गळगळा व्हैग्या । ग्रासीस दीनी ।

तो ई ठाकर पग छांडिया नी ।

ठाकर कह्यो—'म्हनै तो ग्रापरै चरण रो रया चाईजै । हूं को नी मांगूं । म्हारै कांई कमी । वाणियै वासक्षेप लगवायो है, उण नै जीतण दो ।'

हाग-थाक होयोडा ब्रह्मचारीजो नै को सूझियो नी । धूणी री भसम लेय सजणसिंघ रै मार्थ नांखी । महादेवजी रै लिंग कानी हाथ कर कह्यो—हमैं उण धूणी धाळा नै ठा' म्हनै की खबर कोनी । बोलो—सनातन धरम री जै ।'

पळ भर में पासो पळटग्यो। सभा माथै जाणै जादू कर दियो होवै। सै री नाड़्यां में झणझणाट होवण लागी। सगळाई एकै सागै बोल्या—'सनातन धरम री जै।'

—'सनातन धरम री·········'

—जै ऽ ऽ।'

—'ठाकर सजणसिंघ री'

—जै ऽ।'

पलक पड़ै जितरा में काईं हुयो किणनै ई ठा नी पड़ियो। जै, जै रो रुख पळटग्यो। ढोल भर नगारा बाजण ढूंका। गुलालां उडण लागी। नवो उछाह व्यापड्यो।

पछै काईं हुयो, की कैवण री दरकार कोनी। एक 'जै' गाव नै पांच बरस लारै पटक दियो।

[illegible]

ईजतदार

कुरळाट सुणीजी, जद कोई खास बात को ही नी। आभो की रंग में
उणरी रम सू ज्यादा रो वखत को हो नी। म्हूं किसन रं भठं साहित री बहस
जरूर ही, पण द। साहितकारा रं बहस री महिमा न्यारी है। एक'र जो बहस में
मे उळझ्यांडो होमडी री मात तो दर किनार, दोन घर दुनिया सें' की भूल जावं।
उळझ जावं तो 'ज इमो है। मजो भो कै वहम करणिया खुद नै सें' सूं वेसी
वहम रो रम ईसें जद कै बुद्धि रो यां मूं इतरो ईज लेण-देणो है कै वं मखबार में
'बुद्धिजीवी' समझ्यांडी बात नै परसग भायां तोता वाळं दाई कह सकं। किसनराज
या किताया मे 'ज रो लेखक भागं कोनी देखं, पाछा नै देख'र चालं, इण सारू भाज
फंसतो हो कं भाज भगोडा होवं। लेखक पोतं ई मापरी रोज री जिन्दगी मे झट माथो
रा लेखका रा चक्कर लेवं। इण सारू लेखक रा पात्र ई झट देसी समझोतो करणिया
नमा'र राजीपो' जुग री नवी पीढी नै की रस्तो देखावण रै काबिल को होवं नी।
होवं भर थं नवामनोवृत्ति रोगी पीढी नै अलम देवं है, भो ईज कारण है कं भाज रो
लेखका री दब्बू मादर मान को पावे भी।
लेखक समाज मे, म्हनै भात-भांत रा दाखला सुण'र ई को जची नी। म्हैं कह्यो—
भा बात, रटी-पिटी बात बोलो। भाज रो नाजोगो भालोचक भणसमझी री
'थे तो तोता हो' बिना गाठ री भकल खरच कियां है ज्यूं री ज्यूं मान जावो।
घात करं भर थे कमर कस राखी है। इण रै सामा वितरा-वितरा मोरचा खुल्यांडा
लेखन तो भापडंण रै हर मोरचं माथं पूरी खमता सूं दर रोज लडाई लडै भर रोज
है भर यां जीव फोडा देवं। पण लेखक कोई भापबीती तो लिखं है कोनी, वो तो
ई घायल हो र। जिसो ईज लिखं। उणनै भापरं भसवाडै-पसवाडै जिस्यो समाज
जिसो समार देख्यो कायर है भगोडो है। वो तो उणारा चित्र ईज देसी। वो भापरं
दोमं है, वो सगरी दुनिया किया वणा सकं? म्हे कोई काळीदास तो हां कोनी कं
मन परमाणं ठूम लागं इण वास्तं भध-भूखी, भध-नागी, भासम-चाळा नै 'दयमधिक'
राजा नैं फूटरी 'पि तम्बी' कह देवां!
मनोज्ञा वल्कलेन
जि नै रीस भावणी वाजव ही। मिनख किणी साच नैं नी
किसनरभावं, भर बहस मे तो बिना रीस किया बात करण रो
जद उणनै रीस

आवै नी। उण तमतमा'र कह्यो—'क्यूं काळीदास नैं बदनाम करो हो ? ऐ, आज रा लेखक झूठ रो जाडो लबादो ओढ्योड़ा हो। या मे न तो खरो कंवण री ऊरळ है न खरो करण री औकात ! या रा हाथ-पग काम को करै नी, फक्त जबान ई जबान चालै, समाज नैं उत्तीस करण मे, काई मे आठो नाखण मे था नै मजो आवै। आज रो पाठक इतरो बेवकूफ कोनी ·····।'

इतरा मे तो हाको सुणीज्यो। एक लुगाई री डाडणो, दो-चार धोल पड़ण री आवाज अर एक गाळ—'चल तेरी मा की · ··· ।'

बहस कटगी। एक पळ छानो-मानो थाक म्हे दोनूं ई ध्यान सूं सुणण लागा। बाकई मे बारै को रामो हो। म्हूं ऊठ'र बारै निकळण लागो। किसनराज म्हारो बाहूडो पकड़'र बरज्यो—'कठै जावै ? आपला, ओ सहर है। अठै तो सो कयूं ईज चालै।'

म्हैं उणरा हाथ झटक बाहूडो छोडायो। जोध सूं धीफर'र कह्यो, 'थारै जिसा नाजर बैठा है जितरै अठै यूं'ज चालसी और हो ई काई सकै ! चिटकणी उतार, आडो खोल'र म्हूं कमरा सूं बारै आयो, अर बगला रा फाटक खोल'र म्हाटरो-सो घटो नै चाल्यो जठा सूं डाडणं री आवाज आय रई ही। किसनराज कमरै सूं बारै तो नीसर्‌यो, पण बगलं रो फाटक ढक'र फाटक री किंवाड़्यां थाम्यां ऊभो रहनै निरखतो रह्यो। उणरी आख्यां मे भी, चिन्ता नै जुगळ तीना सूं मिळ्यो कोई भाव हो। आख्यां ई आख्यां मे उण एक'र फेर म्हनैं बरजणो चायो, पण म्हैं गिनार्‌यो ई कोनी।

बंगलं सूं बीस-पच्चीस पावडा अळ्या रो'क बात है। सड़क रै दोळै ईज बगगी बगत री आता मे झटकवं एक बमरै रै पसवाडै दो मोटूयार एक लुगाई रै दोळै पड़्या हा। एक उणरो हाथ मरोड़'र बाथ मे भरण री कोसिस मे हो अर दूजो उणरी कुरती अर ससवार अळ्गी करण ताई अठै-तठै जोर लगा'र कपडा नै फाड रयो हो। मेह रो पाणी सडका मार्द पड़्यो हो अर लंप्पपोस्ट रा लट्टू सायद पैंना ईज फोड़ राख्या हा। आड़ै-आडै रै बगला री खिड़क्यां रै कांच सूं छण नै आवती धोमी रोसनी नै उण बंगला रै ठ्यां ईज रोड़ राखी ही जिको थोडो धुप अन्धारो हो।

अन्धारै नैं, एकलापै नै अर हिमायो भाव नैं देख'र म्हारै गुस्सापनं यो लगो एक'र को इकां पड़्यो अर मन होयो कै पाछो बगलं मे दोड़ जाऊं। पण यो उखरो योनो कै सरीर मन रो बंधो मानै ईज, सो मूंडा माय सूं ललकार नीसरी—'कुण है, रै !'

उणा चार-छः धौल जमा'र छोरी नै छोड दी अर इसा निरभै थका चालता म्हारै कनै आया जाणै आपरै घर सू आय रया होवै। आय'र खरी मीट सूं देखता थका म्हनै कह्यो—'क्या है रे, मादर ··· !'

लोग अणूतो ई कंवै कै चोर रा पग काचा होवै। उणां री गाळ सुण'र तो म्हारा पग काचा होयग्या। म्हैं हीमत कर'र निजर ऊपर उठाई। जिण गाळ काढी ही उणरै तग मोरी री पैंट, ऊपर रंगीन कुडतो, भरपूर डील-डोळ। चैं'रा माथै माता रा वण अर जाड़ी थकी मूछा। खीजियोड़ै पाडै जिसी उणरी लाल-लाल आंख्यां मे मोटा कोया देख'र एक'र सी'क तो म्हारी जवान चिपगी। सको हुयो कै जरूर इणरी जेब मे छुरी होसी अर अबार काढ'र म्हारै पेंट नै चीर देसी। पछतावो होयो कै इमी कुगत मे खाली हाथ म्हू किया पजग्यो। बढिया तो औ रैवै कै बगला रै माय जाय कोई लकड़ी रो धोचो हाथ मे ले लूं। हाथ मे हथेरण विना अठै तो मौत परतख ऊभी दीसै। घर आळां नैं तो खबर ईज मिळंला। म्हारै दोवणै किसनराज नै बापड़ा नै पुलिस तगडैना, जिको सिवाय मे। इतरै मे छोरी कानी मीट पडी। फाटोड़ी कुडती सू उणरै बोबां री बीटिया वारै दीसती ही अर चीरीजियोड़ी सलवार मांय सूं ऊंचामी थकी साथळ झाकती ही। कळपती थकी वा दोनूं ई छोरा नै बुरी तरै सू गाळा काढ रई ही अर गाबा ठीक करती ही। छोरी री इसी हालत देख'र म्हारो गंवारू जोस आपै मे को रह्यो नी। खरी मीट सूं उणरै सामी ताक'र कह्यो—'कुण हो रै थे ? उणनै क्यूं छेडो हो ?'

डर मे एक तारीफ है, आवाज तेज हो जावै। म्हारी आवाज ई इत्ती तेज निकळी कै म्हारै खुद रै काना मे बाजण लागी। पण वै इतरी तेज आवाज मूं ई इधकी तेज आवाज में बोल्या—'थारा बाप हा। थारी मा राड नै कै क्यू नीं मादर ··········, 'क ··········' उण एक कोझो इसारो क र्यो। अर इणरै सागै ई म्हारो गळो पकड़'र कनपटी मे मारण री मुद्रा मे सीधो म्हारी छाती कनां तक आयग्यो। जो म्हूं दो पग लारै नी सरक जावतो तो बम्नाट करती म्हारै कनफड़ा मैं पड़ जावती। उण म्हारो लारो कियो। म्हारै पड़ै-पड़ै जितरै तो सा'रै सड़क माथै एक मोटर नीकळी। आडै-पाडै चौकेर फाटका रै मांय ऊभा तमासो देखता चैंहरा म्हनै अर उण दोनां नैं ई एकै सागै दीठ्या। मोटर एकर सोक तो थोड़ी थमती निजर आई, पण हालात मूंघ'र सर्रर् करती ऊतावळी निकळगी। बंगलां में फाटकां कनै ऊभा मिनखां नैं आपरी करतूता देखता देख'र एक छोरै मोटरसाइकल स्टार्ट की, दूजो म्हारै कनै आयो अर म्हूं की समझूं-समझूं जितरै तो कालर पकड़'र एक झटको दियो अर सुर में चेतायो—'अपने जीवन का बीमा करवा लेना, कल तक। परसों तो साळे नरक में नजर आवोगे।' इतरो कह, छाती मे मारतै थकै ···

धक्को-सो देय, अपमान भरी होणी निजर सूं म्हनै देख'र रवानै होयो। म्हनै परसेवो चढ्यो। नबज तेजी सूं चालण ढूकी। काळजो धड़क-धड़क करतो इसो धड़कण लागो कै उणारी आवाज म्हनै खुद नै सुणीजण लागी। मोटरसाइकल चलाय फरं करता वै बेफिक्री सूं उड़ग्या।

छोरी आपरै कमरै में बड़'र किवाड बन्द कर लिया हा अर म्हैं बी सोचूं जिण पैलां खासा भला आदमी आपोआप रै बंगला रा फाटका सूं नीसर'र म्हारै कनै आयग्या। न्यारी-न्यारी भांत रा न्यारा-न्यारा सुर म्हारै कानां में ऊपरो-ऊपर पड़ै—

—'आज तो थे कमाल कर दियो। म्हे तो मांय नै जीमता हा। की सुणीज्यो ई कोनी। चळू करण नै बारै आया, जद आं गुण्डां नै फटफटियै पर जाता देख्या। आपनै थोडी सी क फेर हीमत करणी ही। साळा नै पकड़'र पुलिस रै हवालै करणा हा, जद मजो आवतो।'

—'बहादुर आदमी है, ना! बडी हीमत वाळा। इसा आदमी मोहल्लै रो शान होवै। आप किसै बंगलै मे बिराजो?'

—'म्हू तो रेडियो सुणतो हो, म्हनै तो ठा' ई को पड़्यो नी। जो म्हनै ठा' पड जावतो तो साळा नै मार-मार'र मुर्गा बणा देवतो। यूं कोरा हाका किया सूं कांई होवै सा?'

—'अजी आपरो तो बारै आवणो ई काफी हो। साळा सकल देख'र न्हाट जावता। आपनै कुण कोनी जाणै सा?'

—'आ छोरी कुण है? साळी कोई बदमाश रांड दीसै।'

—'इसी छोर्‌यां सूं मोहल्लो बदनाम होवै। छोरा ल्यारा बीगडै। आपणै टाबर इसा हाका-बो अर फीटी-फीटी गाळ्यां सुणै, जद वां पर कांई असर होवै?'

—'छिनाळ रांड है, सा! इणनै तो मोहल्ला सूं निकळावणी चाईजै।

एक जणो म्हारै बिल्कुल नजदीक आय आपरी हथाळी पर धापळी मार'र पूछ्यो—'माफ करजो, मोहल्लै मे तो दूसरा ई लोग रैवै है, आपनै ईज इतरी उलेखणा किया चाई? आपरै घारम मे की टर्म तो कोनी?'

सुण'र जाणै करेन्ट लागो होवै। इणरो जोरदार रीस घड़ी कै मन मे आयो साळा रै मुण्डा मांयं थाप-थाप'र जूता मारूं। कान ई गिरगण लागा। पण म्हूं चुप ईज रह्यो, की बोल्यो कोनी। एक अजीब पिरण्डा पर भो रै मांयं म्हनै भो गहर भहाराणा किसो दीवण लागो।

हाज भाग-भाग री बोल्ड म्हनै चमगीयो बजावण रो काम करतो हो—

—'असल मे आप अठा रा दीसो कोनी ! कठै रैवो हो ?'

—'ओह ! अजाण आदमी नै यूं मदमाख्या रै माळा में हाथ नी घालणो चाईजै ।'

—'थे नवा हो, जको जाणो कोनी कै ऐ कुण है । बाकी आं नै वरजण री हीमत कुण कर सकै ? साळा मिनख री गावड़ वाढ़'र गटर मे फैंकता एक मिनट ई कोनी लगावै ।'

—'अरै भाईजी, वो रामनिवास बाग कनै कतल होयो हो नी, वो इणां ईज कियो हो । यूं ईज किणी छोरी नै स्कूटर मार्थ जोरांमरदी ले जाय रह्या हा । वो पत्रकार इणा ज्यूं ईज भलाई करण चाल्यो हो । आं नै वैं'रा नै बरज दियां । उणनै बापड़ा नै काईं ठा' हो कै आज जीवण रो छेलो दिन है ।'

—'धमकी तो आ नै ई दे'र ग्या हा । देखो, आगै कांईं करै है ? पण आप घबराओ मती आप तो पुलिस मे रिपोर्ट करो जी !'

—'रिपोर्ट किया कांईं होसी ? मजैदारी इणमे है कै दिन ऊगता पैला ई बोरिया बिस्तर ले'र आपरै गाव पधारो । पुलिस मे रिपोर्ट करोला जद पुलिस पैला तो था नै ईज उठै बैठा देसी, रगड़सी, सतरै बाता सतरै भांत सूं पूछसी, अर जो तहकीकात मे अठै आय ई गया, तो ऐ सगळा मिनख आपोआप रै बंगला मे यूं ईज बन्द हो जासी, ज्यूं पांच मिनट पैला बन्द हा । आ सै भला मिनखा री बस्ती है, अठै किणनै आप वाळै दाई पराई पचायती मे पड़'र कोर्ट-कचेड़िया मे भटकण री फुरसत है ?'

आ बात सुण'र डर सूं म्हारो मैं'रो पाकै पान ज्यूं पीळो पड़ग्यो ।

—'यूं डरपावो मती भला आदमी, थोड़ी हीमत बंधवावो जी ! पुलिस मे रिपोर्ट नी करा जद ईज तो देस मे इतरी गुण्डागर्दी बधै । आप मत घबराओ जी, मरणो एक वार है, मार देसी तो झगट मिटसी । इसा ससार मे सुख ईज कांईं है कै मरणै सूं डरा ? आप तो पुलिस मे रिपोर्ट करो ।'

—'आ छोरी रांड छळियार है ।' एक सुर पाछो दूजो राग मार्थ आयो—'आ मार-पीट पीसा-टकां नै ले'र हुई होसी, बाकी झगड़ै रो कांईं बात ? आ तो अठै चवळो चलावै है ।'

मुसीबत में पड़योड़ी एकली छोरी मार्थ ओ कलंक लादणो म्हनै पचियो कोनी । काळजा में आ बात इसो चूभी जाणै बीच्छू रो डंक । तिरमझाळ लागी । ऊकळनै कह्यो—'आप किणी री ईजत नी बचा सको तो कोई बात कोनी, पण बापड़ी अबला जात मार्थ इसो कोझो इलजाम लगावणो ठीक कोनी ।'

—'थे क्यूं चिड़ो ! थांरै किसी वैन लागै ?'

—'इसा ई ऐ दीसै है—एक मूंडो चाब-चाब नै बोल्यो—'गवार तो म्हे इसा जणा आपरै भींड़ हा, जद गळो पकड़'र ई छोड़ दियो, नीतर काढो काढ देवता, काढो !'

—'आ रो दोस कोनी, गवार है, गवार ! आप बड़ा आदमी हो, आं नै क्यूं मूंडै लगावो ?' एक आदमी वानै बरजता थकां कह्यो।

दूसरो, मोट्यार सो दीसतो छोरो, म्हनै घड़ी-घड़ी उकसावतो हो—'आप तो पुलिस ...... ।'

'पुलिस में गमा काई होवै ?' बीच में ई कोई तीसरो समझदार घर सेंग होवण री बोली में बोल्यो—'चोर-पुलिस सब एक होवै । चोर नै गुण्डा तो बापड़ा रात रा ईज चोरी नै गुण्डागर्दी करै, पण इणारी तो गुण्डागर्दी चोबीसूं घण्टा चालती रैवै । पो ई होवा, आप बच नै रईजो । इणमें ईज समझदारी है । पुलिस तो बापड़ी काई चीज है, आं री चोंच घणी ऊंची होवै । जित्ता मवो माल आगै पूगावणो ईज आं रो धन्धो होवै । इणां री गुणना आपणो कुण गुणं ? आंधा धकै रो'र धाळ्या गमावण में काई सार ? हां, जो कठैई इणारै बस में पड़ग्या, तो मारूंला नी, तो हाथ-पग तो तोड़ ईज नाखैला । पछै थो मत कैजो कै किणी समझाणै सिवाय म्हनै चेतायो कोनी ।'

जिनरै में तो, वै गया हा उणीज रस्तै सूं एक फटफटियो आवतो दीख्यो । फटफटिया री आवाज सूं डर'र मैं मिनख दबादब ल्हाट'र जल्दी सूं आपोआप रा बगला में बड़ग्या । म्हारो ई काळजो धूजै लागग्यो । वै आपरै साथियां नै लै'र आया दीखै । अब तो मरणो है ईज, पछै काई डर ! म्हूं ऊभो हो'र फटफटिया कानी देखण ढूको । फटफटियै पर वै कोनी, कोई दूसरा ई हा । आपरै रस्तै निकळग्या । म्हनै थोड़ी नरमी हुई ।

बारळा फाटक बन्द होग्या हा । म्हूं जिमनराज रै घर कानी टुर्यो । काळजै री धड़कण हाल तेज ही, पण म्हूं जिमनराज सामी मूं अबड'र आवणो चावतो हो, जाणै कांई बड़ो ओखो काम जीत'र आयो होवूं ।

जिमनराज हाल तक दरवाजै ईज ऊभो हो । उणनै देख'र म्हैं मुळकण री कोसिस करी । कह्यो- 'आछा म्हारा भायला । छोरी री ईज्जत रै'गी ।'

जिमनराज रो मूंडो कुमळाई सूं माथो हिलायो । बेरूखी सूं बोल्यो—'थे तो ठीक होवो वै च्यार आदमी घर न्हाटग्या, नीतर आपरो तो बगन हो आवतो

तो की नी, म्हांनै अठै काम-धन्धो छोड'र कोरट-कचेड़ियां मे रोतो फिरणो पड़तो। अठै टाबरां नै पाळां कै कचेडिया में रुळता फिरा ?'

कंवतां-कंवता उणां रो मूडो कड़वास सू भरीजग्यो।

म्हारै हिवड़ा में उणां रा आखर तीर होवै ज्यूं ऊतरग्या। उछाह'र भौ, सैं' क्यूं खतम होयग्यो। एक अजीब उत्तेजना सूं भरीज'र म्है किसनराज रै चैं'रा सामी जम'र देख्यो। पथराई थकी किसनराज री आंख्यां टकटकी लगा'र सामली सडक नैं देखै ही। म्हारै सामो देख्यां बिना ई उण की रुक नैं कह्यो—'आपरो काई' ! आप तो अठै दो दिन सारू पधार्‌या हो, गुण्डां सागै गुण्डा बण जावो, तो पोसा जावै। पण म्हांनै तो अठै ई रैवणो है, ईजतदार मिनख हां, घर मे लुगाई है, मोट्यार छोर्‌या है। ऐ गुण्डा कदेई कठैई मामूली सी'क खुराफात कर देवै तो म्हारी काईं ईजत रैवै ?'

म्है म्हारै कसूर रै भार सूं गाबड नीची कर दी, अर म्हारी थैली संभाळण लागो।

❁❁❁❁

भड़ूरा

जद सूं बसां चालणी सरू हुई है, मिनखां रा तो जाणै पग ईज परा भांगा है। पेट में पूरो धान भलांई मती पड़जो, पण आवणो-जावणो होवै तो बस में ईज होवै। म्हारा काकोसा मिळा सुणी सोळै कोस रो गेड़ो कर आवता, पण म्हारै तो दो कोस जावण सारू ई बस चाईजै।

जेठ महीना रो ऊजळो पख। परोड़िया सूं ईज तपती ही। सूरज निकळ्यां पछै तो धरती लायो हुवै ज्यूं बळण लागी। म्हूं गांव सूं दोय कोस पाळो चालनै आयो हो। तपन सूं म्हारो मूं'ड़ो लाल चिट्ट पड़ग्यो हो अर माथा में तणाटी चालती ही। मन में बळतै-बळतै ऐड़ो अबगो गांव बसावण सारू बडेरा नै गाळ्यां काढी। रामसारूं इसो अबगो गांव क्यूं बसायो, जठै बस पकड़ण सारू ई दो कोस पाळो चालणो पड़ै। आपड़ा बडेरा नै किसो बेरो हो कै उणारै म्हारै जिसा निपोचा नाजोगा परवाड़्योड़ा पूत होवैला।

तनेई री नवी बचूनारी भिणी भाजणी सिमट्योड़ी ठिया मे बस री बाट जोवण रै डेढ घण्टा रै टप मे म्हारै मूं'ड़ा रो कीमती क्रीम पाउडर तो उतरग्यो हो अर पसेवा री क्रीम अर धूड़ रै पाउडर रो जाडो लेप पोतीजग्यो हो। थाकी वेळा पछै, म्हारो कोई सेर डोढेक लोही बाळ'र मोटर आई। रब-रोगण उड्योड़ो, खिड़क्यां टूट्योड़ी, जगां-जगां सूं पतरा उधलीग्योड़ा। सावचेती सूं नहीं चढो तो कपड़ा तो फाटै ई, लागै जको सिवाय मे। आजकाल डाक्टरां सी'र लागण सूं 'टिटनस' होवण रो बैम केर ध्यारो ई घाल राख्यो है, अर मूं ई चार आगर मग्योड़ा रै भी तो कोई पार नीं।

म्हारै देस में बधती जनसंख्या रो अंदाज कूंतणो चावो तो रेलां-बसां री भीड़ सूं कूंतणो चाईजै। इण बस में ई गाडरां भरीजै ज्यूं मिनख भरीज्योड़ा। नीचै तो पग राखण नै ई ठोड नीं, पण तो ई मिनख छात माथै बागळ चिपटै ज्यूं उलट'र बस रै चेठ्या। *जोवा रै पग हेठै किणी रो पग है कै मोड़ो, कुण ध्यान राखै?* बस मे ड्राईवर री सीट आगली माताजी री एक छवि ही अर उणरै नीचै ईज पाटकड़ी माथै लिख्योड़ो हो—'भगवान् आपरी यात्रा सफल करे।' पण बस रा ढग-ढाळा देख'र लागतो हो कै संदेह जीवन री यात्रा खतम नीं हो जावै, इण बैम चालो हो।

बस में टावर कूकिया करता अर लुगायां नैं मोट्यार आपस में बरवाळा करता मछली मार्केट री छिब नैं मदो करता लखावता हा। दो-एक मोट्यारा रैं हाथा में डाग ई ही जको जो थोड़ो घणी ई चूकतो तो किणनैं ई काणो करण में कसर को राखतो नी। गाबा भलाई सूगला अर फाटोड़ा पण हाथा मे चादी री माठ्या अर गळा मे हसली पैंर्योड़ा मोट्यार जीव ज्यूं हाथा मे डाग नैं जरू कर राखी ही। पीळी पाघ बाध्या एक सेठ अर हाथा-मूडा मार्थ लीली टीकिया खोदा'र आपरैं माता रैं दागं वाळैं रूपाळैं चैं'रैं नैं नेर रूपाळो बणाया एक देवासी मर्जं सू बीड़ी सटकावता हा। बीडी रैं धुअैं सू म्हारो फकत जीव ईज अमूझतो, तो तो म्हू चुप-चाप बैठो रैवतो, पण छोटी सी'क तिळगी मू म्हारैं टेरेलिन रैं कपड़ां माथै दाग लागण रो पूरो खतरो हो। म्हू राज रो मामूली नौकर! नीठा-नीठ गाया रा भैंस्या मे अर भैंस्या रा गाया में कर-करा'र दुनिया मे ईजत बधावण सारू ओ एक ईज नकटी रो नाक टेरेलिन रो वेस करायो हो। करजो तो खैर होवणो ईज हो, पण घणा दिना री रळी पूरी। इण वेस रैं बोगडण रो सहणो म्हारैं बूतं रैं बारैं हो। यूं चार आखर भण्योडो, अगरेजी बोलणो जाणतो हो, इण रो पण मन मे खरो घमण्ड—म्हारी परवा किया बिना ईं ऐ उज्जड यूं हस-हस'र बीडी पीवै, जको तिणक'र कह्यो—'बस मे बीड़ी मतना पीवो। देखो कोनी, काई लिख्योडो है—'बस मे बीडी-सिगरेट पीना मना है।'

—'क्यूं को पीवा नी? थू जा रैं टका री पीवा हा।

—'बस मे बीड़ो पीवण रो कायदो कोनी।'

—'जा, रैं! देखी परी थनै कायदा री बऊ नैं।' एक कह्यो।

—'बस काईं थारैं बाप री है?' पाछै ईज दूजो ई बोल्यो।

—'ऐडा तरसिंग जी हा, तो कार मे आया होवता।' काळजो चीरतो-सो तीजो सुर सुणीज्यो।

चौथो म्हारैं सामैं देख'र यूं मुळक्यो जाणैं म्हूं अजायबघर सू आयो होवूं।

रीस सू म्हारो डील धूजण लागो। आंख्यां माल चिट्ट पड़ग्यो। सोडा लैम र री बोतल फूटती होवैं ज्यूं जोर सूं कूक'र कह्यो—'म्हूं थानैं कैवूं हूं कै थे बीड़ी को पी सको नी। राज रो कायदो है।'

एक सुर कह्यो—'देख्यो थनैं बाईमुछा नैं, अर थारैं राज नैं।

पासा मिनख ठठा'र हसण लागा।

म्हारो जीव तिळमिळावण ढूंको। फाड़ूं'क खावूं। म्हूं इतरो भण्यो-लिख्यो

घर ऐ बेसऊर नाड़ म्हारो कूतरा जितरो कायदो ई को राखै नी। रीस खाय'र बोल्यो—'जबान संभाळ'र बोलो।'

पछै तो जवान इसी सभळी कै घणा मूंढा सूं थूक उछळण लागो।

घणो रोळो होवता देख फाटोड़ै बुस्सट घर काळै मूंहड़ै रै कण्डक्टर कह्यो—'काई बात है ? रोळा क्यूं करो हो ?'

'कण्डक्टर सा'ब, ग्रांनै बीड़ी पीवण सूं रोको'—म्हैं कह्यो।

'इण रा बडेरा ई म्हानै बीडी पीवण सू को रोक सकै नी।' बीच मे ई कोई बोल्यो।

—'चुप रै, साळा निगरकिरट।'

—'निगरकिरट थूं नै थारो बाप।'

—'थारो बाप।'

—'थारो बाप।'

—'ग्रो घणं कुदड़कै चढ़ियो है, कोई जरकाग्रो रै!' एक सपड़ सुर।

भीड़ घर गुस्सा मे प्रकल को होवै नी। किणंई म्हारो हाथ पकड़्यो। किणै ई दो-चार जरकाय ई दीनी। किणं ई कांठियो पकड़'र इसो ताणियो कै बटण ई परा टूटा।

बस मे बैठोड़ा घामा मोट्यार म्हारी ग्रा दुरगत देख'र हंसण ढूका। बां री मुळक जाणै पेटरोल मे सुळी लागी। बेईजत सूं म्हारो सुर तो की मन्दो पड़्यो, पण तो ई म्हैं जोर दे'र कह्यो—'कण्डक्टर सहाब कै तो इणनै बीड़ी पीवण सूं रोको घर कै कम्पलेन्ट बुक देवो, म्हूं थांरी थोड़ निवड़ूं।'

कण्डक्टर गिनार ई को करी नीं।

'जेवड़ी बळी परी, पण बट को गयो नीं'—किणी फेर टोळो जरकायो।

'थे कुणी कोनी ?' म्हैं पाछो रीस सूं उफण्यो।

'छाछ भाण झूंपड़ी नै तारापट्ट नाम'—कण्डक्टर उपेखा सूं कह्यो—'बाळण जोगो मूंडो तो देख्यो है'क कम्पलेन्ट करणियो रो।'

—'थे कम्पलेन्ट बुक देवो कोनी ?'

—'थारै जेड़ा निराई धानिया-मगवानिया फिरै है, किण-किण नै कम्पलेन्ट बुक देवूं।

'तद मार नै देणी पड़सी।'

'जा, रे ! देख्यो थनै बाऊसंख नै !'

'तो ठीक । इण रूट माथै बस चलावणी भूल जावोला ।'

'लो, सा ! रावड़ी ई कँवै म्हनै दांतां सूं खाम्रो ।'

बस रै परलै नाकै दो-तीन जणा ऊभा बगाया लेवता हा। उणां नै बैठण री ठौड को मिळी ही नी । वै ई म्हारै ज्यूं थोड़ा पढ्या-लिख्या दीसता हा। म्हारा भीड़ होय'र बोल्या—'म्राप कम्पलेन्ट लिखो । म्हे थारो साथ देसा ।'

'बडी नालायकी है सा' म्रा री ! म्रादमी रै साथै तमीज सूं पेस म्रावणो ई को जाणै नी ।' दूजै कह्यो ।

'म्राप लिखो तो स ा । साळां री छकड़ी नईं भुलाय दूं तो म्हनै कईजो । ट्रैफिक इन्सपेक्टर म्हारो खास दोस्त है ।' तीजो बोल्यो ।

'चोर कुत्ता सगळा एक है । कीं ई करो, म्रा रो काईं बीगड़ै ?'

'इणी'ज रूट माथै तीन-तीन थाणा पड़ै, पण ये देखो कोनी, गाडरां होवै ज्यूं मिनख भर राख्या है। इणा रै कपड़ा भर परेवा रै बास सूं म्हारो तो जाणै माथो फाटै !'

'हाल कोई मिळ्यो कोनी, सा' ! नईंतर कदेई सगळी छकड़ी भूल जावता ।'

००

बीच में एक ठेमण म्रायो । म्हारी बस रो ड्रेवर बठै ऊतर'र एक लोड रै ड्रेवर सागै बातैं वळियो, तो वळियो ई वळियो । टीटी होटलड़ी माथै बैठ'र उठा रा मेळ-मुलाकातिया सूं हंस-हंस'र बाता कर रह्यो हो । दोनूं बेपरवा । माय बैठी एक लुगाई नै ऊबको म्रायो भर घरड़ड करनै उल्टी होयगी । मोटर मे यूं ई धुम्रै भर खोटी बास री कोई कमी को ही नी, उणरै उल्टी करण सूं खटियास भर्योड़ी भूंडी बास मिनखा रै माथै में तरणाटो बोलावण लागी ।

पैसेंजरां नै भिड़ावण नै म्हैं एक तीर छोड़्यो—'देखियो सा' जुलम ! पैसेंजरा री तो बापड़ा री हालत खराब होवै, भर इणां नै मिसपरियो करणी सूझै है !'

—'पैसेंजर म्राप ऐड़ा ईज नाजर है, सा' ! नईंतर इणां बापड़ां री काईं मजाल कै एक मिनट ई वत्ता ठैर सकै ?'

—'नाजर कांई, बापड़ा म्रनपढ़ भर गरीब है । इणा रै तो पेट रो पम्पाळ ई पूरो को होवै नीं । ऐ सिकायता कर-कर'र कठै-कठै रोवता फिरै ?'

अर ऐ वेसऊर नाड़ म्हारो कूतरा जितरो कायदो ई को राखै नीं। रीस खाय'र बोल्यो—'जबान संभाळ'र बोलो।'

पछै तो जबान इसी संभळी कै घणा मूंढा सू थूक उछळण लागो।

घणो रोळो होवतां देख फाटोड़ै बुस्सट अर काळै मूंहडै रै कण्डक्टर कह्यो—'काई बात है? रोळा क्यूं करो हो?'

'कण्डक्टर सा'ब, आनै बीड़ी पीवण सू रोको'—म्हैं कह्यो।

'इण रा बडेरा ई म्हानै बीड़ी पीवण सू को रोक सकै नी।' बीच मे ई कोई बोल्यो।

—'चुप रै, साळा निगरकिस्ट।'

—'निगरकिस्ट थूं नै थारो बाप।'

—'थारो बाप।'

—'थारो बाप।'

—'औ घणै कुदड़कै चढियो है, कोई जरकायो रै!' एक अपढ सुर।

भीड़ अर गुस्सा में अकल को होवै नी। किणीई म्हारो हाथ पकड़्यो। किणै ई दो-चार जरकाय ई दीनी। किणै ई बांडियो पकड़'र इसो ताणियो कै बटण ई परा टूटा।

बस में बैठोड़ा खासा मोट्यार म्हारी आ दुरगत देख'र हंसण ढूका। वां री मुळक जाणै पेटरोल में तुळी नांखी। बेईजत सूं म्हारो सुर तो की मन्दो पड़्यो, पण तो ई म्हैं जोर दे'र कह्यो—'कण्डक्टर सहाब कै तो इणनै बीड़ी पीवण सूं रोको अर कै कम्पलेन्ट बुक देवो, म्हूं थांरी खोड़ लिखसूं।'

कण्डक्टर गिनार ई को करी नी।

'जेवड़ी बळी परी, पण बट को गयो नी'—किणी फेर टोळी जरकायो।

'थे सुणो कोनी?' म्हैं पाछो रीस सूं उफण्यो।

'छाण माण झूंपड़ी नै तारागढ़ नाम'—कण्डक्टर उपेक्षा सूं कह्यो—'बाळण जोगो मूं'डो तो देख्यो है'क कम्पलेन्ट करणियां रो।'

—'थे कम्पलेन्ट बुक देवो कोनी?'

—'थारै जेड़ा निराई धानिया-भगवानिया फिरै है, किण-किण नै कम्पलेन्ट बुक देवूं।'

'अठ मार नै देणी पड़सी।'

'जा, रे ! देख्यो थनैं बाऊसंख नै !'

'तो ठीक । इण रूट माथै बस चलावणी भूल जावोला ।'

'लो, सा ! रावळी ई कैवै म्हनै दांता सूं खाम्रो ।'

बस रै परलै नाकै दो-तीन जणा ऊभा बगामां लेवता हा । उणा नै बैठण री ठौड़ को मिळी ही नी । वै ई म्हारै ज्यूं थोडा पढ्या-लिख्या दीसता हा । म्हारा भीड़ होय'र बोल्या—'आप कम्पलेन्ट लिखो । म्हे थारो साथ देसा ।'

'धड़ी नालायकी है सा' आ री ! आदमी रै साथै तमीज सूं पेस आवणो ई को जाणै नी ।' दूजै कह्यो ।

'आप लिखो तो स'ी । साळा री छकड़ी नईं भुलाय दूं तो म्हनै कईजो । ट्रैफिक इन्सपेक्टर म्हारो खास दोस्त है ।' तीजो बोल्यो ।

'चोर कुत्ता सगळा एक है । की ई करो, आ रो कांई बीगड़ै ?'

'इणी'ज रूट माथै तीन-तीन थाणा पड़ै, पण ये देखो कोनी, गाडरां होवै ज्यूं मिनख भर राख्या है । इणा रै कपड़ां अर परेवा रै बास सूं म्हारो तो जाणै माथो फाटै !'

'हाल कोई मिळ्यो कोनी, सा' ! नईंतर कदेई सगळी छकड़ी भूल जावता ।'

००

बीच में एक ठेमण आयो । म्हारी बस रो डरेवर बठै ऊतर'र एक लोड रै डरेवर सागै वातै वळियो, तो वळियो ई वळियो । टीटी होटलड़ी माथै बैठ'र उठा रा मेळ-मुलाकातिया सूं हस-हस'र बाता कर रह्यो हो । दोनूं बेपरवा । माय बैठी एक लुगाई नै ऊबको आयो अर धरड़ड़ करनै उल्टी होयगी । मोटर में यूं ई धुबै अर खोटी वास री कोई कमी को ही नी, उणरै उल्टी करण सूं खटियास भर्योड़ी भूंडी वास मिनखा रै माथै मे तरणाटो बोलावण लागी ।

पैसेंजरा नै भिडावण नै म्हैं एक तीर छोड्यो—'देखियो आ' जुलम ! पैसेंजरा री तो वापड़ा री हालत खराब होवै, अर इणा नै मिसखरिया करणी सूझै है !'

—'पैसेंजर आप ऐड़ा ईज नाजर है, सा' ! नईंतर इणां वापड़ां री कांई मजाल कै एक मिनट ई बस्ता ठैर सकै ?'

—'नाजर कांई, बापड़ा अनपढ अर गरीब है । इणा रै तो पेट रो पम्पाळ ई पूरो को होवै नीं । ऐ सिकायतां कर-कर'र कठै-कठै रोअता फिरै ?'

—'इस रेडटेपिज्जम ने देश को बरबाद कर रखा है। साला कोई सुनता ही नही। आप कम्प्लेंट कीजिये मैं आपका साथ दूंगा।'

इतरा में कण्डक्टर ई आयग्यो। कह्यो—'जा रे फगलो, कम्पलेण्ट कर दीजे, नै थारै सगळै हिमायतियां नै ई ले'र आईजे। जो चूकियो तो भंगा रै मूत रो होवैला।' कण्डक्टर को गरम हो'र चैलेन्ज दियो अर पछै मुळक्यो।

'ठीक है! छानो रै बेटा, ओ आयो जोधपुर'—म्हारै साथीड़ै उण चैलेन्ज नै मन्जूर कर्‌यो।

□□

घण्टा डोढेक में जोधपुर आयो। डामर री सडका काळी जीभ वाळी डाकणां होवै ज्यूं अपार मिनखा नै डसै। पैसेंजर उबासियां ले'र त्यार होवण सारू आळस मरोडै। ठेसण आयो। मोटर रुकी। फुटपाथ माथै नैना-नैना टींगर अर मैला चीथडां सूं कडियां छिपायां भूगला मिनख पैसेंजरां सामी हाथ पसार'र मांगण लागा। आड़ै-पाड़ै पोटा, लीद, गू अर कादो बिखर्‌योडो पड़्‌यो हो। नाळियां में कीड़ा कुळबुळावता हा—फुटपाथ माथै पड़्‌या मिनखा रै ज्यूं रा ज्यूं।

सगळा जातरियां सागै म्हूं ई मोटर सूं उतर्‌यो। अपमान सूं हिवडै दाम लागी ही। की न की करणो जरूर चाईजे। म्हैं म्हारै मीड़ आ नै पकार्‌या—'म्हूं अरजी लिखू हूं। सिकायत करसा। थे म्हारै सागै चालो।'

'अरै, मरण दे, यार! इतरो फालतू टेम किण कनै है?' एक कह्यो।

'थानै वेळा कोनी तो मत चालो, म्हूं अरजी लिखूं, उण माथै सही तो माड दो – म्हैं कण्डक्टर कनै कम्पलेन्ट बुक मागी अर उण को दी नी।'

म्हारै सामी देख्या बिना ई वो रिक्सै मे बैठ'र बोल्यो—'ए रिक्से, चलो।'

घणे रोब सूं योलणियै भैस रै डोळी जैडै धरमै वाळै कह्यो—'आ है भाई कै म्हूं तो गवाही को दे सकूं नी। म्हारै तो दस सू पाच बज्या तक री दफ्तर मे डिप्टी बोर्ल। इण मोटर मे म्हूं किया आ सकूं?'

ऐ वै ईज साहब हा, जिको चोर कुत्ता एक बतावै हा। म्हैं अचभा सू वां रै सामै जोयो।

सगळा ई पोत-पोता रो समान ले'र आपो-आप रै रस्तै लागा। नाड नीची किया उदास भाव सू चालतो म्हूं पाड़लै नाळै रै कादा मे किलोळ करता भडूरा नै निरलेप निजरा सूं ताकू हूं।

□□□□

भरम

आप प्रकासराजजी सा' नै कोनी जाणो ? आप ई किसी बात करो हो ? नवा आदमी दीसो, बाकी कुण है जको इण सहर मे, अर कार्यकर्ता रै रूप मे गिणो तो जिलै मे, अर राजनैतिक हस्तिया रै रूप में तो प्रान्त में अर प्रान्त में ई काईं पूरै देस में प्रकासराजजी रो नाम नी जाणतो होवै। ओ तो आपणै देस मे पत्र-पत्रिकावा माथै पूंजीपतियां रो एकछत्र राज है अर पत्रकारिता री प्रपन्ची लोगा रै स्वारथ साधणै रो धन्धो है अर अठारो पत्रकार देस री माटी मे मिळ'र काम करणिया लोगां रो आपरी पत्रिका मे जिक्र करण सारू जागरूक कोनी, अर की प्रकासराजजी सा' ई आपरै जुग मे फिट आदमी कोनी, जमानै नै समझै ई कोनी, जको आत्म-विग्यापन अर आत्म-प्रचार सूं सैंकड़ा कोस अळगा रैवै, बाकी आं री सेवा नै देखा, आ री लगन नै देखां तो रोज-रोज नी तो महीनै में, अर महीनै मे ई नहीं तो बरस मे एक बार तो आं रो फोटू आं रै भासण समेत देस रै प्रतिष्ठित दैनिक अखबारां मे छपणो ईज चाईजै। आ बात म्हूं नी, प्रकासराजजी सा' खुद ई कैवै—'भाई सरमाजी, म्हू तो पत्रकारां रै फरज री बात कैवूं, बाकी आपणै काईं, छापै तो वा' भला, नी छापै तो वा' भला। वां री गरज होसी तो मतैई छापसी, आपणी गरज तो कोई छापै कोनी। पण तो ई इसी पत्रकारिता रै कारण ईज अन्तर-राष्ट्रीय जगत मे आपणै देस रै पत्रकारा रो मान तो घटै ई है ! है'क नी ? बाकी लारलै दिनां म्हैं 'अन्तर्राष्ट्रीय ग्राम विकास-मण्डल' मे 'ग्राम-विकास मे प्राथमिक शिक्षा का महत्व' माथै भासण दियो जद इण समाचार नै अमेरिका रै 'सण्डे टाइम्स' छाप्यो हो। उणा तो बापड़ां छापण वास्तै फोटू ई मागियो हो, पण सरमाजी, थे ईज बतावो, म्हू किण-किण नै छापण नै फोटू देतो फिरूं ? वानै गरज है तो फोटू पाड़ो अर ले जावो, नीतर इसै मैंगीवाड़ा में आपणै सू फोटू को देरीजै नीं !'

म्हैं अचम्भै सू पूछ्यो—'आप अन्तर्राष्ट्रीय ग्राम-विकास मण्डल' रा मेम्बर हो ?'

'मेम्बर !' म्हारी नासमझी माथै मुळकतां उणां कह्यो—'म्हैं इणरो वाइस-प्रेसीडेन्ट हूं। प्रेसीडेन्ट अमेरिका रा एक मता मिनख है अर सेक्रेटरी ... आसा विद्वान् !'

म्हूं बरगू होवै ज्यूं आंख्यां फाड़'र उणा रै सामीं देखतो रह्यो। वै कैवण लागा —'आप तो गावा मे रैवो, आपनै मालूम है कै जठा तक शिक्षा रो प्रचार नी होवै, लोग पढण-लिखण नी लागै जितरै कोई सो ई देस तरक्की कोनी कर सकै। म्हैं इण बाबत दूजा-दूजा मुलका रै समाजसेवी विद्वाना रो ध्यान अठीनै खांचियो, अर वा री चिट्ठियां आया मूं मण्डल री थरपना करी। जापान अर इंग्लैण्ड वाळा विद्वान तो म्हनै ईज प्रेसीडेन्ट बणावणो चावता हा, पण सरमाजी, आपानै पद सू काई लेणो-देणो? म्हैं कह्यो, थे थारै प्रेसीडेंट बणो-बणावो, म्हनै पद सू कोई मोह कोनी। म्हैं तो सेवा करणी चावूं, खास कर'र गावा री सेवा! सरमाजी, थानै ठा' कोनी, हाल तक भारत रै गावा में भगवान बसै है, परमात्मा रो सै सू उत्तम रूप दरिद्रनारायण! है'क नी?' प्रकासराजजी म्हां सूं हाकारो भरावण सारू पूछै—'आप ई तो गावा मे रैवो हो, काई धन्धो करो हो?'

'मास्टर हू।' म्हैं कह्यो।

'अच्छा-अच्छा! मास्टर हो, जद म्हारी बात नै भली-भांत समझ सको। म्हैं उण भासण री कापी करा'र आप कनै भेजूला। आप देखोगा कै कोई आदमी गावा मे काम करै अर उण म्हारै भासण नै नी पढ्यो है तो बो धूड़ में लट्ठ मारै है, जिणसू की हाथ आवण नै कोनी। म्हैं गाव री एक-एक तसवीर नै बड़ी सजगता सू उतारी है। आप जाणो हो, इण काम सारू म्हनै कित्ती करड़ी मेहनत करणी पड़ी। कोई पचास-साठ तो विदेसी लिखारा री लिख्योड़ी पोथ्या ईज बाचणी पड़ी....।'

'अर निराई दिना तक गावा री कठोर जिन्दगी मे रैणोई पड़्यो होसी?' म्हैं हां मे हा मिळावता कह्यो।

प्रकासराजजी सा' नै म्हारी बात सुहायी कोनी। तड़ती सूं बोल्या—'बस, हिन्दुस्तान रै पढ्या-लिख्या मोट्यारा मे आ ईज तो खामी है। किणी ई विदेसी लेखक री पोथी पढण री बात कैवो तो वै चिड़ जावै। आप गावा मे गया कै नी, आप गावा मे रैवो कै नी, जाणै गांवा मे आवण सूं अर रैवण सूं लोग गावा रै बारै मे ज्यादा जाण सकै! कित्ती बेवकूफी री बात है?....ऐ उज्जड बेसऊर गाव मे रैवणिया लोग आपरी खुद री तकलीफा नै थोड़ा ई समझै है! म्हे आ नै समझावा, जद इणानै ठा पड़ै। तो भाई, सरमाजी, अमेरिका अर इग्लैण्ड रा विद्वान आपणै देस रै गावा री, बठारै रैवासिया री तकलीफा नै जितरी गहराई सूं जाणै है, उतरी गहराई सू तो आपा सगळी ऊमर गावा मे काढ'र ई कोनी जाण सका। ज्यूं रोगी सगळी ऊमर रोग भुगत'र ई रोग रै बारै मे की को जाण सकै नी, जितरो डाक्टर रोगी रो मूडो देख'र ई जाण जावै।' कै'र प्रकासराजजी आपरी उपमा री

सारथकता समझ हंसण लागा अर कोई दो-तीन मिनट हंसता ई रह्या। पण म्हनै वहस करण री मुद्रा मे देख'र हसी बीच मे रोक'र वोल्या—'म्हनै ठा' है कै आपणे इण देस में कोई सो ई छोरो चार अक्खर पढ लिख लेवै तो बो आप सूं वडा री वात काट्या विना रेवै ई कोनी। पण सरमाजी, आप तो जाणो हो, म्हनै फालतू री वहस करण री फुरसत कठै ? वो तो नौजवाना नै एनकरेज करण सारू म्हूं चलतै रस्तै ई थां सूं दो बात कर लूं, वाकी अठै इतरा बड़ा-बड़ा अफसर है, पण बिना पैला एपाइण्टमेण्ट लिया कोई म्हारै सूं पाच मिनट ई बात को कर सकै नी। म्हू किणनै ई मूडै ईंज को लगावू नी। अच्छा, म्हू चालू ! टा-टा, बाई-बाई.... ।'

प्रकासराजजी सा' अडं नाटकी अन्दाज सूं वठै सूं रवानै होयग्या।

आ म्हारी पैली मुलाकात ही। गोरो-पतळो सरीर, सूखोडै चैहरै माथै पतळी-पतळी खीचड़िया मूछां, कीमती खादी रो सूट पैरण नै, अर मूछा माथै वट दियोड़ो ताजै फूल जिसो मुळकतो चैहरो ! पैली बार जो कोई प्रकासराजजी सा' नै देखै, देखतो ई रै जावै। इत्तो वड़ो आदमी इण कुठोड पड्यो है। इण सै'र रो कायदो ईज इसो है, मायोड़ा नै फळै, जायोड़ा नै को फळै नी, नइं तो इसो आदमी कठै रो कठै पूगो होवतो ?

म्हारो साथी भवंरियो प्रकासराजजी सा' नै खासो पैला सूं जाणतो हो। म्हारी प्रकासराजी सा' सू परिचै ई भवरियै ईज करवायो हो। भवरियो वाताळ कम, जिको इतरी जेझ तक की बोल्यो ई कोनी। म्है उणनै कह्यो—'इतरो बड़ो आदमी है, पण किसो सैणो सुभाव है। आदमी ऊंचो अर भलो दीसै।

भवरियै ई कह्यो—'ऊंचो आदमी है।'

कै'र की कुटळाम सूं मुळक्यो।

म्हनै उणरी कुटळास भरी मुळक दाय को आई नीं।

oo

खासा दिनां पछै री बात है। दोपार रा कोई बारै-एक बज्या प्रकासराजजी सा' म्हनै सडक माथै मिळग्या। म्है घणी मुळनाई सूं रामा-स्यामा किया। उण वेपरवाई सूं हाथ उठा'र कह्यो—'हल्लो ! सरमा साहब ! आप सरमा साहब ईज हो नी ?'

म्है गावड हिला'र हांकारो भर्‌यो। पन मन में एक [illegible]

भरीजग्यो।

'माफ करजो भाई'—प्रकासराजजी सा' बड़ी नरमाई अर अफसोस जाहिर करतां बोल्या—'बात असल मे आ है कै म्हारी याददास्त बड़ी कमजोर है। अर थे ईज बतावो, दिन मे सैंकड़ा आदमी मिळै, किण-किण नै याद राखां ? इण वास्तै भलांई लोग बुरो ईज मानो, म्हूं पूछ लेवूं, भाई थे फलाणा ईज हो'क ? गूंगा गिटण सूं काई फायदो ? औपचारिक सभ्यता आडी ला'र अपरिचित आदमी सूं हंस-हंस'र बात करो, अर उणरै गया पछै अठी-वठी पूछो, भाई ओ कुण हो ? म्हारा सूं इसी बेमानी औपचारिता को निभाईजै नी। एक'र म्हारै मे भूंडी हुई। एयरकण्डीसण्ड डब्बै में म्हूं नै चीफ सेक्रेटरी सागै-सागै जयपुर सूं रवानै होया। उणा तो म्हनै निरीई बार सी० एम० अर केन्द्रीय मन्त्रिया सागै देख्यो हो, सो झट ओळख लियो, पण म्हू वां नै को ओळख सक्यो नी। वै लाई म्हारै सूं हंस-हंस'र बाता करता रह्या। म्हैं उणानै कोई कलक्टर जिसो मामूली अफसर समझ'र हा-हू करतो रह्यो। जोधपुर उतरूया पछै ठा' पड़्यो कै अरै, ऐ तो चीफ सेक्रेटरी साहब हा। बोलो, जो औपचारिकता मे नी फसता तो गाड़ी मे इण जिलै रै विकास रै बाबत कितरी बाता कर लेवता। उण दिन पछै सोगन खाई। नी ओळखां तो फट् पूछ लेवणो—आप कुण हो सा ? है'क नी ?'

म्हारै मन मे बापरियो अपमान रो भाव धुपग्यो। जको आदमी कई बार मिळ'र चीफ सेक्रेटरी नै ई भूल जावै वो म्हारै जिसै मामूली आदमी नै भूलै तो कोई गळती कोनी। म्हूं ताजगी सू बोल्यो—'ओ तो है ईज सा !'

उणा पाछी एक मधरी मुळक बिखेरी—'सरमाजी, आप प्रतिभासाळी आदमी हो, इसारै मे बात नै समझो। साची पूछो तो थारै इन्स्पेक्टर इतरा प्रतिभा-वाळा कोनी ! काई नाम है उणारो ?'

'वरमा साहब।'

'हा, हां, वरमा साहब ईज।' प्रकासराज सा' रै चैरा माथै खुसी सूं जाणै कुमकुम बीखरी—'अवार-अवार म्हा सू मिळ नै गया है। खासी जेज बाता करी। लाई रोवता हा—'प्रकासराजजी, एजुकेसन रै हिसाब सू तो इण जिला रो खाको ई बिगड़्योड़ो है। मास्टर बाडा कुतरा ज्यूं बिना मतलब रुळता फिरै। छोरां नै तो पढावै कोनी अर सगळै दिन रळियारगी करै। कई-कई तो इसा बिगड़ैल है कै म्हूं आपनै काई अरज करूं ? इसा ई अठा रा नेता है, टका-टका मे विकै ! म्हारी दीठ मे तो फकत आप इण जिला रा साचा नेता हो—सिक्षा मे रुचि राखणिया, विचार-सील अर मेहनती। म्हैं बदमासां नै पाधरा करणो तेवड़ लियो है। स्कूला नै मरती कोनी देख सकूं। आपरो सहयोग चाईजै। म्हनै कदेई आपरो अमोलक टाइम देवण

री तजवीज फरमावो।' कै'र प्रकासराजजी सा' एक पल ई नीठ रुक्या। पाछा कैवणो सरू कियो—'यूं तो सरमाजी, आपनैं ठा ईज है कै पैला एपाइन्टमेन्ट दिया सिवाय म्हूं किणी सूं ई बात करणी ई पसन्द को करूं नी, पण वरमाजी नैं लिपट देणी पड़ी भाई! सोच्यो, सरमाजी रैं इन्सपेक्टर है, कदेई काम आवैला, सो मन परवारै वा सूं बात करणी पड़ी।'

जेठ रौ महीनो। डामर री सड़क बळै। परेवा रा परनाळा चालै। माथो तप'र भड़भूंजै रै भाड़ मायलै चिणै जेड़ो होयोड़ो' परेवै अर रेत जम्योड़ै चस्मै रै काच माय भूं म्हूं टुकर-टुकर देखूं। इतरो बडो आदमी लाई म्हारो कितरो राखै। जिको विना एपाइन्टमेंट दिया बडा-बडा मिनखां सूं ई बात को करै नी, वो एक-एक बात म्हनै कैवै। म्हारै कारण भला मिनख नैं मझ दोपार....

प्रकासराजजी री बात जारी ही—'इन्सपेक्टर किसो कूड कह्यो, सरमाजी! अफ्रेसियाई सिक्षाविदां रै सम्मेलन में म्हूं भेळो होयोडो। आज री सिक्षा रै बारै में म्हैं बठै एक कागद वांचियो। आपनैं कांई कैवूं हाल ताळियां सूं गूंज्यो तो इसो गूंज्यो कै इमारत थ्थरवा लागी अर लोगां डर सूं ताळ्यां बजावणी बन्द की। सभा खतम होयां पछै एक-एक प्रतिनिधि म्हारै कनै आ'र म्हनै बधाई दीनी। भारत सरकार री तरफ सूं फांस में ...।'

म्हारै में प्रकासराजजी जितगी बुद्धि कठै! वै जितरो कैवै, सगळो ई म्हनैं याद थोड़ो ईज रैवै! नईं तो म्हूं ई इतरो बडो आदमी को बण जावतो नी! प्रकासराजजी सा' री बातां चालै, जाणै ऊनाळा में आंधियां चालती होवै। एक झोको खतम होवै ई कोनी कै दूजो त्यार। पण म्हारै मे इतरी सगळी ग्यान री बातां सुणण रो ई दम कठै! चक्कर खाय'र पड़ण री हालत होयगी, जद म्हूं म्हारी खमता बडी दीनतो सूं कह्यो—'अबै हुकम होवै, सा'!

'खैर, जाओ। म्हैं वरमा सा'ब नैं कै दियो है कै अबार तो इतरी वेळा कोनी, फुरसत मिळसी जद दो-चार घण्टा भेळा बैठ'र योजना बणासां। कै'र पिण्ड छोड़ायो भाई! अबै सरमाजी थे ईज कैवो कै म्हनैं इतरी फुरसत कठै?'

म्हारा जुड़्यां हाथां रै सामैं उणां रो हाथ बेपरवाई सूं उठग्यो।

००

कोई आठ-नव महीनां केड़ै री बात। माह रो मईनो। इसो ठण्ड पड़ै कै हाडका ई परा जमै। एक तो ठेसण जिसी खुली जगै अर पछै बळै परोढिया रो पौर! प्राणां नैं कपावतो वायरो चालै। म्हूं देखूं कै मोणी पतळी मूंछां रै वट दियां हाथ में चिटियो हिलावता प्रकासराजजी सा' प्लेटफारम माथै पग मोकळो करै।

रीत प्रमाणै गाडी 'लेट' ईज ही। प्रकासराज सा' घडी-घड़ी'हाथ रै बांधियोड़ी जूनै फैसन री घडी नै देखै अर जितरी वार घडी देखै उतरी'ज वार जूझळ सूं उणारै चैहरा माथै सळ बधता जावै। इतरा मे तो दोनूं ई हाथ जोड्यां उणां सामी म्हू हाजर होयो।

'आओ, सरमाजी! आओ। आज परोडिया रा ईज अठीनै?'

'म्हू तो अठै ई, सा'! आप?'

सवाल सुण'र प्रकासराज जी सा रै मन री कळी-कळी खिलगी। मूंडै माथै नवी बीनणी जिसो लाज भरी मुळक वापरी। कह्यो—'आज आपणै भीनमाळ मे सी० एम० [मुख्य मन्त्री] रो दौरो है नी! म्हू ई जावू।'

'अच्छा।'

'काई करू, भाई! काल रात सी० एम० अठै ईज हा। आपरी गाडी भेज'र म्हनै डाक बगलै बोलायो। सरमाजी, म्हू कोई इयां जावू? पाछो कैवायो—तू आप आव। इण जिला में आ'र म्हासू मिल्या बिना ई जासी काई? जावै तो जा। म्हे ई देख लेसा। पण आप जाणो हो सी० एम० नै वेळा कठै? खुद आपरै पी० ए० नै बोलावण नै म्हारै घरै मेल्यो। पी० ए० आय'र बडी लाचारी की। जद म्हनै जावणो ईज पड्यो। काई करतो? इतरो बडो मन तो राखणो ई पड़ै।'

म्हारी आख्या मे अणविसवास चमक्यो।

प्रकासराजजी म्हारै सामी देखण री जरूरत ई को समझी नी। आपरी धुन में मगन कैवता रह्या—'जावता ई गळै बाथ घाल'र मिळ्या। ओळमो देवता कह्यो, प्रकास, थू ई यूं पराया जिसी लोकदिखावा री बातां करै। यू नै म्हूं न्यारा-न्यारा हा काई? म्हूं ई किसो चूकतो? कह्यो—ना, भाई! म्हू सेवा रो आदमी हू, थे सत्ता रा आदमी हो। कोई दूजो मुलक होवतो, तो सत्ता रो बडै सू बडो आदमी पैला सेवा वाळा कनै जावतो, पछै दूजो काम करतो। आपणै देस मे ई पैला राजा-महाराजा गांव-गोठ आवता, जद सै सू पैला आस्रम मे रिसिया सू मिलण नै जावता ......। सी० एम० नै ई कान पकड़णो पड्यो। कह्यो, म्हूं तो मानूं ईज हूं कै सेवा बिना सत्ता पागळी है। ऐ था रै अठा रा नेता चौधरी अर मोदी अर सोलकी सगळां नै ई दातं आगळी देवणी पड़ी। वै सगळा हाजरिया होवै ज्यूं ऊभा हा, हाथ जोड्यां, किणी कूतरोजी ई को पूछियो नी, पण म्हूं गयो जद सी० एम० खुद स्वागत मे ऊभा होया बाथ घाल म्हनै आपरै कनै ईज सोफा माथै पटक्यो। कान मे मूंडो घाल'र कह्यो—प्रकास, अठै तो माखियां घणी है, आपानै बात-चीत करण रो मजो कोनी आवै, कालै थू भीनमाल आव। वठै कठै ई एकान्त में बैठ'र

घर-विद री वात करसां । कँ'र सी० एम० मुळकया । यूं तो सरमाजी, थानै ठा है, म्हनै वेळा कठै ? पण ज्यूं-त्यूं करनै सी० एम० वास्तै तो टैम काढणो ईज पड़यो । यूं तो आप जाणो ईज हो, म्हैं इण मोटा ओहदा वाळां री रत्ती भर ई परवा को करूं नी, पण भाई दुनिया मे रैणो है तो दुनियावाळा री रीत सूं ई रंवणो पड़ै । गाव करै ज्यूं गवार नै ई करणो पड़ै जिको इण गाडी सूं भीनमाळ जावूं हूं । आप ई चालो ?' कँ'र उणा एक तिरपत निजर म्हारै कानी नांखी ।

'तो मुख्यमन्त्रीजी ई इण गाडी सू पधारै है, काई ?' म्हैं अचम्भै सूं प्लेट-फारम मार्थ दीठ नाखी । बठै कोई खासियत को ही नीं ।

'नई, सा' । उणारै जीव नै आराम कठै ? जीव रा लैणात लारै लागा रैवै, जिको वै तो जीप सू गया । म्हनै ई कह्यो हो कँ यू म्हारै सागै ईज बैठ'र चाल, पण भाई सरमाजी, मिनिस्टरा री जीप मे मिनख बकरा होवै ज्यू भरीजै । म्हनै यू चालणो सळै को आवै नी । रेल मे बैठ आराम सूं जावाला ।' पछै माछली जेड़ी आंख्या म्हारै सामी कर'र ढीलो मूडो मेल, दाड़म जिसा दात देखाय बड़ी हियाळी सूं कह्यो—'आपनै फुरसत होवै तो आप ई चालो । सी० एम० सू दोस्ती गठाय दूं । खास हितू है । म्हारी बात को टाळ सकै नीं । भाई, आज रै जमानै मे कुण किणरो हावै ? सै मतळब रा यार होवै । सी० एम० ई जाणै है क प्रकासराज सागै है जितरै ईज इण जिला रा एम० एल० ए० उणरै सागै है ? है'क नी ?'

'.................. .... ।'

'सरमाजी, म्हारै जीव नै तो लपरा ईज घणा । अठीनै तो म्हैं [illegible] जावण री हा भर दी अर रातै ईज विदेसमन्त्रीजी रो टेलिफून आयग्यो । [illegible] सू एक मिस्टर वाटरमैन आय रह्या है अर जरमनी सू मिस्टर जेकोबी । [illegible] आपरी सरकार रै मारफत भारत सरकार सूं अरज करी है कँ [illegible] उणनै प्रकासराज सू मिळावण रो इन्तजाम करै । लाचार विदेस [illegible] पड़ी । कह्यो—सा' मैं भोत 'बिजी' हूं, जो भारत सरकार [illegible] देवै तो आ सकूं नईतो माफी चावूं ।' पछै प्रकासराजजी [illegible] कह्यो—'उणारै मात वार गरज होवै तो हेलीकोप्टर [illegible] है'क नी ?'

'.................. .... ।'

म्है टिगट रा पीसा मागण सारू उणा रै कानी ताकियो पण जितरा मे त वै दूजी कानी देखण लागग्या। अबै इतरा बड़ा आदमी सू मूंडा सूं पीसा कीकर मागतो ? लाचार म्हारै गूजा रै पीसा सू ईज टिगट लावणो पड़्यो।

□□

आम चुनावा रै पछै री बात है। एक'र फेर प्रकासराज सा' म्हनै सड़क माथै दबोच लियो—'हलो, सरमाजी !'

म्हू मुजरो कर'र ऊभो होयो।

'और सुणावो काई नवी जूनी है ?'

'नवी बात तो आ ईज है सा' कै सुखाडियाजी मुख्यमन्त्री बणग्या है।'

प्रकासराज सा' बडी पीडा सू, म्हानै देख्यो। सैरको नाख अर बोल्या—'सरमाजी, सिरफ एक वोट री कसर रैगी।'

'.......... ?' सवाल करती निजर, म्है उणा सामी नाखी।

'आ गहरी चीज है, थे इणनै समझो कोनी।' म्हारै भोळैपण उणां री दरद बढाय दियो—'फकत एक वोट फेर मिळ जावतो, तो मुख्यमन्त्री सुखाडियाजी नी, म्हूं बणतो ?'

म्हारो अचम्भो बधग्यो। 'आप तो हुकम, इलेक्सन में ऊभा ई कठै होया हा ?'

'पण एक वोट वत्तो मिलतो तो ऊभो हो जावतो'क।'

म्हू पाछो बरगू होवै ज्यूं उणारो चैहरो देखण लागो।

'थे समझो कोनी'—प्रकासराजजी सा' म्हारो अचम्भो मिटावता थका बोल्या—'अरै भाई, जिला कांगरेस मे जिण बखत टिगट बटीजता जद म्है ई टिगट माग्यो हो। जो डी सी. सी. मे म्हारै फेवर मे एक वोट वत्तो आ जावतो, तो एम. एल. ए म्हू ईज बणतो'क ?'

'अच्छा, यू'—म्है हां गाबड हिलाई।

'अर एम. एल. ए बण जावतो, तो पछै म्हनै मुख्यमन्त्री बणण सूं कुण रोक सकतो हो ?' प्रकासराजजी सा' उछाह सूं बोल्या—'म्हनै ठा ईज है, राजस्थान तो राजस्थान, सेन्टर मे ई म्हारो कितरो मोटो प्रभाव है ? है'क नी ?' प्रकासराजजी सा' खुल'र हसण लागा। हंसी की थमी, जद बेपरवाई सूं बोल्या—'खैर। एकेलेखै ठीक ईज होयो। म्हारो व्यक्तित्व फकत प्रदेस री छोटी सी'क सींव मे बंध'र किया रै सकै ? ऐस म्हू विश्व..........।'

□□□□